॥ ॐ नमोभगवते देवाधिदेवाय ॥

अथ सिद्धान्त सप्तसागर प्रारम्भः

(प्रथम भाग)

१–जगदीश को प्रणाम कर मै इस पवित्र ग्रन्थ को लिखता हूं कि जिसकी सत्य साक्षी अनेक आर्ष ग्रन्थों से ली गई है।

२–सर्व मनुष्यों को सब से पहिले विद्याओं का अभ्यास करना चाहिये, क्योंकि बिना विद्या के आत्मिक और सांसारिक उन्नति कोई भी नहीं कर सकता।

३–उभयलोक हितकारिणी विद्याओं के अनेक भेद होने पर भी अक्षर विद्या ने सब में प्रथम स्थान पाया है। क्योंकि बिना अक्षर विद्या के मनुष्य भी पशु के समान हैं।

४–अक्षर लिपि को कहते हैं और इस भारत की अनेक लिपियों में ब्राह्मी लिपि सबसे प्राचीन होने के कारण अति श्रेष्ट मानी गई है जिसको अब देवनागरी और हिन्दी भी बोलते हैं।

इन ४ को उदमाण बोलते हैं। और क्ष यह १ संयुक्ताक्षर है। एवं सर्व मिलाकर ४६ अक्षर होते हैं सम. स्था ४३।

७-भारत के प्राचीन राजवंश में लिखा है कि ब्राह्मी लिपि तो हिन्दुस्तान की ही पुरानी लिपी थी पर युनानी और खरोष्ठी लिपि सिकन्दर के पीछे उसी तरह इस देश में दाखिल हुई थी, जिस तरह मुसलमानी राज्य में अरबी, फारसी और तुर्की आ घुसी थी। मगर भारत की असल लिपि ब्राह्मी होने से मुसलमानी सिक्कों पर भी कई सौ वर्षों तक उसी के बदले हुए रूप हिन्दी अक्षर लिखे जाते थे भा. मृ. ॥

८-भारत के प्राचीन निवासी समस्त आर्य क्षत्रियों को चाहिये कि अन्य लिपियों (भाषाओं) का बहिष्कार करके सब से पहले अपनी सन्तानों को अपने पूर्वजों की मूल वर्णमाला का ज्ञान अवश्य करावें क्योंकि 'महाजनो येनगतः सपन्था' वृ. शा. ॥

९-ब्राह्मी लिपि के पढाने की सब से सुगम रीति यह है कि प्रथम तो बालकों को मूलाक्षर सिखाना चाहिये जैसे अ आ इ ई उ ऊ ए ऐ ओ औ अं अः क ख ग घ ङ। च छ ज झ ञ। ट ठ ड ढ ण। त थ द ध न। प फ ब भ म। य र ल व। श ष स ह क्ष।

५-श्रीभगवतीजी सूत्र में देवर्धिगणी क्षमाश्रमण भगवान ने लिखा है कि णमो बंभीए लिवीए ॥ भग० शतक १ उद्देश प्रथम अर्थात् मैं उस प्राचीन (सब से पुराणी) ब्राह्मी लिपि को नमस्कार करता हूं जिस में यह शास्त्र सब से पहले लिखा गया है।

६-श्री समवायांग सूत्र में लिखा है कि बंभीएणं लिवीए छाआलिसं माउअ क्खरापत्तता।

व्याख्या-लेख्य विधौषट् चत्वारिंशन्मातृकाक्षराणिज्ञातानि, तानिच अकारादीनिहकारान्तानि सक्षकाराणि ऋ ॠ लृ ॡ ळ इत्येवं नदक्षर पञ्चक वर्जितानि सम्भाव्यते, स्वर च तुष्टय वर्जनात् विसर्गान्तानिद्वादश, पञ्चविंशतिः स्पर्शाः। चतस्रोन्तस्थाः। ऊष्माणश्चत्वारः क्ष वर्णश्चेतिषट् चत्वारिंशद्वर्णाः।

अर्थात्-भारत के पुरातन निवासी उन आर्य क्षत्रियों की ब्राह्मी लिपि में ४६ अक्षर होते थे, जैसे अ आ इ ई उ ऊ ए ऐ ओ औ अं, अः यह १२ स्वर हैं क ख ग घ ङ। च छ ज झ ञ। ट ठ ड ढ ण। त थ द ध न। प फ ब भ म। इन २५ की स्पर्श संज्ञा है। य र ल व इ। चार को अन्तस्थ कहते हैं। श ष स ह

११—तीसरे पाठ में।

३४ व्यञ्जनों के साथ १२ स्वरों की मात्रायें बतानी चाहिये। जैसे अवर्जित शेष स्वरों की मात्राओं के चिह्न ये हैं:—

ा ि ी ु ू े ै ो ौ ं ः

अर्थात्- अकार की मात्रा तो व्यञ्जन से भिन्न नहीं रहती जैसे क्+अ-क। ख्+अ-ख इत्यादि। और शेष स्वर। व्यञ्जन के साथ मिलने पर भी मात्राओं के रूप में भिन्न दिखाई देते हैं जैसे क+आ-का क+इ-कि। क+ई-की। क+उ-कु। क+ऊ-कू। क+ए-के। क+ऐ-कै। क+ओ को। क+औ-कौ। क+अं-कं। क+अः कः। ऐसे ही क्ष कार पर्यन्त ३४ व्यञ्जनों के साथ १२ स्वरों के मिलने पर द्वादशाक्षरी (बारह खड़ी) कहाती है जिसके सब रूप ये हैं।

क का कि की कु कू के कै को कौ कं कः
ख खा खि खी खु खू खे खै खो खौ खं खः
ग गा गि गी गु गू गे गै गो गौ गं गः
घ घा घि घी घु घू घे घै घो घौ घं घः

१०-फिर दूसरे पाठ में इन्हीं ४६ वर्णों के आदि अक्षर लेकर बिना मात्राओं के छोटे २ वाक्य बना कर बनाना चाहिये जैसे अजर। अमर। भज। आतम वश कर। इस वचन पर अमल कर। ईश्वर भजन कर। उत्तम जन बन। ऊठ कर हर भज। एकमन कर शमर। ऐब मत रख। ओढ कर मत चल। औरत पर अनरथ मत कर। अंग पर आलस मत रख। अः तक पढ। कपट मत रख। खल मत बन। गड बड मत कर। घर पर चल। ङ पढ ङ मत कह। चल सरक। छल मत कर जहर मत चख। झट पट चल। ञ तक दश अक्षर लिख। टल कर चल। ठग मत बन। डर मत ऊपर चढ। ढक कर तखत पर रख। ण तक सब अक्षर पढ। मत खर नर सब एक समझ। थक मत तप कर दरशन शमरण हर दम कर। धन पर गरभ मत कर। नट खट मत बन। पग पर पग मत रख। फणधर सम मत बन। बस कर अब मत थक भगवत भज कर नर भव सफल कर। मगर मम सब मत भख शयर कर। यश लह। रपट मत समल कर चल। लड मत। वदन पर शरम रख। शहर भर मत फर षट करम तज मत। सच मत तज। हर वचन हस मत। अकल रख। क्ष त्र. पढ कर अजर अमर सबक खतम कर।

प पा पि पी पु पू पे पै पो पौ पं पः
फ फा फि फी फु फू फे फै फो फौ फं फः
ब बा बि बी बु बू बे बै बो बौ बं बः
भ भा भि भी भु भू भे भै भो भौ भं भः
म मा मि मी मु मू मे मै मो मौ मं मः
य या यि यी यु यू ये यै यो यौ यं यः
र रा रि री रु रू रे रै रो रौ रं रः
ल ला लि ली लु लू ले लै लो लौ लं लः
व वा वि वी वु वू वे वै वो वौ वं वः
श शा शि शी शु शू शे शै शो शौ शं शः
ष षा षि षी षु षू षे षै षो षौ षं षः
स सा सि सी सु सू से सै सो सौ सं सः
ह हा हि ही हु हू हे है हो हौ हं हः
क्ष क्षा क्षि क्षी क्षु क्षू क्षे क्षै क्षो क्षौ क्षं क्षः

क्ष के समान उपलक्षण से सर्व ही संयुक्ताक्षरों की बारह अक्षरी समझ लेना चाहिए यथाः—
श्र श्रा श्रि श्री श्रु श्रू श्रे श्रै श्रो श्रौ श्रं श्रः इत्यादि

ङ ङा ङि ङी ङु ङू ङे ङै ङो ङौ ङं ङः
च चा चि ची चु चू चे चै चो चौ चं चः
छ छा छि छी छु छू छे छै छो छौ छं छः
ज जा जि जी जु जू जे जै जो जौ जं जः
झ झा झि झी झु झू झे झै झो झौ झं झः
ञ ञा ञि ञी ञु ञू ञे ञै ञो ञौ ञं ञः
ट टा टि टी टु टू टे टै टो टौ टं टः
ठ ठा ठि ठी ठु ठू ठे ठै ठो ठौ ठं ठः
ड डा डि डी डु डू डे डै डो डौ डं डः
ढ ढा ढि ढी ढु ढू ढे ढै ढो ढौ ढं ढः
ण णा णि णी णु णू णे णै णो णौ णं णः
त ता ति ती तु तू ते तै तो तौ तं तः
थ था थि थी थु थू थे थै थो थौ थं थः
द दा दि दी दु दू दे दै दो दौ दं दः
ध धा धि धी धु धू धे धै धो धौ धं धः
न ना नि नी नु नू ने नै नो नौ नं नः

१३ अथ छोटी एका ।

१	१	१	१	२	२	१	३	३	१	४	४	१	५	५
२	१	२	२	२	४	२	३	६	२	४	८	२	५	१०
३	१	३	३	२	६	३	३	९	३	४	१२	३	५	१५
४	१	४	४	२	८	४	३	१२	४	४	१६	४	५	२०
५	१	५	५	२	१०	५	३	१५	५	४	२०	५	५	२५
६	१	६	६	२	१२	६	३	१८	६	४	२४	६	५	३०
७	१	७	७	२	१४	७	३	२१	७	४	२८	७	५	३५
८	१	८	८	२	१६	८	३	२४	८	४	३२	८	५	४०
९	१	९	९	२	१८	९	३	२७	९	४	३६	९	५	४५
१०	१	१०	१०	२	२०	१०	३	३०	१०	४	४०	१०	५	५०

१	६	६	१	७	७	१	८	८	१	९	९	१	१०	१०
२	६	१२	२	७	१४	२	८	१६	२	९	१८	२	१०	२०
३	६	१८	३	७	२१	३	८	२४	३	९	२७	३	१०	३०
४	६	२४	४	७	२८	४	८	३२	४	९	३६	४	१०	४०
५	६	३०	५	७	३५	५	८	४०	५	९	४५	५	१०	५०
६	६	३६	६	७	४२	६	८	४८	६	९	५४	६	१०	६०
७	६	४२	७	७	४९	७	८	५६	७	९	६३	७	१०	७०
८	६	४८	८	७	५६	८	८	६४	८	९	७२	८	१०	८०
९	६	५४	९	७	६३	९	८	७२	९	९	८१	९	१०	९०
१०	६	६०	१०	७	७०	१०	८	८०	१०	९	९०	१०	१०	१००

१२—इसके बाद में अंक विद्या पढ़ना चाहिये।

ऐकावली यथा।

१	११	२१	३१	४१	५१	६१	७१	८१	९१
२	१२	२२	३२	४२	५२	६२	७२	८२	९२
३	१३	२३	३३	४३	५३	६३	७३	८३	९३
४	१४	२४	३४	४४	५४	६४	७४	८४	९४
५	१५	२५	३५	४५	५५	६५	७५	८५	९५
६	१६	२६	३६	४६	५६	६६	७६	८६	९६
७	१७	२७	३७	४७	५७	६७	७७	८७	९७
८	१८	२८	३८	४८	५८	६८	७८	८८	९८
९	१९	२९	३९	४९	५९	६९	७९	८९	९९
१०	२०	३०	४०	५०	६०	७०	८०	९०	१००

१५--अथ इक्कीसा।

२१	१	२१	२२	१	२२	२३	१	२३	२४	१	२४	२५	१	२५
२१	२	४२	२२	२	४४	२३	२	४६	२४	२	४८	२५	२	५०
२१	३	६३	२२	३	६६	२३	३	६९	२४	३	७२	२५	३	७५
२१	४	८४	२२	४	८८	२३	४	९२	२४	४	९६	२५	४	१००
२१	५	१०५	२२	५	११०	२३	५	११५	२४	५	१२०	२५	५	१२५
२१	६	१२६	२२	६	१३२	२३	६	१३८	२४	६	१४४	२५	६	१५०
२१	७	१४७	२२	७	१५४	२३	७	१६१	२४	७	१६८	२५	७	१७५
२१	८	१६८	२२	८	१७६	२३	८	१८४	२४	८	१९२	२५	८	२००
२१	९	१८९	२२	९	१९८	२३	९	२०७	२४	९	२१६	२५	९	२२५
२१	१०	२१०	२२	१०	२२०	२३	१०	२३०	२४	१०	२४०	२५	१०	२५०

२६	१	२६	२७	१	२७	२८	१	२८	२९	१	२९	३०	१	३०
२६	२	५२	२७	२	५४	२८	२	५६	२९	२	५८	३०	२	६०
२६	३	७८	२७	३	८१	२८	३	८४	२९	३	८७	३०	३	९०
२६	४	१०४	२७	४	१०८	२८	४	११२	२९	४	११६	३०	४	१२०
२६	५	१३०	२७	५	१३५	२८	५	१४०	२९	५	१४५	३०	५	१५०
२६	६	१५६	२७	६	१६२	२८	६	१६८	२९	६	१७४	३०	६	१८०
२६	७	१८२	२७	७	१८९	२८	७	१९६	२९	७	२०३	३०	७	२१०
२६	८	२०८	२७	८	२१६	२८	८	२२४	२९	८	२३२	३०	८	२४०
२६	९	२३४	२७	९	२४३	२८	९	२५२	२९	९	२६१	३०	९	२७०
२६	१०	२६०	२७	१०	२७०	२८	१०	२८०	२९	१०	२९०	३०	१०	३००

५१ ॥ २५॥	६१ ॥ ३०॥	७१ ॥ ३५॥	८१ ॥ ४०॥	९१ ॥ ४५॥
५२ ॥ २६	६२ ॥ ३१	७२ ॥ ३६	८२ ॥ ४१	९२ ॥ ४६
५३ ॥ २६॥	६३ ॥ ३१॥	७३ ॥ ३६॥	८३ ॥ ४१॥	९३ ॥ ४६॥
५४ ॥ २७	६४ ॥ ३२	७४ ॥ ३७	८४ ॥ ४२	९४ ॥ ४७
५५ ॥ २७॥	६५ ॥ ३२॥	७५ ॥ ३७॥	८५ ॥ ४२॥	९५ ॥ ४७॥
५६ ॥ २८	६६ ॥ ३३	७६ ॥ ३८	८६ ॥ ४३	९६ ॥ ४८
५७ ॥ २८॥	६७ ॥ ३३॥	७७ ॥ ३८॥	८७ ॥ ४३॥	९७ ॥ ४८॥
५८ ॥ २९	६८ ॥ ३४	७८ ॥ ३९	८८ ॥ ४४	९८ ॥ ४९
५९ ॥ २९॥	६९ ॥ ३४॥	७९ ॥ ३९॥	८९ ॥ ४४॥	९९ ॥ ४९॥
६० ॥ ३०	७० ॥ ३५	८० ॥ ४०	९० ॥ ४५	१०० ॥ ५०

१८-अथ अङ्काः

१ ॥ ॥	११ ॥ ५॥	२१ ॥ १०॥	३१ ॥ १५॥	४१ ॥ २०॥
२ ॥ १	१२ ॥ ६	२२ ॥ ११	३२ ॥ १६	४२ ॥ २१
३ ॥ १॥	१३ ॥ ६॥	२३ ॥ ११॥	३३ ॥ १६॥	४३ ॥ २१॥
४ ॥ २	१४ ॥ ७	२४ ॥ १२	३४ ॥ १७	४४ ॥ २२
५ ॥ २॥	१५ ॥ ७॥	२५ ॥ १२॥	३५ ॥ १७॥	४५ ॥ २२॥
६ ॥ ३	१६ ॥ ८	२६ ॥ १३	३६ ॥ १८	४६ ॥ २३
७ ॥ ३॥	१७ ॥ ८॥	२७ ॥ १३॥	३७ ॥ १८॥	४७ ॥ २३॥
८ ॥ ४	१८ ॥ ९	२८ ॥ १४	३८ ॥ १९	४८ ॥ २४
९ ॥ ४॥	१९ ॥ ९॥	२९ ॥ १४॥	३९ ॥ १९॥	४९ ॥ २४॥
१० ॥ ५	२० ॥ १०	३० ॥ १५	४० ॥ २०	५० ॥ २५

५१ ।।। ३८।	६१ ।।। ४५।।।	७१ ।।। ५३।	८१ ।।। ६०।।।	९१ ।।। ६८।
५२ ।।। ३९	६२ ।।। ४६।।	७२ ।।। ५४	८२ ।।। ६१।।	९२ ।।। ६९
५३ ।।। ३९।।।	६३ ।।। ४७।	७३ ।।। ५४।।।	८३ ।।। ६२।	९३ ।।। ६९।।।
५४ ।।। ४०।।	६४ ।।। ४८	७४ ।।। ५५।।	८४ ।।। ६३	९४ ।।। ७०।।
५५ ।।। ४१।	६५ ।।। ४८।।।	७५ ।।। ५६।	८५ ।।। ६३।।।	९५ ।।। ७१।
५६ ।।। ४२	६६ ।।। ४९।।	७६ ।।। ५७	८६ ।।। ६४।।	९६ ।।। ७२
५७ ।।। ४२।।।	६७ ।।। ५०।	७७ ।।। ५७।।।	८७ ।।। ६५।	९७ ।।। ७२।।।
५८ ।।। ४३।।	६८ ।।। ५१	७८ ।।। ५८।।	८८ ।।। ६६	९८ ।।। ७३।।
५९ ।।। ४४।	६९ ।।। ५१।।।	७९ ।।। ५९।	८९ ।।। ६६।।।	९९ ।।। ७४।
६० ।।। ४५	७० ।।। ५२।।	८० ।।। ६०	९० ।।। ६७।।	१०० ।।। ७५

५१ ॥ ६३।।।	६१ ॥ ७६।	७१ ॥ ८८।।।	८१ ॥ १०१।	९१ ॥ ११३।।।
५२ ॥ ६५	६२ ॥ ७७।।	७२ ॥ ९०	८२ ॥ १०२।।	९२ ॥ ११५
५३ ॥ ६६।	६३ ॥ ७८।।।	७३ ॥ ९१।	८३ ॥ १०३।।।	९३ ॥ ११६।
५४ ॥ ६७।।	६४ ॥ ८०	७४ ॥ ९२।।	८४ ॥ १०५	९४ ॥ ११७।।
५५ ॥ ६८।।।	६५ ॥ ८१।	७५ ॥ ९३।।।	८५ ॥ १०६।	९५ ॥ ११८।।।
५६ ॥ ७०	६६ ॥ ८२।।	७६ ॥ ९५	८६ ॥ १०७।।	९६ ॥ १२०
५७ ॥ ७१।	६७ ॥ ८३।।।	७७ ॥ ९६।	८७ ॥ १०८।।।	९७ ॥ १२१।
५८ ॥ ७२।।	६८ ॥ ८५	७८ ॥ ९७।।	८८ ॥ ११०	९८ ॥ १२२।।
५९ ॥ ७३।।।	६९ ॥ ८६।	७९ ॥ ९८।।।	८९ ॥ १११।	९९ ॥ १२३।।।
६० ॥ ७५	७० ॥ ८७।।	८० ॥ १००	९० ॥ ११२।।	१०० ॥ १२५

२०--अथ सवाया।

१ १। १।	११ १। १३।।।	२१ १। २६।	३१ १। ३८।।।	४१ १। ५१।
२ १। २॥	१२ १। १५	२२ १। २७॥	३२ १। ४०	४२ १। ५२॥
३ १। ३।।।	१३ १। १६।	२३ १। २८।।।	३३ १। ४१।	४३ १। ५३।।।
४ १। ५	१४ १। १७॥	२४ १। ३०	३४ १। ४२॥	४४ १। ५५
५ १। ६।	१५ १। १८।।।	२५ १। ३१।	३५ १। ४३।।।	४५ १। ५६।
६ १। ७॥	१६ १। २०	२६ १। ३२॥	३६ १। ४५	४६ १। ५७॥
७ १। ८।।।	१७ १। २१।	२७ १। ३३।।।	३७ १। ४६।	४७ १। ५८।।।
८ १। १०	१८ १। २२॥	२८ १। ३५	३८ १। ४७॥	४८ १। ६०
९ १। ११।	१९ १। २३।।।	२९ १। ३६।	३९ १। ४८।।।	४९ १। ६१।
१० १। १२॥	२० १। २५	३० १। ३७॥	४० १। ५०	५० १। ६२॥

२२--अथ ढैया ।

१ २॥ २॥	११ २॥ २७॥	२१ २॥ ५२॥	३१ २॥ ७७॥	४१ २॥ १०२॥
२ २॥ ५	१२ २॥ ३०	२२ २॥ ५५	३२ २॥ ८०	४२ २॥ १०५
३ २॥ ७॥	१३ २॥ ३२॥	२३ २॥ ५७॥	३३ २॥ ८२॥	४३ २॥ १०७॥
४ २॥ १०	१४ २॥ ३५	२४ २॥ ६०	३४ २॥ ८५	४४ २॥ ११०
५ २॥ १२॥	१५ २॥ ३७॥	२५ २॥ ६२॥	३५ २॥ ८७॥	४५ २॥ ११२॥
६ २॥ १५	१६ २॥ ४०	२६ २॥ ६५	३६ २॥ ९०	४६ २॥ ११५
७ २॥ १७॥	१७ २॥ ४२॥	२७ २॥ ६७॥	३७ २॥ ९२॥	४७ २॥ ११७॥
८ २॥ २०	१८ २॥ ४५	२८ २॥ ७०	३८ २॥ ९५	४८ २॥ १२०
९ २॥ २२॥	१९ २॥ ४७॥	२९ २॥ ७२॥	३९ २॥ ९७॥	४९ २॥ १२२॥
१० २॥ २५	२० २॥ ५०	३० २॥ ७५	४० २॥ १००	५० २॥ १२५

५१ २॥ १२७॥	६१ २॥ १५२॥	७१ २॥ १७७॥	८१ २॥ २०२॥	९१ २॥ २२७॥
५२ २॥ १३०	६२ २॥ १५५	७२ २॥ १८०	८२ २॥ २०५	९२ २॥ २३०
५३ २॥ १३२॥	६३ २॥ १५७॥	७३ २॥ १८२॥	८३ २॥ २०७॥	९३ २॥ २३२॥
५४ २॥ १३५	६४ २॥ १६०	७४ २॥ १८५	८४ २॥ २१०	९४ २॥ २३५
५५ २॥ १३७॥	६५ २॥ १६२॥	७५ २॥ १८७॥	८५ २॥ २१२॥	९५ २॥ २३७॥
५६ २॥ १४०	६६ २॥ १६५	७६ २॥ १९०	८६ २॥ २१५	९६ २॥ २४०
५७ २॥ १४२॥	६७ २॥ १६७॥	७७ २॥ १९२॥	८७ २॥ २१७॥	९७ २॥ २४२॥
५८ २॥ १४५	६८ २॥ १७०	७८ २॥ १९५	८८ २॥ २२०	९८ २॥ २४५
५९ २॥ १४७॥	६९ २॥ १७२॥	७९ २॥ १९७॥	८९ २॥ २२२॥	९९ २॥ २४७॥
६० २॥ १५०	७० २॥ १७५	८० २॥ २००	९० २॥ २२५	१०० २॥ २५०

२२--अथ ढैया।

१ २॥ २॥	११ २॥ २७॥	२१ २॥ ५२॥	३१ २॥ ७७॥	४१ २॥ १०२॥
२ २॥ ५	१२ २॥ ३०	२२ २॥ ५५	३२ २॥ ८०	४२ २॥ १०५
३ २॥ ७॥	१३ २॥ ३२॥	२३ २॥ ५७॥	३३ २॥ ८२॥	४३ २॥ १०७॥
४ २॥ १०	१४ २॥ ३५	२४ २॥ ६०	३४ २॥ ८५	४४ २॥ ११०
५ २॥ १२॥	१५ २॥ ३७॥	२५ २॥ ६२॥	३५ २॥ ८७॥	४५ २॥ ११२॥
६ २॥ १५	१६ २॥ ४०	२६ २॥ ६५	३६ २॥ ९०	४६ २॥ ११५
७ २॥ १७॥	१७ २॥ ४२॥	२७ २॥ ६७॥	३७ २॥ ९२॥	४७ २॥ ११७॥
८ २॥ २०	१८ २॥ ४५	२८ २॥ ७०	३८ २॥ ९५	४८ २॥ १२०
९ २॥ २२॥	१९ २॥ ४७॥	२९ २॥ ७२॥	३९ २॥ ९७॥	४९ २॥ १२२॥
१० २॥ २५	२० २॥ ५०	३० २॥ ७५	४० २॥ १००	५० २॥ १२५

५१ २॥ १२७॥	६१ २॥ १५२॥	७१ २॥ १७७॥	८१ २॥ २०२॥	९१ २॥ २२७॥
५२ २॥ १३०	६२ २॥ १५५	७२ २॥ १८०	८२ २॥ २०५	९२ २॥ २३०
५३ २॥ १३२॥	६३ २॥ १५७॥	७३ २॥ १८२॥	८३ २॥ २०७॥	९३ २॥ २३२॥
५४ २॥ १३५	६४ २॥ १६०	७४ २॥ १८५	८४ २॥ २१०	९४ २॥ २३५
५५ २॥ १३७॥	६५ २॥ १६२॥	७५ २॥ १८७॥	८५ २। २१२॥	९५ २॥ २३७॥
५६ २॥ ४०	६६ २॥ १६५	७६ २॥ १९०	८६ २॥ २१५	९६ २॥ २४०
५७ २॥ १४२॥	६७ २॥ १६७॥	७७ २। १९२॥	८७ २॥ २१७॥	९७ २॥ २४२॥
५८ २॥ १४५	६८ २। १७०	७८ २॥ १९५	८८ २॥ २२०	९८ २ २४५
५९ २॥ १४७॥	६९ २॥ ७२॥	७९ २॥ १९७॥	८९ २॥ २२२॥	९९ २॥ २४७॥
६० २॥ १५०	७० २॥ १७५	८० २॥ २००	९० २॥ २२५	१०० २॥ २५०

२१-अथ ड्योढा ।

१	१॥	१॥	११	१॥	१६॥	२१	१॥	३१॥	३१	॥	४६॥	४१	१॥	६१॥
२	१॥	३	१२	१॥	१८	२२	१॥	३३	३२	॥	४८	४२	१॥	६३
३	१॥	४॥	१३	१॥	१९॥	२३	१॥	३४॥	३३	१॥	४९॥	४३	१॥	६४॥
४	१॥	६	१४	१॥	२१	२४	१॥	३६	३४	१॥	५१	४४	१॥	६६
५	१॥	७॥	१५	१॥	२२॥	२५	१॥	३७॥	३५	१॥	५२॥	४५	१॥	६७॥
६	१॥	९	१६	१॥	२४	२६	१॥	३९	३६	१॥	५४	४६	१॥	६९
७	१॥	१०॥	१७	१॥	२५॥	२७	१॥	४०॥	३७	१॥	५५॥	४७	१॥	७०॥
८	१॥	१२	१८	१॥	२७	२८	१॥	४२	३८	१॥	५७	४८	१॥	७२
९	१॥	१३॥	१९	१॥	२८॥	२९	१॥	४३॥	३९	१॥	५८॥	४९	१॥	७३॥
१०	१॥	१५	२०	१॥	३०	३०	१॥	४५	४०	॥	६०	५०	१॥	७५

५१	१	७६॥	६१	१॥	९१॥	७१	१॥	१०६॥	८१	१॥	१२१॥	९१	१॥	१३६॥
५२	१॥	७८	६२	१॥	९३	७२	१॥	१०८	८२	१॥	१२३	९२	१॥	१३८
५३	१॥	७९॥	६३	१॥	९४॥	७३	१॥	१०९॥	८३	१॥	१२४॥	९३	१॥	१३९॥
५४	१॥	८१	६४	१॥	९६	७४	१॥	१११	८४	१॥	१२६	९४	१॥	१४१
५५	१॥	८२॥	६५	१॥	९७॥	७५	१॥	११२॥	८५	१॥	१२७॥	९५	१॥	१४२॥
५६	१॥	८४	६६	१॥	९९	७६	१॥	११४	८६	१॥	१२९	९६	१॥	१४४
५७	१॥	८५॥	६७	१॥	१००॥	७७	१॥	११५॥	८७	१॥	१३०॥	९७	१॥	१४५॥
५८	१॥	८७	६८	१॥	१०२	७८	१॥	११७	८८	१॥	१३२	९८	१॥	१४७
५९	१॥	८८॥	६९	१॥	१०३॥	७९	१॥	११८॥	८९	१॥	१३३॥	९९	१॥	१४८॥
६०	१॥	९०	७०	१॥	१०५	८०	॥	१२०	९०	१॥	१३५	१००	१॥	१५०

५१ ३॥ १७८॥	६१ ३॥ २१३॥	७१ ३॥ २४८॥	८१ ३॥ २८३॥	९१ ३॥ ३१८॥
५२ ३॥ १८२	६२ ३॥ २१७	७२ ३॥ २५२	८२ ३॥ २८७	९२ ३॥ ३२२
५३ ३॥ १८५॥	६३ ३॥ २२०॥	७३ ३॥ २५५॥	८३ ३॥ २९०॥	९३ ३॥ ३२५॥
५४ ३॥ १८९	६४ ३॥ २२४	७४ ३॥ २५९	८४ ३॥ २९४	९४ ३॥ ३२९
५५ ३॥ १९२॥	६५ ३॥ २२७॥	७५ ३॥ २६२॥	८५ ३॥ २९७॥	९५ ३॥ ३३२॥
५६ ३॥ १९६	६६ ३॥ २३१	७६ ३॥ २६६	८६ ३॥ ३०१	९६ ३॥ ३३६
५७ ३॥ १९९॥	६७ ३॥ २३४॥	७७ ३॥ २६९॥	८७ ३॥ ३०४॥	९७ ३॥ ३३९॥
५८ ३॥ २०३	६८ ३॥ २३८	७८ ३॥ २७३	८८ ३॥ ३०८	९८ ३॥ ३४३
५९ ३॥ २०६॥	६९ ३॥ २४१॥	७९ ३॥ २७६॥	८९ ३॥ ३११॥	९९ ३॥ ३४६॥
६० ३॥ २१०	७० ३॥ २४५	८० ३॥ २८०	९० ३॥ ३१५	१०० ३॥ ३५०

२१-अथ झूंठा ।

१ ३॥ ३॥	११ ३॥ ३८॥	२१ ३॥ ७३॥	३१ ३॥ १०८॥	४१ ३॥ १४३॥
२ ३॥ ७	१२ ३॥ ४२	२२ ३॥ ७७	३२ ३॥ ११२	४२ ३॥ १४७
३ ३॥ १०॥	१३ ३॥ ४५॥	२३ ३॥ ८०॥	३३ ३॥ ११५॥	४३ ३॥ १५०॥
४ ३॥ १४	१४ ३॥ ४९	२४ ३॥ ८४	३४ ३॥ ११९	४४ ३॥ १५४
५ ३॥ १७॥	१५ ३॥ ५२॥	२५ ३॥ ८७॥	३५ ३॥ १२२॥	४५ ३॥ १५७॥
६ ३॥ २१	१६ ३॥ ५६	२६ ३॥ ९१	३६ ३॥ १२६	४६ ३॥ १६१
७ ३॥ २४॥	१७ ३॥ ५९॥	२७ ३॥ ९४॥	३७ ३॥ १२९॥	४७ ३॥ १६४॥
८ ३॥ २८	१८ ३॥ ६३	२८ ३॥ ९८	३८ ३॥ १३३	४८ ३॥ १६८
९ ३॥ ३१॥	१९ ३॥ ६६॥	२९ ३॥ १०१॥	३९ ३॥ १३६॥	४९ ३॥ १७१॥
१० ३॥ ३५	२० ३॥ ७०	३० ३॥ १०५	४० ३॥ १४०	५० ३॥ १७५

२५—अथ बड़ी एका।

१	१	१	११	११	१२१	२१	२१	४४१	३१	३१	९६१	४१	४१	१६८१
२	२	४	१२	१२	१४४	२२	२२	४८४	३२	३२	१०२४	४२	४२	१७६४
३	३	९	१३	१३	१६९	२३	२३	५२९	३३	३३	१०८९	४३	४३	१८४९
४	४	१६	१४	१४	१९६	२४	२४	५७६	३४	३४	११५६	४४	४४	१९३६
५	५	२५	१५	१५	२२५	२५	२५	६२५	३५	३५	१२२५	४५	४५	२०२५
६	६	३६	१६	१६	२५६	२६	२६	६७६	३६	३६	१२९६	४६	४६	२११६
७	७	४९	१७	१७	२८९	२७	२७	७२९	३७	३७	१३६९	४७	४७	२२०९
८	८	६४	१८	१८	३२४	२८	२८	७८४	३८	३८	१४४४	४८	४८	२३०४
९	९	८१	१९	१९	३६१	२९	२९	८४१	३९	३९	१५२१	४९	४९	२४०१
१०	१०	१००	२०	२०	४००	३०	३०	९००	४०	४०	१६००	५०	५०	२५००

५१	५१	२६०१	६१	६१	३७२१	७१	७१	५०४१	८१	८१	६५६१	९१	९१	८२८१
५२	५२	२७०४	६२	६२	३८४४	७२	७२	५१८४	८२	८२	६७२४	९२	९२	८४६४
५३	५३	२८०९	६३	६३	३९६९	७३	७३	५३२९	८३	८३	६८८९	९३	९३	८६४९
५४	५४	२९१६	६४	६४	४०९६	७४	७४	५४७६	८४	८४	७०५६	९४	९४	८८३६
५५	५५	३०२५	६५	६५	४२२५	७५	७५	५६२५	८५	८५	७२२५	९५	९५	९०२५
५६	५६	३१३६	६६	६६	४३५६	७६	७६	५७७६	८६	८६	७३९६	९६	९६	९२१६
५७	५७	३२४९	६७	६७	४४८९	७७	७७	५९२९	८७	८७	७५६९	९७	९७	९४०९
५८	५८	३३६४	६८	६८	४६२४	७८	७८	६०८४	८८	८८	७७४४	९८	९८	९६०४
५९	५९	३४८१	६९	६९	४७६१	७९	७९	६२४१	८९	८९	७९२१	९९	९९	९८०१
६०	६०	३६००	७०	७०	४९००	८०	८०	६४००	९०	९०	८१००	१००	१००	१००००

२४–अथ ढूंचा।

१ ४॥ ४॥	११ ४॥ ४९॥	२१ ४॥ ९४॥	३१ ४॥ १३९॥	४१ ४॥ १८४॥	५१ ४॥ २२९॥	६१ ४॥ २७४॥	७१ ४॥ ३१९॥	८१ ४॥ ३६४॥	९१ ४॥ ४०९॥
२ ४॥ ९	१२ ४॥ ५४	२२ ४॥ ९९	३२ ४॥ १४४	४२ ४॥ १८९	५२ ४॥ २३४	६२ ४॥ २७९	७२ ४॥ ३२४	८२ ४॥ ३६९	९२ ४॥ ४१४
३ ४॥ १३॥	१३ ४॥ ५८॥	२३ ४॥ १०३॥	३३ ४॥ १४८॥	४३ ४॥ १९३॥	५३ ४॥ २३८॥	६३ ४॥ २८३॥	७३ ४॥ ३२८॥	८३ ४॥ ३७३॥	९३ ४॥ ४१८॥
४ ४॥ १८	१४ ४॥ ६३	२४ ४॥ १०८	३४ ४॥ १५३	४४ ४॥ १९८	५४ ४॥ २४३	६४ ४॥ २८८	७४ ४॥ ३३३	८४ ४॥ ३७८	९४ ४॥ ४२३
५ ४॥ २२॥	१५ ४॥ ६७॥	२५ ४॥ ११२॥	३५ ४॥ १५७॥	४५ ४॥ २०२॥	५५ ४॥ २४७॥	६५ ४॥ २९२॥	७५ ४॥ ३३७॥	८५ ४॥ ३८२॥	९५ ४॥ ४२७॥
६ ४॥ २७	१६ ४॥ ७२	२६ ४॥ ११७	३६ ४॥ १६२	४६ ४॥ २०७	५६ ४॥ २५२	६६ ४॥ २९७	७६ ४॥ ३४२	८६ ४॥ ३८७	९६ ४॥ ४३२
७ ४॥ ३१॥	१७ ४॥ ७६॥	२७ ४॥ १२१॥	३७ ४॥ १६६॥	४७ ४॥ २११॥	५७ ४॥ २५६॥	६७ ४॥ ३०१॥	७७ ४॥ ३४६॥	८७ ४॥ ३९१॥	९७ ४॥ ४३६॥
८ ४॥ ३६	१८ ४॥ ८१	२८ ४॥ १२६	३८ ४॥ १७१	४८ ४॥ २१६	५८ ४॥ २६१	६८ ४॥ ३०६	७८ ४॥ ३५१	८८ ४॥ ३९६	९८ ४॥ ४४१
९ ४॥ ४०॥	१९ ४॥ ८५॥	२९ ४॥ १३०॥	३९ ४॥ १७५॥	४९ ४॥ २२०॥	५९ ४॥ २६५॥	६९ ४॥ ३१०॥	७९ ४॥ ३५५॥	८९ ४॥ ४००॥	९९ ४॥ ४४५॥
१० ४॥ ४५	२० ४॥ ९०	३० ४॥ १३५	४० ४॥ १८०	५० ४॥ २२५	६० ४॥ २७०	७० ४॥ ३१५	८० ४॥ ३६०	९० ४॥ ४०५	१०० ४॥ ४५०

२५—अथ चढ़ी एका।

४१	४१	१६८१
४२	४२	१७६४
४३	४३	१८४९
४४	४४	१९३६
४५	४५	२०२५
४६	४६	२११६
४७	४७	२२०९
४८	४८	२३०४
४९	४९	२४०१
५०	५०	२५००
३१	३१	९६१
३२	३२	१०२४
३३	३३	१०८९
३४	३४	११५६
३५	३५	१२२५
३६	३६	१२९६
३७	३७	१३६९
३८	३८	१४४४
३९	३९	१५२१
४०	४०	१६००
२१	२१	४४१
२२	२२	४८४
२३	२३	५२९
२४	२४	५७६
२५	२५	६२५
२६	२६	६७६
२७	२७	७२९
२८	२८	७८४
२९	२९	८४१
३०	३०	९००
११	११	१२१
१२	१२	१४४
१३	१३	१६९
१४	१४	१९६
१५	१५	२२५
१६	१६	२५६
१७	१७	२८९
१८	१८	३२४
१९	१९	३६१
२०	२०	४००
१	१	१
२	२	४
३	३	९
४	४	१६
५	५	२५
६	६	३६
७	७	४९
८	८	६४
९	९	८१
१०	१०	१००

९१	९१	८२८१
९२	९२	८४६४
९३	९३	८६४९
९४	९४	८८३६
९५	९५	९०२५
९६	९६	९२१६
९७	९७	९४०९
९८	९८	९६०४
९९	९९	९८०१
१००	१००	१००००
८१	८१	६५६१
८२	८२	६७२४
८३	८३	६८८९
८४	८४	७०५६
८५	८५	७२२५
८६	८६	७३९६
८७	८७	७५६९
८८	८८	७७४४
८९	८९	७९२१
९०	९०	८१००
७१	७१	५०४१
७२	७२	५१८४
७३	७३	५३२९
७४	७४	५४७६
७५	७५	५६२५
७६	७६	५७७६
७७	७७	५९२९
७८	७८	६०८४
७९	७९	६२४१
८०	८०	६४००
६१	६१	३७२१
६२	६२	३८४४
६३	६३	३९६९
६४	६४	४०९६
६५	६५	४२२५
६६	६६	४३५६
६७	६७	४४८९
६८	६८	४६२४
६९	६९	४७६१
७०	७०	४९००
५१	५१	२६०१
५२	५२	२७०४
५३	५३	२८०९
५४	५४	२९१६
५५	५५	३०२५
५६	५६	३१३६
५७	५७	३२४९
५८	५८	३३६४
५९	५९	३४८१
६०	६०	३६००

२६–अथ बड़ी ग्यारह ।

११ ११ १२१	१२ ११ १३२	१३ ११ १४३	१४ ११ १५४	१५ ११ १६५
११ १२ १३२	१२ १२ १४४	१३ १२ १५६	१४ १२ १६८	१५ १२ १८०
११ १३ १४३	१२ १३ १५६	१३ १३ १६९	१४ १३ १८२	१५ १३ १९५
११ १४ १५४	१२ १४ १६८	१३ १४ १८२	१४ १४ १९६	१५ १४ २१०
११ १५ १६५	१२ १५ १८०	१३ १५ १९५	१४ १५ २१०	१५ १५ २२५
११ १६ १७६	१२ १६ १९२	१३ १६ २०८	१४ १६ २२४	१५ १६ २४०
११ १७ १८७	१२ १७ २०४	१३ १७ २२१	१४ १७ २३८	१५ १७ २५५
११ १८ १९८	१२ १८ २१६	१३ १८ २३४	१४ १८ २५२	१५ १८ २७०
११ १९ २०९	१२ १९ २२८	१३ १९ २४७	१४ १९ २६६	१५ १९ २८५

१६	११	१७६	१७	११	१८७	१८	११	१९८	१९	११	२०९	२०	११	२२०
१६	१२	१९२	१७	१२	२०४	१८	१२	२१६	१९	१२	२२८	२०	१२	२४०
१६	१३	२०८	१७	१३	२२१	१८	१३	२३४	१९	१३	२४७	२०	१३	२६०
१६	१४	२२४	१७	१४	२३८	१८	१४	२५२	१९	१४	२६६	२०	१४	२८०
१६	१५	२४०	१७	१५	२५५	१८	१५	२७०	१९	१५	२८५	२०	१५	३००
१६	१६	२५६	१७	१६	२७२	१८	१६	२८८	१९	१६	३०४	२०	१६	३२०
१६	१७	२७२	१७	१७	२८९	१८	१७	३०६	१९	१७	३२३	२०	१७	३४०
१६	१८	२८८	१७	१८	३०६	१८	१८	३२४	१९	१८	३४२	२०	१८	३६०
१६	१९	३०४	१७	१९	३२३	१८	१९	३४२	१९	१९	३६१	२०	१९	३८०
१६	२०	३२०	१७	२०	३४०	१८	२०	३६०	१९	२०	३८०	२०	२०	४००

२६—अथ घड़ी ग्यारह ।

११	११	१२१	१२	११	१३२	१३	११	१४३	१४	११	१५४	१५	११	१६५
११	१२	१३२	१२	१२	१४४	१३	१२	१५६	१४	१२	१६८	१५	१२	१८०
११	१३	१४३	१२	१३	१५६	१३	१३	१६९	१४	१३	१८२	१५	१३	१९५
११	१४	१५४	१२	१४	१६८	१३	१४	१८२	१४	१४	१९६	१५	१४	२१०
११	१५	१६५	१२	१५	१८०	१३	१५	१९५	१४	१५	२१०	१५	१५	२२५
११	१६	१७६	१२	१६	१९२	१३	१६	२०८	१४	१६	२२४	१५	१६	२४०
११	१७	१८७	१२	१७	२०४	१३	१७	२२१	१४	१७	२३८	१५	१७	२५५
११	१८	१९८	१२	१८	२१६	१३	१८	२३४	१४	१८	२५२	१५	१८	२७०
११	१९	२०९	१२	१९	२२८	१३	१९	२४७	१४	१९	२६६	१५	१९	२८५

२८—अथ एक पैसे से लेकर एक रुपे तक ।

)।	॥)।	।।।)।
)॥	॥)॥	।।।)॥
)।।।	॥)।।।	।।।)।।।
।-)	॥-)	।।।-)
।-)।	॥-)।	।।।-)।
।-)॥	॥-)॥	।।।-)॥
।-)।।।	॥-)।।।	।।।-)।।।
।=)	॥=)	।।।=)
।=)।	॥=)।	।।।=)।
।=)॥	॥=)॥	।।।=)॥
।=)।।।	॥=)।।।	।।।=)।।।
।≡)	॥≡)	।।।≡)
।≡)।	॥≡)।	।।।≡)।
।≡)॥	॥≡)॥	।।।≡)॥
।≡)।।।	॥≡)।।।	।।।≡)।।।
॥)	।।।)	१)

३०—अथ दामः।

दो दमड़ी की एक छदाम। दो छदाम का एक [illegible]ा। दो धेलों का एक पैसा। दो पैसों का एक टका। दो टकों का एक आना। चार आनों की एक चौअन्नी। दो चौअन्नियों की एक अठन्नी। दो अठन्नी का एक रुपैया॥

३१—आठ खस खस का एक चांवल। आठ चांवल की एक रत्ती। आठ रत्ती का एक मासा। बारह मासों का एक तोला। पांच तोलों की एक छटांक। चार छटांक का एक पाव सेर। चार पाव सेर का एक सेर। ढाई सेर की एक ढैया। दो ढैया की एक पंसेरी॥ दो पंसेरी की एक धड़ी। चार धड़ी का एक मण। तीन मण का एक पल्ला।

३२—एक रुपैये की जै मन आता। आने की वै ढैयां आंता॥१॥
जैसे एक रुपैये की तीन मन घास तो एक आने की ३ ढैयां अर्थात् ७॥ सेर आवेगी।

३३—आने की जै ढैया आवें। रुपैये के उतने मन लावें॥ २॥
जैसे एक आने की २ ढैयां हों तो १ रुपैयें की २ मन होगी।

३४—जै रुपैयें मन भाव हो भैया। उतने आनों की हो ढैया॥३॥
जैसे ३) रुपैयें की एक मन तो तीन आनों की ढाई सेर।

२९–अथ पाव छटांक से एक मण तक ।

S०।	S।॥=	S९	॥S५
S०॥	S।॥≡	।S	॥S६
S०।॥	S१	।S१	॥S७
S-	S१-	।S२	॥S८
S=	S१=	।S३	॥S९
S≡	S१≡	।S४	॥ S
S।	S१।	।S५	।॥S१
S।-	S१॥	।S६	।॥S२
S।=	S१।॥	।S७	।॥S३
S।≡	S२	।S८	।॥S४
S॥	S३	।S९	।॥S५
S॥-	S४	॥S	।॥S६
S॥=	S५	॥S१	।॥S७
S॥≡	S६	॥S२	॥ S८
S।॥	S७	॥S३	॥S९
S।॥-	S८	॥S४	१S

४२—एक रुपये का हाट में, जै छटांक हो भाव ;
छः सौ चालीस रुपये में। उतने मन लो राव ॥ ११ ॥
जैसे १ रुपये का ७ छटांक ६४०) का ७) मन होगा

४३—एक रुपये का जितने सेर,
चालीस का उतने मन ढेर ॥ १२ ॥
जैसे १ रुपये का ४ सेर तो ४०) का ४ मन होगा

४४—चालीस रुपये की सन जै मन,
रुपये का वै सेर तोल सन ॥ १३ ॥
जैसे ४०) का ४ मन तो १) का ४ सेर।

४५—सेर के हो जै आने दाम,
छटांक भर के वही छदाम ॥ १४ ॥
जैसे ॥) की एक सेर तो १ छटांक के १ २छदाम।

४६—रुपये के जितने गज राम।
उनही गिरह के आना दाम ॥ १५ ॥
जैसे १) के ३ गज तो १ आने के ३ गिरह।

४७—आने की जै गिरह सुजान, रुपये के उतने गज मान॥१६॥
जैसे १ आने की २ गिरह तो १) की दो गज।

४८—जै रुपये की आवे गज भर।
वै आने का एक गिरह धर ॥ १७ ॥

४२—एक रुपये का हाट में, जे छटांक हो भाव।
छः मौ चालीस रुपये में। उतने मन लो राव॥ ११॥
जैसे १ रुपये का ७ छटांक ६४०) का ७) मन होगा

४३—एक रुपये का जितने सेर,
चालीस का उतने मन ढेर॥ १२॥
जैसे १ रुपये का ४ सेर तो ४०) का ४ मन होगा।

४४—चालीस रुपये की सन जे मन,
रुपये का वै सेर तोल सन॥ १३॥
जैसे ४०) का ४ मन तो १) का ४ सेर।

४५—सेर के हो जे आने दाम,
छटांक भर के वही छदाम॥ १४॥
जैसे ॥) की एक सेर तो १ छटांक के १ छदाम।

४६—रुपये के जितने गज राम।
उतनी गिरह के आना दाम॥ १५॥
जैसे १) के ३ गज तो १ आने के ३ गिरह।

४७—आने की जे गिरह सुजान, रुपये के उतने गज मान॥१६॥
जैसे १ आने की २ गिरह तो १) की दो गज।

४८—जे रुपये की आवे गज भर।
वै आने का एक गिरह धर॥ १७॥

जैसे ४) का १ गज तो ।) एक गिरह।-

४६—जितने आने गज के दाम।
एक गिरह के वही छदाम॥ १८॥
जैसे ॥) की १ गज तो ८ छदाम की १ गिरह।

५०—रुपये के जै टके गिनाओ।
आने की वे दमड़ी लाओ॥ १९॥
जैसे १) के ३२ टके तो १ आने की ३२ दमड़ी।-

५१—पैसे की जै गंडे कौड़ी। वे छदाम की बहुत न थोड़ी॥२०॥
जैसे १ पैसे के १६ गडे तो छदाम की १६ कौड़ी होगी।

५२—जितने रुपया तोला भाई। रत्ती की हो दूनी पाई॥२१॥
जैसे २४) का १ तोला सोना तो १ रत्ती की ४८ पाई।

५३—रत्ती की हो जितनी पाई। आध रुपया तोला भाई॥२२॥
जैसे ४६ पाई १ रत्ती के तो ४६ के आधे २३) रु० १ तोले के।

५४—जै रुपया तोले के लाना छै रती के उतने आना॥२३॥
जैसे ४) एक तोला के तो ६ रत्ती के ४ आने।

५५—छै रत्ती के जितने आना। तोले के वै रुपये लाना॥२४॥
जैसे ६ रत्ती के ५ आने तो १ तोले के ५। हुए।

५६—जै आने का तोला जानो। वे पाई का मासा मानो॥२५॥
जैसे ४ आने का १ तोला तो ४ पाई का एक मासा होगा।

५७—जै पाई का मासा बोलो। वै आने का तोला तोलो ॥२६॥
जैसे ६ पाई का १ मासा तो ६ आने का १ तोला।

५८—जितने रुपये-राम-हो मासे भर का मोल।
दूने आने खोल कर रत्ती भर लो तोल॥ २७॥
जैसे ३ रुपये को १ मासा तो ६ आने की १ रत्ती होगी।

५९—एक रुपये के जितने मासे आते हैं।
दो-आने की उतनी रत्ती पाते हैं॥ २८॥
जैसे १) रु० की ४ मासा तो २ आने की ४ रत्ती।

६०—जितने सेर अन्न दिन भर में एक कुटुंब उठाता है।
सेरों का नौगुना मनों में एक साल में खाता है॥ २९॥
जैसे १ दिन में ४ सेर तो १ वर्ष में ३६ मन हुआ।

६१—जितने ही मन अन्न कुटुम्बी एक वर्ष में खाता है।
उसका नौवां भाग सेर वह एक दिवस में पाता है॥३०॥
जैसे १ वर्ष में ४५ मन तो एक दिन में ५ सेर।

६२—जै सेर रोज खाय जो जन। एक मास में पौन मन॥३१॥
जैसे १ दिन में ४ सेर तो १ मास में ३ मन होगा।

६३—जितने तोले एक रोज में मनुष्य जिनस उठाता है।
साढ़े चार गुना सेरों में माल साल में खाता है॥३२॥
जैसे १ दिन में ४ तोला तो १ वर्ष में १८ सेर।

६४—जे आने प्रति बीस्वा मानों। रुपये सवाये बीघा जानों॥३३॥
जैसे १ विस्वा का ४ आना तो १ बीघा का ५)।

६५—जितने रुपया बीघे भर का लगे लगान।
चार पांचवां आनों में बिसवा कर जान॥ ३४॥

जैसे १ बीघे का १०) तो दश चौक ४० का ५वां भाग ८ आने विस्वा का।

६६—जितने मन बीघे में होवें। दुगुने सेर बिसवे में ढोवें॥३५॥
जैसे १ बीघे में ४ मन तो १ बिसवे में ८ सेर।

६७—हों जे सेर बिसवे में प्यारे। आध मन बीघे से लारे॥३६॥
जैसे १ बिसवे में १० सेर तो बीघे में ५ मन।

६८—रुपयों के आने जो भरें। चार बार तक दूने करें॥३७॥
जैसे ४) के ६४ आने होंगे।

६९—आनों के रुपया जो करे। चार बार तक आधा धरे॥३८॥
जैसे ४०० आनों के चौथी बार आधा करे तो २५) हुए।

७०—आनों के रुपये जो करें एक अंक उपर का हरे।
आध करके कर सवाय मानों रोक रुपये पाये॥ ३९॥

जैसे ८० आने हैं तो बिन्दी दूर करने पर ८ रहे उनका आधा का सवाया किया तो ५) हुए।

७१ —बीघों के बिसवे जो करें। दूना करके बिन्दी धरें ॥४०।

जैसे २ बीघे का दूना ४ बिन्दी देने पर ४० बिस्वे।

७२—बिसवों के बीघे जो करें। बिन्दी हर कर आधा धरे ॥४१॥

जैसे १०० की बिन्दी हरने पर १० का आधा ५ बीघे।

७३—बिसवों के बीघा जो करे एक अंक हर आधा धरे।
उपर से जो अंक हरा उसको बिसवा नाम खरा ॥४२।

जैसे ८५ बिसवे हैं तो ५ दूर करने पर ८ रहे फिर ८ का आध किया तो ४ बीघे हुए और ५ बिसवे हैं।

७४—मन के जो तुम सेर करो। करो चौगुना शून्य धरो ॥४
जैसे ४ मन के १६० सेर हुए।

७५—सेरों के जो मन न हों करना बिन्दी हर चौथाई धरना १
जैसे २०० सेर के ५ मन होते हैं।

७६—सेरों के जो मन हो करना। शून्य गिरा चौथाई धरना
शून्य शिवाये वही अंक लमाओ उनको लड़को सेर बताओ'

जैसे ८३ सेर रहे ३ दूर किये तो ८ रहे। ८ का चौथाई २ म हुए और पीछा ३ को लगा देने पर २ मन ३ सेर हुए॥

७७—सेरों के हो छटांक करना। चार बार दूना कर धरना
जैसे ४ सेर का ६४ छटांक।

६४—जे आने प्रति बीस्वा मानों। रुपये सवाये बीघा जानों॥ ३३॥

जैसे १ विस्वा का ४ आना तो १ बीघा का ५)।

६५—जितने रुपया बीघे भर का लगे लगान।
चार पांचवां आनों में बिसवा कर जान॥ ३४॥

जैसे १ बीघे का १०) तो दश चौक ४० का ५वां भाग ८ आने विस्वा का।

६६—जितने मन बीघे में होवें। दुगुने सेर बिसवे में ढोवें॥ ३५॥

जैसे १ बीघे में ४ मन तो १ बिसवे में ८ सेर।

६७—हों जे सेर बिसवे में प्यारे। आधे मन बीघे से लारे॥ ३६॥

जैसे १ बिसवे में १० सेर तो बीघे में ५ मन।

६८—रुपयों के आने जो भरें। चार बार तक दूने करें॥ ३७॥

जैसे ४) के ६४ आने होंगे।

६९—आनों के रुपया जो करें। चार बार तक आधा धरें॥ ३८॥

जैसे ४०० आनों के चौथी बार आधा करे तो २५) हुए।

७०—आनों के रुपये जो करें एक अंक उपर का हरें।
आधे इसके करें सवाये मानों रोक रुपये पाये॥ ३९॥

जैसे ८० आने हैं तो बिन्दी दूर करने पर ८ रहे उनका आधा का सवाया किया तो ५) हुए।

तिहाई की चौथाई आनों से थैली भर जाई ॥ ८४ ॥
जैसे ३६ की तिहाई १२ फिर १२ को चौथाई ३ आने हुए ॥

शेष दूसरे भाग में कहूंगा ।

८६—जब लड़कों की वाचनकलास्पष्ट हो जायँ तो फिर अपने पूर्वजों तथा देशभक्त प्राचीन आर्य राजे महाराजों का निर्पक्ष इतिहास पढ़ाना चाहिये। भारत के प्राचीन राजवंश में लिखा है कि, समस्त सभ्य जगत में इतिहास एक बड़े ही गौरव की वस्तु समझा जाता है। क्योंकि देश या जाति की भावी उन्नति का यही एक साधन है। इसीके द्वारा भूतकाल की घटनाओं के फला फल पर विचार कर आगे का मार्ग निष्कण्टक किया जा सकता है।

८७—इतिहास तिमिर नाशक में राजा शिवप्रसाद लिखते हैं कि क्या ऐसे भी आदमी हैं जो अपने बाप दादाओं और उनके पुरुषार्थों का हाल सुनना न चाहें। और उनके जमानों में लोगों का चाल चलन कैसा था। व्यवहार वनज व्यापार और राज दरबार किस ढब वर्ता जाता था। देश की क्या दशा थी। कब कब किस किस तरह कौन कौन से राजा बादशाहों के हाथ आये। किस किस कैसा कैसा इन पर जोर जुल्म जताया और कौन २

७८—जो छटांक से सेर करो तुम ।
चार-चार-कर अर्ध धरो तुम ॥ ४७ ॥
जैसे ८० के ५ सेर हुए ।

७९—जो छटांक के तोले करना । शून्य लगाकर आधा धरना ४८

जैसे २ के बिन्दी लगाई, तो २० फिर आधे किये तो १० तोले हुए ।

८०—जो तोलों की छटांक करना । शून्य गिरा कर दूना करना ४९

जैसे ८० तोले को बिन्दी गिराई तो ८ रहे ८ का दूना १६ छटांक हुए ।

८१—तोलों के मासे हो करना । तीन गुने को चौगुने करना ५०
जैसे ४ तोलों के ३ गुने १२ और १२ का ४ गुना ४८ मासे हुए ।

८२—मासों की रत्ती हो करना । तीन चार दूना कर धरना ॥५१॥
जैसे दो मासे की १६ रत्ती ।

८३—रत्ती से मासे हों करना । तीन चार आधा धरना ॥५२॥
जैसे ४० रत्ती का ५ मासा ।

८४—आनों की करना हो पाई, पहिले तो तिगुना कर भाई ।
उनका करो चौगुना सज्जन पाई, गिनलो खनन खनन ॥५३॥
जैसे ८ आने का ३ गुना २४ । फिर २४ का ४ गुना ९६ पाई ।

८५—पाई के आने हों भाई । पहिले उनकी करो तिहाई । करो

जातियां जबतक तुम्हारी छाती पर बनी रहेंगी तबतक तुम क्षत्रिय शब्द को यथार्थ नहीं कर सकोगे। हमारी क्षत्रिय जाति की ही भूलों से आज भारतवर्ष की इतनी बड़ी दुर्दशा होरही है। यदि ईर्षा और मिथ्याभिमान को छोड़ सर्व सहमत होकर, फिर भी हमारी क्षत्रिय जाति अपने पूर्वजों का ही अनुकरण करलें तो देश का उद्धार सहज में होसक्ता है।

८६-इस वक्त कवी जोधराज कृत "हम्मीर रासा" मेरे हाथ में है। शरणागत वत्सल सज्जन धर्मात्मा और पक्षपात रहित बहादुर चौहान कुल दिवाकर महाराज राव हम्मीर का यह जीवन चरित्र है। इसी का संक्षिप्त सारांश मैं आम क्षत्रिय जाति को भेट देता हूं। शुरू में मंगलाचरण किया है

कि सिंदुर वदन अमन्दद्युति बुद्धि सिद्धि वरदाय।
समिरित पदपंकज तुरत विघ्न अनेक विलाय ॥ १ ॥

चन्द्र और सूर्य वंश के बारे में लिखा है कि जब सनकादि कुमारों ने अखंड ब्रह्मचर्य धारण कर सांसारिक विषय भोगादि से अरुचि प्रगट की तब ब्रह्मा ने उसी प्रकार से अन्यान्य मुनिवरों को उत्पन्न किया।

यथाः—मन त मरीच भय तब आय,
उपजे पुलस्त ऋषि श्रवण पाय।

जमाने के फेर फार कहां कहां इन्हें झेलने पड़े कि जिनसे ये कुछ के कुछ बन गये।

८८—देश और जाति का अभिमान छोड़ कर कलियुग के प्रभाव से आजकल हमारी पवित्र आर्य क्षत्रिय जाति भी प्राचीन सभ्यता से पतित होकर अपना क्षत्रियत्व गुण नष्ट कर चुकी हैं॥ क्योंकि क्षत्रिय शब्द का अर्थ होता है-क्षताद पाया त्पापात्कष्टा द्दः खाद न्यायाद्वा त्रायते रक्षति स्व परात्मान मिति क्षत्रियः। अर्थात् क्षत् कहिये आपाय, पाप, कष्ट, दुःख, तथा अन्याय से। जो स्व पर आत्मा रक्षण करें सो क्षत्रिय कहाते हैं। यह अर्थ क्या आजकल के नामधारी क्षत्रियों में घटित हो सकता है। जहां हरेक बात में शिथिलता पाई जाती हो वहां स्वपर आत्मा को रक्षा नहीं हो सकता। सभी जगह के लोगों ने अनुभव किया है कि जब तक साहस का अवलम्बन न लिया जायगा तब तक आत्मरक्षा करना भी कठिन है तो फिर देश जाति और धर्म की तो बात ही क्या। प्यारे क्षत्रियाभिमानि सरदारों अपने पूर्वजों के धार्मिक जीवन पर ख्याल करो। आपस की इर्षा को छोड़ कर क्षात्र बल बढ़ाओ। देश धर्म और क्षत्रिय जाति की शत्रुरूप हो गो भक्षक अनार्य

भये कश्यप के सूरज सुआय,
सो भयो वंश सूरज सु गाय।
अरु सुनो अत्रि के पुत्र तीन,
इक दत्त सोम जानो प्रवीन ॥ २७ ॥
ऋषि भये अपर दुर्वासा नाम,
सोई सुनो श्रवण तिहि वंश जाम।
सुत भयो सोम के बुद्ध आय,
पुरूरवा पुत्र ता के सुभाय ॥ २८ ॥
षट पुत्र भये ताके प्रसिद्ध,
भये सोम वंश तिनके सुसिद्ध।
भृगु वंश सुनो अतिशय उदार,
बहु बाल भये तिन तैं अपार ॥ २९ ॥

अर्थः—में लिखा है कि राजा पुरुरवा के ६ पुत्र हुए जिनों से पुरातन चन्द्र वंशियों के ६ कुल प्रख्यात हैं॥ इसी प्रकार भृगु की दूसरी स्त्री से बृहस्पति और च्यवन ऋषि का जन्म हुआ। च्यवन के रिचीक इनके जमदग्नि और जमदग्नि के परशुराम पुत्र हूए।

यथः—

ब्रह्मा के सुत भृगु भए भार्गव भृगु के गेह।
ऋषि रिचीक ताके भये तेज पुंज तप देह ॥ ३४ ॥

इमिभयनाभि तैं पुलह और,
कृत भय ब्रह्म कर तैं जु मौर ॥ २१ ॥
भृगुभये स्वयं मृत्वचा थान,
भये प्राणनाथ वाशिष्टमान ।
अङ्गुष्ट दक्ष उपजेसु ब्रह्म,
नारद जु भये उत्संग अह्म ॥ २२ ॥
भये छाया तैं कर्दम ऋषीश,
अरु भये पृष्टि अधर्म दीस ।
अरु हृदय भये कामा उदार,
फर दनतें भौधर्मावतार ॥ २३ ॥
भये लोभ अधरतैं अति वलिष्ट,
वानी जुविमल मुखतैं प्रतिष्ट ।
पद निरते मींड तैं सिन्धु जानि,
यह विधि जु प्रजापति ब्रह्म मानि ॥ २४ ॥

अर्थ में लिखा है कि इन्हीं ऋषियों से संसार के समस्त मनुष्यों की तथा भिन्न भिन्न जातियों की वृद्धि हुई है।

यथाः—इक कलानाम त्रिय धरम रीच,
द्वैपुत्र भये ताके जु पौच ।
इक भये प्रथम कश्यप सुजान,
फिर उपजे धर्म जह पूर्ण मान ॥ २६ ॥

ने उन्होसे लड कर अपने प्राण दिये और बहुतों ने उन्होको ईश्वर का अवतार समझ कर अपनी गर्दन झुका दी, तथा जो कायर थे वह अपनी जान बचाने के लिये शस्त्र छोड कर कृषक आदि होगये। जब उसके खेत के पास परशुरामजी आते थे तब उन्होंकी परशु में से भयङ्कर अग्नि ज्वला निकलने लग जाति थी। तब उसको पूछा जाता था क्या तुम राजपूत हो ॥ उत्तर में, वह बोलता था कि (मैं ना) अर्थात् मैं राजपूत नहीं हूं। तो फिर तुम कौन हो ? उत्तर मिलता कि मैं (रजपुत) हुं, राजपुत और रजपूत शब्द में बहुत ही फर्क समझ कर परशुरामजी ने उसको जमींदार मान कर छोड़ दिया। ऐसे ही बहुत से चंद्र वंशी राजपुत्रों ने अपने को चांदा और हैहय आदि बता कर जान बचाई और सभी ने परशुराम की आधीनता स्वीकार करली। असंख्य क्षत्रियों के रक्त से परशुरामजी ने बड़े २ होज भर दिये थे। जब उनके रुधिर से पित्रों को तर्पण किया तो परशुराम के पराक्रम से प्रसन्न हुए पितृ देवताओं ने परशुराम को शान्त हो कर तप करने की आज्ञा दी। तब उनने बद्रिकाश्रम में जाकर अपना शरीर छोड़ दिया। यह यज्ञ और तर्पण क्रिया कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी को समाप्त हुई थी, इसी ही दिन को पवित्र समझ कर परशुराम के अनुयायी

जामदग्नि ताके भये परसराम सुत जाहि ।
क्षत्रि मेटि विप्रन दई भूमि कितीयर नाहि ॥ ३५ ॥
रह्यो नहीं क्षत्रिय जाति विशेष, भये निर्मूल जु क्षत्रि अशेष ॥३६

बचे कछु दीन मलीन सुवेस,
कहूं तिनके अब रूप असेस ।
धरैं तृण दंत कि दीन बयन्न,
किये तिय रूप लखे जु नयन्न ॥ ४० ॥
नपुंसक बालक वृद्ध सु दीन,
धरैं मुख न बखसु बेन सहीन ।
तजे तिन आयुध पिट्ठी दिखाय,
गहे तिन आयसु भाय सुपाय ॥ ४१ ॥
हने क्षिति के सब वीर अपार,
भरे बहु कुंड जु श्रोणित धार ।
करैं तिहिं पितृन तर्पन नीर,
भये सब हर्षित पित्र सधीर ॥ ३८ ॥
दिये तब आषिप प्रेम समेत,
चले ऋषि रोज तप कृत हेत ॥ ३६ ॥

यमदग्नि ऋषि की हत्या रूप दोष फक्त एक कीर्त्ति वीर्या-
र्जुन का ही था, परन्तु परशुरामजी ने प्राचीन असंख्य चन्द्र-
वंशियों की छहों साखाओं को निर्मूल कर देने की दृढ़
प्रतिज्ञा की, ऐसा अन्याय समझ कर कितने कही क्षत्रियों

ने उन्होसे लड कर अपने प्राण दिये और बहुतों ने उन्होको ईश्वर का अवतार समझ कर अपनी गर्दन झुका दी, तथा जो कायर थे वह अपनी जान बचाने के लिये शस्त्र छोड कर कृषक आदि होगये। जब उसके खेत के पास परशुरामजी आते थे तब उन्होंकी परशु में से भयङ्कर अग्नि ज्वला निकलने लग जाति थी। तब उसको पूछा जाता था क्या तुम राजपुत हो॥ उत्तर में वह बोलता था कि (मैं ना) अर्थात् मैं राजपूत नहीं हूं। तो फिर तुम कौन हो? उत्तर मिलता कि मैं (रजपुत) हुं. राजपुत और रजपूत शब्द में बहुत ही फर्क समझ कर परशुरामजी ने उसको जमीदार मान कर छोड़ दिया। ऐसे ही बहुत से चंद्र वंशी राजपुत्रों ने अपने को चांदा और हैहय आदि बता कर जान बचाई और सभी ने परशुराम की आधीनता स्वीकार करली असंख्य क्षत्रियों के रक्त से परशुरामजी ने बड़े २ होज भर दिये थे। जब उनके रुधिर से पित्रों को तर्पण किया तो परशुराम के पराक्रम से प्रसन्न हुए पितृ देवताओं ने परशुराम को शान्त हो कर तप करने की आज्ञा दी। तब उनने बद्रिकाश्रम में जाकर अपना शरीर छोड़ दिया। यह यज्ञ और तर्पण क्रिया कार्तिक कृष्ण चर्तुदशी को समाप्त हुई थी, इसी ही दिन को पवित्र समझ कर परशुराम के अनुयायी

जमीदार रजपूतों ने भी जलाशयों में जाकर
हो अपने पितृदेवताओं का जल तर्पण शुरु किया जिससे
उन्होंने बहुत ही नुकसान उठाना पड़ा है। क्योंकि
शस्त्ररहित होजाने से अनार्य राक्षस आकर उन्हों
को मार राज खोस लेते थे॥ सृष्टि के शासनकर्ता
क्षत्रियों के समूल उन्मूल होजाने से जब परस्पर अन्याय
आचरण के कारण प्रजा पिडित हो उठी और दैत्य और
राक्षसों के उपद्रवों से ऋषि लोगों के यज्ञादि कर्मों में
भी विघ्न पड़ने लगा तब आबु के पहाड़ पर जाकर
ऋषियों ने अपने योग बल से चार बहादुर क्षत्रियों को
उत्पन्न किया॥ कवी ने लिखा है किः—

बढ़े रजनीचर वृन्द अनेक,
मिटे जप तप सुवेद विवेक।
करे उत पात सु घात अपार,
तजे कुल धर्म्म सु आश्रम धार॥ ४॥
मिटी मरजाद रहे सब भीत,
तप ऋषिराजन बाढन चीत।
जुरे ऋषिवृन्द सु अबुद आय,
जहां ऋषि चोप बसै सत भाय॥ ४५॥

अनुक्रम से तीन वीरों के द्वारा भी जब शत्रुपरास्त न हु
तो चौथी बार में ऋषियों ने यज्ञ पुरुष की आराधना क

एक महावीर पुरुष को प्रगट किया और आशा पुरक नाम शक्तिदेवी को उस महावीर की साहता में नियुक्त की।

यथाः—भृगुनाथ कही खल हनू धाय,
संगशक्ति दहय नृप के सहाय।
दश बाहु उग्र आयुध विशाल,
आरुढसिंह उर कमल माल ॥ ६५ ॥
मुनिदेव मिले अभिशेष कीन,
नृप अनल नाम कहता सुदीन।
नृप किया युध तिन तै अखंड,
हनि जंभ केतकरि खंड खंड ॥ ६६ ॥
हनि धूम्र केतु जोशक्ति आय,
नृप हर्ष सहित पर से सुपाय।
बहु दैत्य नृपहिं मारे अपार,
उठिचली खेत ते रुधिर धार ॥ ६७ ॥

आसा पूरण सबन की, करी शक्ति तिहि वार।
कही ले आशापुरा, धरयो नाप निर्धार ॥ ६८ ॥
चहुवान के वंश में परमइष्ट कुल देवी।
सकल मनोरथ सिद्धि तिहां पूजन पावे सेवी ॥ ६९ ॥

इन ४ महापुरुषों के बारे में बहुत से इतिहासकारों का कथन है कि जो पुरायोवासी क्षत्रिय परशुराम के भय से जमींदार होगये थे। उन्हींको यज्ञ द्वारा क्षत्रिय धर्म में

जमींदार रजपूतों ने भी जलाशयों में जाकर निःशस्त्र हो अपने पितृदेवताओं का जल तर्पण शुरु किया जिसमें उन्होंने बहुत ही नुकसान उठाना पड़ा है। क्योंकि शस्त्ररहित होजाने से अनार्य राक्षस आकर उन्हों को मार राज्य खोस लेते थे॥ सृष्टि के शासनकर्त्ता क्षत्रियों के समूल उन्मूल होजाने से जब परस्पर अन्याय आचरण के कारण प्रजा पिडित हो उठी और दैत्य और राक्षसों के उपद्रवों से ऋषि लोगों के यज्ञादि कर्मों में भी विघ्न पड़ने लगा तब आबु के पहाड़ पर आकर ऋषियों ने अपने योग बल से चार बहादुर क्षत्रियों को उत्पन्न किया॥ कवी ने लिखा है किः—

बढ़े रजनीचर वृन्द अनेक,
मिटे जप तप सुवेद विवेक।
करै व्रत पात सु घात अपार,
तजै कुल धर्म्म सु आश्रम धार॥ ४॥
मिटी मरजाद रहे सब भीत,
तप ऋषिराजन बीतन चीत।
जुरे ऋषिवृन्द सु अर्बुद आय,
जहां ऋषि वोथ बसै सत भाय॥ ४५॥

अनुक्रम से तीन वीरों के द्वारा भी जब शत्रुपराजय न हु
तो चौथी बार में ऋषियों ने यज्ञ पुरुष की आराधना

दिया। रावजी ने भी वैसा ही कर शिव को प्रसन्न किया तब ऋषि ने पुनः आज्ञा की कि रावजी तुम यहां एक गढ़ भी निर्माण करो। अस्तु रावजी ने उसी समय अपने मित्र मंत्री और कारीगरों को बुला कर संवत् १११० वैशाख सुदि ३ शनिवार को पांच घटी सूर्योदे में रणथम्भगढ़ की नींव डाली उसी के उपस्थ में एक रमणीक नगर भी बसाया।

यथाः—

ग्यारासे दश अग्गरो, सम्वत् माधव मास।
शुक्ल तीन शनिवार के, चंद्ररिक्ष अनयास ॥ ८८ ॥
थूणी गढ़ रणथम्भ की, रोपी पदमप्रताप।
सुमरि गणेश गिरीश को, नगर बसाया आप ॥८६॥

९०—कवि ने रणथंभोरगढ़ की नींव १११० के साल में लगी लिखा है। परंतु भारत के प्राचीन राजवंश प्रथम भाग में लिखा है कि वीसलदेव के पुत्र पृथ्वीराज (प्रथम) ने प्रसिद्ध साधु अभयदेव (मलधारी) के उपदेश से रणथंभोरपुर में जैन मंदिर बनवा कर उस पर सुवर्ण का कलश चढ़वाया था। इसी से पता चलता है कि रणथंभोरगढ़ जैतराव के भी बहुत ही पहले का बना हुआ है। शायद जैतराव ने इसका अन्तर कोट बनवाया हो। चारण और भाटों का कहना है कि इस किल्ले की मूल

पुनः दीक्षित कर के चार नवीन क्षत्रिय वंशों की उत्पत्ति की थी जिन्होंने ब्राह्मणय धर्म की रक्षा का भार अपने ऊपर लिया है। ये ४ वंश भारत इतिहास में परमार १ सोलंकी २ चौहान ३ और पड़िहार ४ नाम से प्रसिद्ध हैं। देखो भारतवर्ष का सच्चा इतिहास परिच्छेद १८। इतिहासतिमिर नाशक भाग १ राजस्थान का इतिहास भाग २ इसी प्राकर यज्ञ कुंड से उत्पन्न चाहुआनजी के वंश में बहुत शताब्दियों के बाद ! जैतराव चाहुआन हुए।

एक समय जैतराव जंगल में शिकार खेलने गये। वहां उन्होंने एक बलवान वाराह के पीछे घोड़ा दोड़ाया। बहुत ही दूर निकल जाने पर गंभीर बन में वाराह तो अदृश्य होगया और साथियों से छूट कर अकेले रावजी चकित चित्त उस वन में फिरने लगे। कुछ दूर जाने पर उन्हें एक ऋषि का आश्रम देख पड़ा तो वहां जाकर वह देखते क्या हैं कि परम रमणीय पर्णकुटी में कुशासन पर बैठे हुए पद्म ऋषिजी ध्यान में मग्न हैं। रावजी ने उनके निकट जाकर पादर्पण प्रणाम किया और उनके दर्शनों से अपने को कृतार्थ जान कर वे उनकी स्तुति करने लगे। निदान तब ऋषि ने भी प्रसन्न होकर रावजी को आशीर्वाद दिया और कुछ दिवस पर्यन्त उसी स्थान पर रख कर उन्हें शिवार्चन करने का उपदेश

दिया। रावजी ने भी वैसा ही कर शिव को प्रसन्न किया तब ऋषि ने पुनः आज्ञा की कि रावजी तुम यहां एक गढ़ भी निर्माण करो। अस्तु रावजी ने उसी समय अपने मित्र मंत्री और कारीगरों को बुला कर संवत् १११० वैशाख सुदि ३ शनिवार को पांच घटी सूर्योदे में रणथम्भगढ़ की नींव डाली उसी के उपस्थ में एक रमणीक नगर भी बसाया।

यथाः—

ग्यारासै दश अग्गरो, सम्वत् माधव मास।
शुक्ल तीन शनिवार के, चंद्ररिक्ष अनयास ॥८८॥
थूणी गढ़ रणथम्भ की, रोपी पदमप्रताप।
सुमरि गणेश गिरीश को, नंगर बसाया आप ॥८९॥

९०—कवि ने रणथंभोरगढ़ की नींव १११० के साल में लगी लिखा है। परंतु भारत के प्राचीन राजवंश प्रथम भाग में लिखा है कि वीसलदेव के पुत्र पृथ्वीराज (प्रथम) ने प्रसिद्ध साधु अभयदेव (मलधारी) के उपदेश से रणथंभोरपुर में जैन मंदिर बनवा कर उस पर सुवर्ण का कलश चढ़वाया था। इसी से पता चलता है कि रणथंभोरगढ़ जैतराव के भी बहुत ही पहेली का बना हुआ है। शायद जैतराव ने इसका अन्तर कोट बनवाया हो। चारण और भाटों का कहना है कि इस किल्ले की मूल

निर्माता भारत की प्राचीन टाटू क्षत्रिय जाति है। टाटु लोग बड़े ही बहादुर साहसिक और महा दानेश्वरी होते थे। बड़े २ राजे महाराजे और बहादसाहों को तथा उन्हीं की राजधानियों को लूट कर इस विषम दुर्ग में आकर असंख्य कोटी द्रव्य का उपभोग करते थे। जब कोई राजा अपार फोजें लेकर भी इन्हीं पर चढ़ाई करता था तो पराक्रमी टाटू उन सबों को मार भगा देते थे। भाटों की ख्यातों में लिखा है कि:—

राजां लूटैं फोजां मोडे, नित उठि करे पौबारा।
दो नगर टाटुओं के, किला रणत भंवरगढ टटवारा॥१॥
टाटू ठाकुर ठेठ के, आडु पीढी राज।
पीपलदं हाथी दियो, मद झरतो गजराज॥२॥ इत्यादि।

टाटुओं को पराजय करने वास्ते चौहानों ने बहुत ही उपाय किये, परंतु सर्व व्यर्थ गये। भावी वसात् जब रणथंभोर के टाटु राजा जुहारसिंह की कन्या का विवाह सम्बन्ध सारंगदेव चौहान से हो गया तो असंख्य चौहान वीरों ने बरात के बहाने रणथंभोरगढ़ में आकर सर्व टाटुओं का संहार कर दिया। और किल्ले को अपनी राजधानी बना लिया है। महाराज जैतरावजी ने ४ दरों के नाके पर तो ४ गांव बसा दिये और ८४ घाटियों पर चौकियें बैठादी थी। यथा—

चारिं दरा चिहुं ग्राम वसि,घाटी चौराशी जु ओर ।
चहुं ओर पर्वत अगम, विच रणथंभ सु जोर ॥ ६७ ॥

कुंवालजी के शिला लेख में लिखा है कि जैतसी की तलवार नरवर और ग्वालेर के कछवाओं की कठोर पीठ पर कुठार का काम करती थी। और उसने राजा जैसिंह को भी तपाया था। रणथंभोरगढ़ में इसने अपने और गुरु के नाम से अगाध जल वाले जैतसागर और पद्माला नाम के दो तालाब बनवाये थे।

उस पर्वतावेष्टित प्रच्छन्न एवं सुदृढ़ दुर्ग की रम्यभूमि पद्मऋषि ने रावजी से अपने रहने के लिये मांग लिया और उसीमें रह कर वे तप करने लगे। तो उस समय इन्द्रासन भी डगमगाने लगा। उस भीरु हृदय इन्द्र ने अपने श्री भ्रष्ट होने के भय से भयभीत होकर पद्म ऋषि को तप से भ्रष्ट करने लिये षड् ऋतुओं सहित कामदेव को रणथंभोरगढ़ में पदमऋषि के पास भेजा। वहां जाकर कामदेव ने छै ऋतुओं का विस्तार किया और उर्वसी ने आकर मनोहर नाटक किया तो ऋषि पलक खोल कर क्या देखते हैं कि एक चन्द्रमुखी मृगलोचनी गयन्द गामिनी नवयोवना सन्मुख खड़ी हुई मुनि की ओर सकटाक्ष देख रही है। यह देख पद्म ऋषि के शरीर से शांति और तप इस प्रकार विदा हो गये जैसे

निर्माता भारत की प्राचीन टाटू क्षत्रिय जाति है। टाटु लोग बड़े ही बहादुर साहसिक और महा दानेश्वरी होते थे। बड़े २ राजे महाराजे और बादशाहों को तथा उन्हीं की राजधानियों को लूट कर इस विषम दुर्ग में आकर असंख्य कोटी द्रव्य का उपभोग करते थे। जब कोई राजा अपार फौजें लेकर भी इन्हीं पर चढ़ाई करता था तो पराक्रमी टाटू उन सभों को मार भगा देते थे। भाटों की ख्यातों में लिखा है कि:—

राजां लूटें फोजां मोडे, नित उठि करे पौबारा।
दो नगर टाटुओं के, किला रणत भंवरगढ टट्टवारा॥१॥
टाटू ठाकुर ठेठ के, आदु पीढी राज।
पीपलदे हाथी दियो, मद झरतो गजराज॥२॥ इत्यादि।

टाटुओं को पराजय करने वास्ते चौहानों ने बहुत ही उपाय किये, परंतु सर्व व्यर्थ गये। भावी वसात् जब रणथंभोर के टाटु राजा जुहारसिंह की कन्या का विवाह सम्बन्ध सारंगदेव चौहान से हो गया तो असंख्य चौहान वीरों ने बरात के बहाने रणथंभोरगढ़ में आकर सर्व टाटुओं का संहार कर दिया। और किल्ले को अपनी राजधानी बना लिया है। महाराज बैवरावजी ने ४ दरों के नाके पर तो ४ गांव बसा दिये और ८४ घाटियों पर चौकियें बैठादी थी। यथा—

से रावहम्मीर दो भुजाओं से महिमाशाह और गमरु तथा चरणों से चित्ररुपा (मरहटी बेगम) का अवतार हुआ। गर्भ के महत्व से महाराजा जैतसिंह की पट्टरानी हीरादे को कभी २ अनार्य म्लेच्छों के रक्त से स्नान करने की इच्छा होती थी। देश द्रोहियों को मार कर जैतराव उसकी अभिलापाओं को पूर्ण करते थे। अन्त में संवत् ११४१ कार्तिक शु० १२ रविवार को उत्तरा भाद्र पद नक्षत्र में रणथभोरगढ़ के चाहुमान जैतराव के हम्मीर नामक पुत्र जन्मा। पुत्र का प्रफुलित मुख देख कर जैतराव के आनन्द का पार न रहा उन्होंने ज्योतिषियों को बुला कर लग्न कुंडली बनवाई। सर्व बुर्जों पर घड़ा घड़ तोपें छोड़ी गई। जैलखाना खोल दिया गया। सहस्त्रों ब्राह्मण भिक्षुक और बंदीजनों को यथा योग्य सम्मान सहित अन्नदान गोदान हेमदानादि देकर संतुष्ट किया। जिस दिन हम्मीर का जन्म हुवा उसी समय गजनी में शहाबुद्दीन के घर अलाउद्दान तथा सोभनपुर के मीना राजा के घर महिमा शाह का जन्म हुआ और देवगढ़ के राजा रामदेव के घर विचित्र रुपा का जन्म हुआ था।

यथाः—

ससिवेद रुद्र संवत गिनो, अंगपभृपित शाक।
दक्षिण अयन सु सरद ऋतु उपजे गये न नाक ॥१७५॥

तुषार शोषित वृक्ष सुकोमल पल्लवों को त्याग देते हैं। एवं जिस प्रकार फलों के लगते ही वृक्षगण सूखे पुष्पों का अनादर कर देते हैं। इस प्रकार कामातुर रहो पद्म ऋषि समाधि छोड़ सुन्दरी को आलिंगन करने को उत्सुक हो उठे। उधर उस रमणी ने भी ऋषि के मनोगत भाव जान कर उनका हाथ पकड़ लिया और दोनों बहुत कालतक आनन्द से काम क्रीड़ा करने लगे।

कवि लिखते हैं किः—

का नही पावक जरि सके। का नही सिंधु समाय॥
का नकरे अबला प्रबल। किहिं जग काल न खाय॥ १५९॥
कवि लाखन अबला कहत। सबला जोध कहंत॥
दुबला तन में प्रगट जिहिं। मोहत संत असंत॥ १६०॥

अधिक समय व्यतीत होने पर सुन्दरी स्वर्ग लोक चली गई तब पद्मऋषि की मोह निद्रा खुली और वे मन ही मन में पश्चाताप करके विलाप करने लगे। हाय मैं कैसा दुर्बुद्धि हूं कि क्षणिक सुख के लिये मैंने अपना सर्वनाश कर लिया। हाय मैं तप से भी गया और भोग से भी गया। अब मैं इस शरीर को रख कर क्या करूं। इस प्रकार शोकातुर होकर मुनि ने एक वेदिका रची और उसमें अपने शरीर के पांच खंड करके होम कर दिए। पद्मऋषि के मस्तक से अलाउद्दीन बादशाह वक्षस्थ

२६ मोथा ३० भूपतवाल ३१ मटनेरा ३२ भूटवार ३३ मड ३४ मट ३५ भूतेडिया ३६ माटी ३७ माटिया ३८ माट ३९ मीमावत ४० मामेसणा ४१ मामणोसा ४२ मामरवाल ४३ मावरवाल ४४ भारद्वाज ४५ मेड-वाल ४६ मादाणी ४७ मंगलोत ४८ मरपट ४९ मरडी ५० मसर ५१ मिसर ५२ मकवाणा ५३ महाभद्र ५४ मगदा ५५ माघघ ५६ मालु ५७ मालव ५८ मेहना ५९ मोहनोत्त ६० मेर ६१ मोहीवाल ६३ मंगोल ६४ मोहडा ६५ मल्लावत ६६ मांगलीया ६७ महर ६८ मोर ६९ मोरण ७० मारण ७१ मोरडा ७२ मोरिया ७३ मद्दिया ७४ मुहाला ७५ मकवाणा ७६ मीमरोट ७७ मट ७८ मरोठी ७९ मरहठी ८० मारु ८१ मालाणी ८२ मुंगरवाल ८३ महाजन ८४ महातियाणा ८५ मेनाला ८६ मूंघडा ८७ महीपाला ८८ मौगेणा ८९ मोठीस ९० मांरल ९१ मियाल ९२ मडावरिया ९३ मारग ९४ माडिया ९५ मादडा ९६ मातसरा ९७ मग ९८ मलधार ९९ मधूकरा १०० मोटा १०१ मोगरा १०२ मुकट १०३ मौंघा १०४ मोलीसरा १०५ मोकरडा १०६ माथुर १०७ माणक १०८ मिहीर १०९ मरदावत ११० मह-सरा १११ मीराणा ११२ मोरजाल ११३ मच्छीया ११४ मेव ११५ मेव ११६ मांचीवाल ११७ मेद ११८

गजनी गोरी शाह सुत, भय अलावदी साथ।
ताही दिन रणथंभगढ जन्म हम्मीसुआय ॥१७३॥
यह हमीर नृप जैतके, अमर करण आचार।
मीणा भारु बन्धु दोउ भई नारी तिहि वार ॥१७७॥

मीणा ये प्राचीन राजपुतों की शाखा है। कर्नलटाड साहब लिखते हैं कि यह जाति समस्त राजपुतों में पुराणी और अति श्रेष्ठ हैं। प्राचीन समय में जमना से लेकर अजमेर तक इन्हों ही का राज्य था। राजस्थान के इतिहास में इनके १२ पाल और ५२०० गोत्र लिखे हैं। १२ पालों के नाम ये हैं चौहान १ परमार २ गहलोत ३ चन्देल ४ कच्छावह ५ यादव ६ तँवर ७ पडिहार ८ निरमाण ९ गौड़ १० बड गुजर ११ और सोलंकी १२ पालपदवी राजपुत्रों में गौरव सूचक मानी जाती है॥ इन्हींकी विशेष हकीगत आगे लिखुंगा। ५२०० गोत्रों मे से १३५ गोत्र तो यहां लिख देता हूं फिर आगे॥ भारु १ भूदेव २ मखंड ३ भूंजा ४ मद्रावत ५ मड़गतिया ६ भोभरा भोवरा ७ भूंडा ८ भूंचा ९ मामडा १० मावचड़ा ११ मौसा १२ मोलावत १३ मैंसा १४ मंडशाली १५ भूलण १६ भूरा १७ भूरद १८ भूसावच्या १९ भांगड २० भूवाल २१ मील २२ मगत २३ मंडारी २४ मैंसोटा २५ मैसरोडा २६ मद्रासवाल २७ मद्वंगा २८ भूवर

वह सपरिवार इसलाम धर्म में दीक्षित हो गये थे। दक्षिण और गुजरात की लड़ाइयों में इनकी बहादुरी और नीति निपुणता देखकर अलाउद्दीन बादशाह ने अपने सेनापति पद पर नियुक्त किया। एक समय बसन्त ऋतु के आरंभ में अलाउद्दीन ने सहस्रों सैनिक और अमीर उमराओं तथा बेगमों को साथ लेकर शिकार के लिये यात्रा की। निदान उसने एक परम रमणीक बन में तंबू लगवा दिये और इतस्ततः आखेट करके जङ्गली जंतुओं का नाश करने लगा। इसी प्रकार जब बसंत का अन्त होकर ग्रीष्म के आताप से भूमि उत्तापित हो रही थी। अलाउद्दीन सब सरदारों सहित शिकार खेलने चला गया। इधर बेगम भी अपनी सखी सहेली और खोजाओं को लेकर एक कमलवन संम्पन्न निर्मल सरोवर पर जाकर जलक्रीड़ा करने लगी। दैवयोग से उसी समय सहसा वायु का वेग बढ़ते २ इतना प्रचण्ड हो गया कि बड़े २ मेघस्पर्शी वृक्ष भी टूट २ कर गिरने लगे। धूली के आकाश में अच्छादित हो जाने के कारण घोर अन्धकार छा गया। इस आकस्मिक घटना से भयभीत होकर सभी लोग तीन तेरह हो अपने २ प्राणों की रक्षा के लिये जहां तहां भागने लगे। जलक्रीड़ा करती हुई बेगमों में से रुप विचित्रा नामक बेगम क्योंकि स्वरुप और गुणों में सब बेगमों से

मेवाती ११९ मलार १२० मलारणिया १२१ महार १२२ मुराव १२३ मूल गौड़ १२४ महावर १२५ मालवी १२६ मैथिल १२७ मेप १२८ मुसारा १२९ मटरवाल १३० माली १३१ मझवारि १३२ महीर १३३ महीमावत १३४ महीराणा १३५ आदि ॥ विद्वान लोक इन्होंकी मूल उत्पत्ती मीनावतार भगवान से मानते हैं। राजस्थान के इतिहास में लिखा है कि उस समय हिन्दू और ग्रीक जाति में कोई भेद न था सब मिल कर एक साथ ही जीवनयात्रा निर्वाह करते थे, कारण कि आदिनाथ आदिश्वर असिरिश वाघेश वेकस मनुमीनेश और नू यह ८ एक ही मानव पिता के भिन्न भिन्न ८ नाम हैं टोड़रा. मा. १ अ० १॥ अभि लाखसागर में लिखा है कि पहिला अवतार मीन हुआ, उसीको मच्छ कहते हैं। चैत्र कृष्णा पंचमी को राजा मनु के कमण्डल से उत्पन्न होकर शंखासुर दैत्य को मारा और सात लाख पैंतीस हजार वर्षों तक सम्पूर्ण पृथ्वी का राज्य किया, चारों वेद जो चोर ले गया था सो प्रगट किया। अभिला० सा० तरंगह लहरी १ महीमाशाह बड़े विद्वान सच्चरित्र शांत प्रकृति नम्र सहिष्णु मानी उदार और धार्मिक पुरुष थे और ऐसे वीर थे कि हिन्दू स्थान में कोई उनकी जोड़ न था। परन्तु मुसलमान पादशाहों के पड़ोस में रहने के कारण

वह सपरिवार इसलाम धर्म में दीक्षित हो गये थे। दक्षिण और गुजरात की लड़ाइयों में इनकी बहादुरी और नीति निपुणता देखकर अलाउद्दीन बादशाह ने अपने सेनापति पद पर नियुक्त किया। एक समय बसन्त ऋतु के आरंभ में अलाउद्दीन ने सहस्रों सैनिक और अमीर उमराओं तथा बेगमों को साथ लेकर शिकार के लिये यात्रा की। निदान उसने एक परम रमणीक वन में तंबू लगवा दिये और इतस्ततः आखेट करके जङ्गली जंतुओं का नाश करने लगा। इसी प्रकार जब बसंत का अन्त होकर ग्रीष्म के आताप से भूमि उत्तापित हो रही थी। अलाउद्दीन सब सरदारों सहित शिकार खेलने चला गया। इधर बेगम भी अपनी सखी सहेली और खोजाओं को लेकर एक कमलवन संम्पन्न निर्मल सरोवर पर जाकर जलक्रीड़ा करने लगी। देवयोग से उसी समय सहसा वायु का वेग बढ़ते २ इतना प्रचण्ड हो गया कि बड़े २ मेघस्पर्शी वृक्ष भी टूट २ कर गिरने लगे। धूली के आकाश में अच्छादित हो जाने के कारण घोर अन्धकार छा गया। इस आकस्मिक घटना से भयभीत होकर सभी लोग तीन तेरह हो अपने २ प्राणों की रक्षा के लिये जहां तहां भागने लगे। जलक्रीड़ा करती हुई बेगमों में से रुप विचित्रा नामक बेगम क्योंकि स्वरुप और गुणों में सब बेगमों से

थेष्ठ थी भटकती हुई एक ऐसे निर्जन प्रान्त में जा पहुंची
जहां हिंसक जन्तुओं के भीषण नाद के सिवाय अन्य
शब्द ही न सुन पड़ता था। जिस समय रुप विचित्रा भय
एवं शीत के कारण थर २ कांपती हुई प्राण रक्षा के
लिये ईश्वर का स्मरण कर रही थी दैवात उसी समय
महिमाशाह वहां आ पहुंचे। निदान जब उसने उसको
शिविर में लाने के लिये घोड़े पर बैठाली तब महिमा
शाह को धन्यवाद देकर कहा कि इस समय मेरा शरीर
शीत से अधिक व्याकुल होरहा है तू आलिंगन से मुझे
संतुष्ट कर। महिमाशाह ने उत्तर दिया कि एक तो मैं
किसी भी पराई स्त्री को अपनी बहिनवत मानता हूं, तिस
पर आप मेरे स्वामी की स्त्री है इसलिये आप मेरी मात
के समान है मैं इस अकर्तव्य एवं पाप कर्म करने को कदापि
सहमत नहीं हूं। तब रुप विचित्रा ने हंस कर पुनः उत्त
दिया कि क्या आप यह नहीं जानते कि, अपने सुख
मांगती हुई स्त्री को रति दान न देना भी तो एक ऐस
पाप है कि जिसका कोई प्राय चित ही नहीं है, और
वीर युवक तेरे रुप और गुणों पर मोहित हुआ मेरा म
तेरे लिये बहुत दिनों से व्याकुल था। भाग्यवस आ
यह संयोग प्राप्त हुआ है। आदि बेगम की ऐसी २ बा
सुन कर महिमाशाह का मन भी डोल उठा। दोन्ह

उने घोड़े से उतर पड़े ॥ घोड़े को वृक्ष के बान्ध दिया, हथियार खोल कर पास रख लिये और वहीं उस स्त्री की मनोकामना पूर्ण करने लगा। उसी समय एक गर्जता हुआ विकराल सिंह साम्हने आता देख पड़ा उसे देख कर चित्रि रुपा थर २ कांपने लगी किंतु महिमाशाह ने कहा कि, भय मत करो, कोई हानि नहीं है। कमान उठा कर महिमाशाह ने एक ही बाण से नाहरा सिंह को मार गेरा। निदान उपद्रव के शान्त होने पर सहस्त्रों मनुष्य इधर उधर बेगम की खोज में दौड़े और उसको शिविर में लिवा लगये। रुप विचित्रा को पाकर अलाउद्दीन अत्यन्त प्रसन्न हुआ। जब ग्रीष्म का अन्त होगया और पावस की घनघार घटाएँ घिर २ कर आने लगी तब अलाउद्दीन लश्कर सहित दिल्ली आगये।

अब रावहम्मीर की तरफ आइय। हम्मीर महाकाव्य में लिखा है कि जब हमीर सर्व विद्याओं में प्रवीण हो गया तो जैत्र । ने उसको राज्य भार देकर आत्म कल्याण किया। बाद में ६ गुण और ३ शक्तियों से संपन्न हो हम्मीर दिग्विजय करते हुए तीर्थराज आबू पर आए उन्होंने वहां महा मंत्री वस्तुपाल के साथ भगवान श्रीऋषभदेव का पूजन और स्तुति पाठ किया। क्योंकि वह लोक विरोध पृथक भेद भाव नहीं रखते।

श्रेष्ठ थी भटकती हुई एक ऐसे निर्जन प्रान्त में जा पहुंची
जहां हिंसक जन्तुओं के भीषण नाद के सिवाय अन्य
शब्द ही न सुन पड़ता था। जिस समय रुप विचित्रा भय
एवं शीत के कारण थर २ कांपती हुई प्राण रक्षा के
लिये ईश्वर का स्मरण कर रही थी दैवात उसी समय
महिमाशाह वहां आ पहुंचे। निदान जब उसने उसको
शिविर में लाने के लिये घोड़े पर बैठाली तब महिमा
शाह को धन्यवाद देकर कहा कि इस समय मेरा शरीर
शीत से अधिक व्याकुल होरहा है तू आलिंगन से मुझे
संतुष्ट कर। महिमाशाह ने उत्तर दिया कि एक तो मैं
किसी भी पराई स्त्री को अपनी बहिनवत मानता हूं. तिस
पर आप मेरे स्वामी की स्त्री है इसलिये आप मेरी माता
के समान है मैं इस अकर्तव्य एवं पाप कर्म करने को कदापि
सहमत नहीं हूं। तब रुप विचित्रा ने हस कर पुनः उत्तर
दिया कि क्या आप यह नहीं जानते कि, अपने मुख से
मांगती हुई स्त्री को रति दान न देना भी तो एक ऐसा
पाप है कि जिसका कोइ प्रायश्चित ही नहीं है, और हे
वीर युवक तेरे रुप और गुणों पर मोहित हुआ मेरा मन
तेरे लिये बहुत दिनों से व्याकुल था। भाग्यवश आज
यह संयोग प्राप्त हुआ है। आदि बेगम की ऐसी २ बातें
सुन कर महिमाशाह का मन भी डोल उठा। दोनों

लखमणराज चौहान से तमाम अनार्य थर थर कांपते थे, परन्तु आज उन्हीं की ही सन्तानों की यह दशा है कि अपनी जान का भी रक्षण नहीं कर सकते। म्लेच्छों से तो ये लोग इतने डरते हैं कि चाहे वह हिन्दुओं को मारदें, मंदिर मूर्त्तियां तोड़दें, स्त्रियों का सतीत्व धर्म नष्ट करदें, परन्तु घर से बहार नहीं निकलते। दया और दान भी उठता जारहा है। इन्हीं की थोड़ी ही पीढ़ियों में पहली १ राव बीजलजी हुए हैं। दरगाज दश २ मोहरों का दान करते थे। प्रति दिन बारह मण गेहूं का अन्न दान होता था। गरीबों को वस्त्र और गौओं को घास जल आदि हजारों प्रकार के पुन्य करते थे परन्तु आज तो इससे विपरीत देखा जाता है। कोई २ तो ऐसे भी सुने जाते हैं कि अपने खेत खलिया नादि में औरों के पशुओं के शींग और पैर आदि तोड़ देते हैं। अपने पशुओं को मुसलमानों को बेच देते हैं। तांगों में बैठ के बलदों को दौड़ा कर मार देते हैं बेल चाथी करते कराते हैं। क्या ये कृत्य जनिया का कर्म हो शक्ता है। जैन में तो दया और मैत्री भाव की मुख्यता है। बीजलरावजी के साथ ४ सतिएं हुई हैं क्या आज भी किसी स्त्री का पति के साथ इतना प्रेम है। मुझे सक है कि माहमुदियों के समान इन्हों में भी तिलाक की रिस्म कहीं जारी न हो जाय॥

१ महाराव हम्मीर को हम कोटिशः धन्यवाद देते हैं कि जिन्होंके स्वपरमत का मिथ्याग्रह बिलकुल ही नहीं था। आज उन्होंकी ही सन्तान पवित्र जैनधर्म से अनभिज्ञ होने के कारण नफरत कर रही है। २० विरुदधारी १ चिहुंगढ़ा सरदार के पास १ भाई हमारी १ किताब लेकर गया तो उन्होंने फरमाया कि यदि मेरा शिर धड़ से कटजाय तोभी मैं जैन की किताब को न पढ़ूं। अफसोस २ साहब! आपका शिर आपके धड़ पर सदा अमर रहे। जैनधर्म ऐसा नहीं है कि जिस पर किसी को घृणा पैदा होती हो। सायत जैन नामधारक मीयण पंथी मुंह बन्धों को देख कर आपका ऐसा ख्याल हुआ है सो गल्त है। कारण उन्हींमें तो जैनधर्म की गन्ध भी नहीं है। जैनों का सिद्धान्त है अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य, त्याग परोपकार, देश और जाति सेवादि। उखलाणा के सर्दारों को भी मैं जैनी नहीं कहसक्ता कारण अब वह भी अपनी पवित्र क्षत्रिय जाति और जैन धर्म से प्राय पतित होते जा रहे हैं। इन्हींको अपनी क्षत्रिय जाति देश और धर्म का बिल्कुल ही अभिमान नहीं रहा है। इन्हीं की कुलाख्यात में लिखा है कि—

बागडखंट के बादशाह। लखमणराज चौहान।
धूज [illegible] आगरा कम्पे मुगल पठान ॥ १ ॥

लखमणराज चौहान से तमाम अनार्य थर थर कांपते थे, परन्तु आज उन्हीं की ही सन्तानों की यह दशा है कि अपनी जान का भी रक्षण नहीं कर सकते। म्लेच्छों से तो ये लोग इतने डरते हैं कि चाहे वह हिन्दुओं को मारदें, मंदिर मूर्त्तियां तोड़दें, स्त्रियों का सतीत्व धर्म नष्ट करदें, परन्तु घर से बहार नहीं निकलते। दया और दान भी उठता जारहा है। इन्हीं की थोड़ी ही पीढ़ियों में पहली १ राव बीजलजी हुए हैं। दररोज दश २ मोहरों का दान करते थे। प्रति दिन बारह मण गेहूं का अन्न दान होता था। गरीबों को वस्त्र और गौओं को घास जल आदि हजारों प्रकार के पुन्य करते थे परन्तु आज तो इससे विपरीत देखा जाता है। कोई २ तो ऐसे भी सुने जाते हैं कि अपने खेत खलिया नादि में औरों के पशुओं के शींग और पैर आदि तोड़ देते हैं। अपने पशुओं को मुसलमानों को बेच देते हैं। तांगों में बैठ के बलदों को दौड़ा कर मार देते हैं बैल बाधी करते कराते हैं। क्या ये कृत्य जैनियों का कर्मा हो शक्ता है। जैन में तो दया और मैत्री भाव की मुख्यता है। बजिलरावजी के साथ ५ सतिएं हुई हैं क्या आज भी किसी स्त्री का पति के साथ इतना प्रेम है। मुझे सक है कि माहमुदियों के समान इन्हीं में भी तिलाक की रिस्म कहीं जारी न हो जाय॥

विवाहादि में नाच कूद करना और बुरा गीत गाना क्या कम शर्म की बात है । चौहानों का धर्म और कुल मर्यादा का तो इन्हीं में प्राय लोप ही होता जारहा है और वर्ण शंकरता, मंदबुद्धिता, कायरता आदि बढ़ कर अधोपात हो रहा है । श्रीमद् भागवत् गीता प्रथम अध्याय में ठीक लिखा है कि ।

कुलक्षये प्रणश्यान्ति कुल धर्माः सनातनाः ॥
धर्मनष्टे कुलंकृत्स्न मधर्मोऽ भिभवत्युत ॥ ३९ ॥
अधर्माभिभवात्कृष्ण प्रदुष्यंतिकुलःस्त्रियः ॥
स्त्रीपुदुष्टासु वार्ष्णेय जायते वर्ण शंकारः ॥ ४० ॥
संकारो नर का यैव कुलघ्नानां कुलस्यच ॥
पतंति पितरो ह्येषां । लुप्त पिंडोदक क्रियाः ॥४१॥
दोषैरेतः कुलघ्नानां । वर्ण शंकर कार कैः ॥
उत्सादंने जाति धर्माः । कुल धर्माश्च शाश्वताः ॥४२
उत्सन्न कुल धर्माणां मनुष्याण्णां जनार्दन ॥ नर के नियतं वासो । भवतीत्यनु शुश्रुम ॥ ४३ ॥ भावार्थइन्हों का यह है कि सर्वोत्तम प्राचीन कुल के क्षय होने पर कुल परंपरा गत शुद्ध धर्म का भी नाश हो जाता है और धर्म के नष्ट होने पर संपूर्ण कुल में अधर्म फैल जाता है । अधर्म के फैलने पर कुल स्त्रियां दुष्ट हो जाती है और स्त्रियों के दुष्ट होने पर कुल में वर्ण संकर संतान पैदा होती है.और

वर्ण संकर पुत्र उत्पन्न होने पर पिंड दान श्राद्ध जलतर्पण आदि क्रिया लोप हो जाती है। शुद्ध सनातन क्रियाओं के लोप होने पर पितरों का भी नरक पात होता है। इस वास्ते वर्ण संकर प्रजा, जाति, कुल और धर्म को नष्ट कर खुद भी नरक में ही पड़ती है॥ अपने पूर्वजों की शुद्ध परंपराओं का पालन करना इसके समान तो कोई दूसरा धर्म नहीं है और उन्हों का ही नाम लोप कर पतित हो जाना इसके सिवाय दूसरा महान् पाप नहीं हैं॥

६२ आज से १०० वर्ष पहले के ही महान् पुरुषों को देखिये रंगराज बारहट की पोथी में लिखा है किः—गायडमल जग गाजियो। गढपति किसन राज मंगतांरा काला दूरा हरे। काढे अमृत वेन। कर्चांडियां जवाब कर डाकेरे। चौहान वंश में जागियो जोरावर में मांगियो भी ही लियो। साहसरा बचन कहे किसनेश भगवंत राज भला ही दीया॥ १॥

६३ पचास वरस पेहली वालों को भी देखिये। लिखा है कि
साल दुसाला पोवडी रणमल राज पावे।
वजीर दौला के राज में भूखों को अन्न खुवावे॥
कै वन्धीजनों के बन्ध छुड़ावे॥ १॥

मोहनमूर्त्ति राव मोहनराज को तो मैंने भी अपने नेत्रों से देखा है। वह बड़े ही दयालु थे बहुत ही द्रव्य धर्म कार्य्य में खर्च कर अपने गांव में साधु संतों का चौमासा करावे थे।

विवाहादि में नाच कूद करना और बुरा गीत गाना क्या कम शर्म की बात है। चौहानों का धर्म और कुल मर्यादा का तो इन्हों में प्राय लोप ही होता जारहा है और वर्ण शंकरता, मंदबुद्धिता, कायरता आदि बढ़ कर अधोपात हो रहा है। श्रीमद् भागवत् गीता प्रथम अध्याय में ठीक लिखा है कि।

कुलक्षये प्रणश्यान्ति कुल धर्माः सनातनाः ॥
धर्मेनष्टे कुलंकृत्स्न मधर्मोऽ भिभवत्युत ॥ ३९ ॥
अधर्माभिभवात्कृष्ण प्रदुष्यंतिकुलःस्त्रियः ॥
स्त्रीपुदुष्टासु वार्ष्णेय जायते वर्ण शंकारः ॥ ४० ॥
संकारो नर का यैव कुलघ्नानां कुलस्यच ॥
पतंति पितरो ह्येषां । लुप्त पिंडोदक क्रियाः ॥४१॥
दोषैरेतैः कुलघ्नानां । वर्ण शंकर कार कैः ॥
उत्साद्यंते जाति धर्माः । कुल धर्माश्च शाश्वताः ॥४२
उत्सन्न कुल धर्माणां मनुष्याणां जनार्दन ॥ नर के नियतं वासो । भवतीत्यनु शुश्रुम ॥ ४३ ॥ भावार्थ इन्हों का यह है कि सर्वोत्तम प्राचीन कुल के क्षय होने पर कुल परंपरा गत शुद्ध धर्म का भी नाश हो जाता है और धर्म के नष्ट होने पर संपूर्ण कुल में अधर्म फैल जाता है। अधर्म के फैलने पर कुल स्त्रियां दुष्ट हो जाती है और स्त्रियों के दुष्ट होने पर कुल में वर्ण संकर संतान पैदा होती है और

वर्ण संकर पुत्र उत्पन्न होने पर पिंड दान श्राद्ध जलतर्पण आदि क्रिया लोप हो जाती है। शुद्ध सनातन क्रियाओं के लोप होने पर पितरों का भी नरक पात होता है। इस वास्ते वर्ण संकर प्रजा, जाति, कुल और धर्म को नष्ट कर खुद भी नरक में ही पड़ती है॥ अपने पूर्वजों की शुद्ध परंपराओं का पालन करना इसके समान तो कोई दूसरा धर्म नहीं है और उन्हों का ही नाम लोप कर पतित हो जाना इसके सिवाय दूसरा महान् पाप नहीं हैं॥

९२ आज से १०० वर्ष पहले के ही महान् पुरुषों को देखिये रंगराज बारहट की पोथी में लिखा है कि:—गायडमल जग गाजियो। गढपति किसन राज मंगतांरा काला दूरा हरे। काढै अमृत वैन। कचेडियां जवाब कर डाकेर। चौहान वंश में जागियां जोरावर में मांगिया सो ही लिया। साहसरा वचन कहै किसनश भगवंत राज भला ही दीया॥ १॥

९३ पचास वरस पेहली वालों को भी देखिये। लिखा है कि

साल दुसाला पावडी रणमल राज पावै।
वजीर दौला के राज में भूखो को अन्न खुवावै॥
कै वन्धीजनों के वन्ध छुडावे॥ १॥

मोहनमूर्त्ति राव मोहनराज को तो मैंने भी अपने नेत्रों से देखा है। वह बड़े ही दयालु थे बहुत ही द्रव्य धर्म कार्य्य में खर्च कर अपने गांव में साधु संतों का चौमासा कराते थे।

दूसरे गांवों में भी जाकर अपनी तर्फ से प्रभावना बांटते थे। गरीब लोगों की बहुत ही सहायता करते थे ; वर्तमान नवाब साहब (अबराहीम) भी उन्हीं को आते हुए देख अपनी बग्गी रोक लेते थे और दो घडी तक बातें करते रहतेथे परन्तु आज उन्हीं के संतानों की यह दशा हो रही है कि जिन्हों को कोई भी नहीं पूछता। सब हकीगत लिखने को कलम नहीं चलती। सात्विक चात्र धर्म को छोड़ कर इन्होंने निर्विवेकता से अपने पूवजों की मान मर्यादा को सर्वथा नष्ट कर दी है:—

८४ गांववाई मलबे के रुपये जो तहसील से आते हैं मैंने सुना है कि पहिली के पंचलोक उन्हीं को देवस्थानों की मरमत में लगाते थे। आये गये साधु संत ब्राह्मण और गरीबों के रोटी खर्च में लगाते थ। सदाव्रत बांटते थे कालदुकाल में गौओं को घास डालते थ। पानी की प्याऊ लगवाते थे। तालाब खुदवाते थे। पक्षियों को दाना डालते थे मंदिरों में पंजीरी बनवाते थे। दीक्षा महोत्सव करते थे आज ये सब पुन्य धर्म कौन करता है। कोई नहीं। पंचों के सिवाय कितने क ही पुन्यहीन एसे भी देखे गये जो ग्राम के अन्दर भगवान् का मन्दिर और धर्मशाला नहीं बनाने देने की पूरी कोशिश में हैं। यह गांव का दुर्भाग्य समझना चाहिये। यथा शक्ति मदत देना तो दूर रहा परन्तु इन्हीं को अपने गांव में धर्म स्थान भी नहीं सोहाता, कितनी बड़ी शर्म की बात है:—

६५ जैनेतर सरदारों को मालुम हो कि केवल मुंह बांध कर बैठ जाना इसी ही का नाम जैन धर्म नहीं हैं ॥ देश धर्म और जाति हित के वास्ते करोड़ों जैनियों ने अपने प्राण तक दिये हैं यदि ऐसा न होता तो क्षत्रियाभिमानी बहादुर महाराज हम्मीर जैन धर्म का इतना बड़ा आदर कभी नहीं करते। हम्मीर महा काव्य में लिखा है कि जब महाराज हम्मीर दिग्विजय कर रणथंभगढ़ आये तो बाद में उन्होंने अपनी राज धानी में चन्द्रप्रभ भगवान का बहाजंगी मंदिर बनवाया।

९६ रणथंभोर गढ़ की यात्रा जब मैंने की और किल्ले के उपर सर्वत्र फिर के देखा तो बड़े २ जैन मंदिरों के खंडर नजर आये। जो प्राये सभी मुमलमानों के तोड़े हुए थे फक्त एक ही मंदिर में भगवान की मूर्तियां विराजमान हैं जिन्हों का फक्त प्रक्षालन सवाई माधोपुर के दिगम्बर तेरह पन्थी भाइयों की तर्फ से होता है। कमरपट्टावाली एक मूर्ति दीवार में खड़ी है सब ही मूर्त्तियां नग्नाकार नहीं है और मूलनायक भगवान् के चरणों में अगुलियों का चिन्ह होने से भी निश्चय होता है कि यह मंदिर श्वेताम्बरों का ही है दिगम्बरों का नहीं है। तीर्थ यात्रा करने वाले समस्त श्वेताम्बर श्री संघ को मैं नम्र प्रार्थना करता हूं कि श्रीरणथंभोरगढ़ की भी यात्रा जरूर करें ॥
यहां से निजदीक पर हिन्दून् जिला में महावीरजी नाम से प्रसिद्ध बड़ा भारी प्राचीन श्वेताम्बर जैन तीर्थ है। कहते हैं

कि प्राचीन निवासी किसी राजा ने चंद्रवंशीया अपनी पटरानी के नाम से एक (चान्दनपुरी) प्रसिद्ध नगरी बसाई थी उस नगरी के ८४ चोहटों में से एक चान्दन चौक नाम का प्रसिद्ध चोहटा था जिसके बीच में भगवान् श्री महावीर स्वामी का मंदिर बनवाया गया था आपसकी फूट से जब प्राचीन आर्य राजपूत कमजोर होगये तो उन्हों पर अनार्यों ने हमला कर दिया और मकुटुम्ब राजा को मार नगरी को लूट ली। उस वक्त भगवान् की मूर्त्ति को भी भूमि गृह में रख कर लोक भाग गये। बहुत वर्षों तक नगरी विरान पड़ी रही। सब खंडरों को नदी बहा ले गई फक्त पश्चिम किनारे पर कुछ बस्ती रही जिसमें गूजर चमार खटीक विगेराह लोक रहते थे। एक दिन चमार चमडा रंगने के वास्ते नदी किनारे पर झाड़ों की जड़ें खोदता था उस वक्त भगवान् की मूर्ति निकल गई, तब वह दौड़ता हुआ दीवान् जोधराज नामक एक पल्लीवाल जैन श्वेताम्बर गृहस्थ के पास गया और सब हकीगत कही, सुन कर सेठ उसी दम वहां आया, और भगवान् का दर्शन कर बहुत ही हर्षाया। नदी में स्नान कर सेठ ने भगवान् का प्रक्षालन किया और केसर चंदन आदि पवित्र द्रव्यों से नवअंग पूजन कर स्तुती की, मिस्तरियों को बुला कर उसने उसी स्थ न पर भक्ति वस मंदिर बनाने का दृढ संकल्प किया, परन्तु पास में पुष्कल लक्ष्मी न होने के कारण सेठ को बड़ी चिंता.

ई तब स्वप्न में आकर शासन देवता ने सेठ से कहा कि अय, तूं इतनी चिंता क्यों करता है जिस स्थान पर भगवान् प्रगट हुए हैं वहां से वायव्य कोण में पांच सो कदम पर प्राचीन वंशी (टाट्र) राजाओं का असंख्य धन जमीन के अन्दर डटा हुआ पड़ा है। तुम आमेर के राजा के पास जाओं, और इस जमीन को लेकर यहां पर भगवान् का तीन शिखर वाला जैनी मंदिर बनवाओं, किसी भी जाति के मनुष्य मात्र को भगवान् का पूजन करते मत रोकना। जब तक तुम्हारी आद ओलाद श्वेताम्बर जैन मूर्त्ति पूजन धर्म और श्वेताम्बर साधुओं को अपना गुरु मानती रहेगी तब तक लक्ष्मी तुम्हारा घर की दासी बनी रहेगी ऐसा कह कर शासन देवी आमेर के राजा को स्वप्न देगई और भगवान् की भक्ति करने को सब हकीगत दर्शाई आमेर के राजा ने भी आकर भगवान् का दर्शन पूजन किया और सेठ के मांगने मुजब सब भूमि का पट्टा कर दिया तथा अपनी तर्फ से भी एक गांव की आमदनि हमेशा के लिये भगवान् के भंडार में चढ़ा दी। अपार धन खर्च कर शेठ ने भगवान् श्री महावीर स्वामी का बड़ा आलीशान मंदिर बनाया और मंदिर के चौफर दोदोखंड़ी धर्मशालायें ऐसी बनवाई कि जिन्हों में हजारों यात्री लोग आराम से रह सकें। भगवान् प्रगट हुए वहां पर छत्री बना कर चरण पधराए गये और मंदिरजी में पधारने के वास्ते भगवान् को रथ में विराजमान

कि प्राचीन निवासी किसी राजा ने चंद्रवशीया अपनी पटरानी के नाम से एक (चान्दनपुरी) प्रसिद्ध नगरी बसाई थी उस नगरी के ८४ चोहटों में से एक चान्दन चौक नाम का प्रसिद्ध चौहटा था जिसके बीच में भगवान् श्री महावीर स्वामी का मंदिर बनवाया गया था आपसकी फूट से जब प्राचीन-आर्य राजपूत कमजोर होगये तो उन्हों पर अनार्यो ने हमला कर दिया और सकुटुम्ब राजा को मार नगरी को लूट ली। उस वक्त भगवान् की मूर्त्ति को भी भूमि गृह में रख कर लोक भाग गये। बहुत वर्षो तक नगरी विरान पड़ी रही। सब खंड़रों को नदी बहा ले गई फक्त पश्चिम किनारे पर कुछ वस्ती रही जिसमें गूजर चमार खटीक विगेराह लोक रहते थे। एक दिन चमार चमडा रंगने के वास्ते नदी किनारे पर झाड़ों की जड़ें खोदता था उस वक्त भगगान् की मूर्ति निकल गई, तब वह दौड़ता हुआ दीवान् जोधराज नामक एक पल्लीवाल जैन श्वेताम्बर गृहस्थ के पास गया और सब हकीगत कही, सुन कर सेठ उसी दम वहां आया, और भगवान् का दर्शन कर बहुत ही हर्षाया। नदी में स्नान कर सेठ ने भगवान् का प्रक्षालन किया और केसर चंदन आदि पवित्र द्रव्यों से नवअंग पूजन कर स्तुती की, मिस्तरियों को बुला कर उसने उसी स्थ न पर भक्ति वस मंदिर बनाने का दृढ संकल्प किया, परन्तु पास में पुष्कल लक्ष्मी न होने के कारण सेठ को बड़ी चिंता.

यह लावणी जैपुर विगेराह के श्वेताम्बरों में अभी तक प्रसिद्ध है। भूमि से निकली हुई खास मूर्ति नग्नाकार नहीं होने के कारण दिगम्बरों का कोई भी हक नहीं था परन्तु तीर्थ की महिमा देख हजारों दिगम्बर भाई भी यात्रार्थ आने लगे। यहां की आब हवा बहुत ही अच्छी होने के कारण जैपुर के दिगम्बर भट्टारक ने तो एक धर्मशाला को अपना घर ही बना लिया और हमेशा यहां रहने लग गये। होते २ भगवान का पूजन भी दिगम्बरों की ही रीति से होने लग गया। और श्वेताम्बर साधुओं के इस तर्फ नहीं विचरने के कारण श्वेताम्बर जैन साधुओं के नाम से धोकेबाज मुंह बन्धों ने तमाम पल्ली वालों की श्रद्धा फेरदी। सङ्कत व सात् सेठ बोधराजजी के वंशधरों का भी धर्म इस त्रिपुटी को प्राप्त हो गया कि भगवान का पूजन तो करना दिगम्बर रीति से १ गुरु मानना मुंह बन्धों को २ और भट्टारक मानना विजय गच्छ के श्री पूज्यजी को ३। किसी कवि ने ठीक कहा है कि:—

धर्म घटंते धन घटे धन घट मन घट जाय।
मन घटतें महिमा घटे घटत घटत घट जाय॥

महावीर स्वामी की शुद्ध परम्परागत श्वेताम्बर जैन समाचारी को छोड़ते ही समस्त पल्लीवाल् भाईयों की गिरती दशा आई, यहां तक कि भगवान का भण्डार भी पल्ली वालों के हाथ में न रह कर भट्टारकजी के हाथ में [illegible] और उन्होंने

किया परन्तु लाख जोर करने पर भी देवयोग से रथ नहीं चमका जब उस चामर ने आकर भगवान् का एक भजन गाया और रथ को छुआ तो उसी दम रथ चल पड़ा यह देख लोगों ने चमार की भक्ति की प्रशंसा की और भगवान् को मंदिर में ला पधाराये। ए प्रतिष्ठा सेठ ने अपने गुरु विजय गच्छ के भट्टारक (श्रीपूज्य) के हाथ से कराई थी। आठ दिनों तक सेठ ने अपनी तरफ से साधर्मिक वात्सल्य किया. इस प्रतिष्ठा महोत्सव पर देशान्तरों से हजारों श्वेताम्बर जैन आए थे। श्रीसंघ की तरफ से भगवान के भंडार में लगभग पांच लाख रुपयों की आमदनी हुई। उसी प्राचीन जमाने का बना हुआ एक स्तवन (लावणी) भी हमारे पास मोजूद हैं यथाः—

महावीरजी स्वामीजी आप विराजो चांदन चौक में ॥टेर॥
दूर देश से शिखर दीसे मंदिर की छवी न्यारी। हाथी घोड़ा रथ पालखी आदि बहु असवारीजी ॥ महा० ॥ १ ॥ दूर देशों से जात्री आवे पूजा आण रचावे। अष्ट द्रव्य पूजा में लावें मन वांछित फल पावेंजी ॥ महा० ॥ २ ॥ महावीरजी प्रगट हुआ छे निकट नदी के तीरां। ध्यावें सो पावें सुख संपद लंबी आवे शीरांजी ॥ महा० ॥ ३ ॥ ठाड़ो सेवक अरज करे छे. सुणज्यो महावीर स्वामी। कृपा कर मुझ मुक्ति दीजो अविचल सुख अभिमानीजी ॥ महा० ॥ ४ ॥

यह लावणी जैपुर विगेराह के श्वेताम्बरों में अभी तक प्रसिद्ध है। भूमि से निकली हुई खास मूर्ति नग्नाकार नहीं होने के कारण दिगम्बरों का कोई भी हक नहीं था परन्तु तीर्थ की महिमा देख हजारों दिगम्बर भाई भी यात्रार्थ आने लगे। यहां की आब हवा बहुत ही अच्छी होने के कारण जैपुर के दिगम्बर भट्टारक ने तो एक धर्मशाला को अपना घर ही बना लिया और हमेशा यहां रहने लग गये। होते २ भगवान का पूजन भी दिगम्बरों की ही रीति से होने लग गया। और श्वताम्बर साधुओं के इस तर्फ नहीं विचरने के कारण श्वेताम्बर जैन साधुओं के नाम से योकेबाज मुंह बन्धों ने तमाम पल्ली वालों की श्रद्धा फेरदी। सङ्गत व सात् सेठ बोधराजजी के वंशधरों का भी धर्म इस त्रिपुटी को प्राप्त हो गया कि भगवान का पूजन तो करना दिगम्बर रीति से १ गुरु मानना मुंह बन्धों को २ और भट्टारक मानना विजय गच्छ के श्री पूज्यजी को ३। किसी कवि ने ठीक कहा है कि:—

धर्म घटंते धन घटे धन घट मन घट जाय।
मन घटतैं महिमा घटे घटत घटत घट जाय॥

महावीर स्वामी की शुद्ध परम्परागत श्वेताम्बर जैन समाचारी को छोड़ते ही समस्त पल्लीवाल भाईयों की गिरती दशा आई, यहां तक कि भगवान का भण्डार भी पल्लीवालों के हाथ में न रह कर भट्टारकजी के हाथ में आ गया। और उन्होंने

लाखों रुपये निज के खरच में बर्बाद कर दिये। जब यह पाप का घड़ा परिपूर्ण भर गया तो उन्हीं के एक चेले ने (जो अभी तक जेपुर में जन्म कैद है) धन के लोभ में आकर भट्टारक को बुरी तरह से कत्ल किया था। सिकन्द्राबाद निवासी सेठ जुहारलाल जैनी के मुख से ऐसा भी सुना गया है कि पन्नी वालों की पड़ती दशा देख विजय गच्छ के यतियों ने बुद्धिबल से भगवान का भण्डार अपने हस्तगत कर लिया था और दिगम्बर यात्रियों की ज्यादह भीड़ भाड़ देख कर कितने ही काल के बाद भण्डार की छड़ी पालखी द्वारा एक विद्वान यति ने अपने को दिगंबर भट्टारक नाम से प्रसिद्ध किया। ठीक, -

निरस्त पादपदेशे एरण्डापि द्रुमायते ॥

अन्धों में काणा भी राजा बन जाता है दिगंबर-संप्रदाय में इस वक्त साधुओं के न होने के कारण कई मिथ्या आडंबरी भी अपना नाम भट्टारक, त्यागीजी, ऐलक, क्षुल्लक, ब्रह्मचारी और पंडित रख कर हमारे दिगंबर भाइयों को ठग लेते हैं। मैं समस्त दिगंबर जैनों को योग्य सलाह देता हूं कि वह किसी भी ढोङ्गी को न मान कर फक्त श्री खरतर गच्छीय जैन साधुओं को ही अपना गुरु समझें। समस्त जैन संप्रदाय प्राय खरतराचार्य प्रति बोधित है इसके हमारे पास कई प्रमाण मौजूद हैं। खरतरगच्छ के साधु प्राय उभय संप्रदायों उपरि समदर्शी होते हैं और एक उन्हीं ही की समाचारी जैन के सम-

स्त शास्त्रों से मिलती है । खरतरगच्छ के सर्व यति और त्यागी महात्माओं को मैं सविनय निवेदन करता हूं कि वह तीर्थ करते हुए महावीरजी की यात्रा भी जरुर करें । चैत्र मास में यहां बड़ा भारी एक मेला भरता है । जिसमें लाखों मनुष्यों की भीड भाड़ होती है । यात्रियों में प्राय मीनसंप्रदाय के लोक अधिक देखे जाते हैं । महावीर भगवान पर इन लोकों की श्रद्धा तो अटल है परन्तु इन्हों में विद्या का प्रचार कम होने के कारण निर्विवेकता का पूर्ण साम्राज्य है । महावीर भगवान के पवित्र मंदिर में असभ्य गीत गाते हुए ये लोक जूतों सहित आ जाते हैं और परमात्मा की भक्ति के बदले महान पाप बांध लेते हैं । तब ही तो ग्रंथकारोंने इस जाति को असभ्य और नीच लिख दी है अन्यथा यह जाति सब क्षत्रिय जातियों में शिरमौर थी । टाडराजस्थान में लिखा है कि वर्तमान समय में पतित यह मीनगण आदि में इस देश के अधीश्वर थे । सर्व राजपूतगण इन्हों को कर देते थे बड़े बड़े राजेमहाराजे इन्हों के अधीन होकर रहते थे । शत्रुओं से पराजयपा कर अनेक चौहान कछा बह आदि जाती के राजेमीनों के ही आश्रय (शरन में) रहा करते थे उन्होंने ही विश्वास घातकता कर इन्हा का राज्य खोसा है । मीनों की संप्रदाय में सब से पिछले राजे का नाम राव बाधो था राजस्थान के इतिहास में लिखा है कि भिन्न २ मीनाओं की संप्रदाय के अधीन में खोह

लाखों रुपये निज के खरच में बर्बाद कर दिये। जब यह पाप का घड़ा परिपूर्ण भर गया तो उन्हीं के एक चेले ने (जो अभी तक जेपुर में जन्म कैद है) धन के लोभ में आकर भट्टारक को बुरी तरह से कत्ल किया था। सिकन्द्राबाद निवासी सेठ जुहारलाल जैनी के मुख से ऐसा भी सुना गया है कि पञ्चों वालों की पड़ती दशा देख विजय गच्छ के यतियों ने बुद्धिबल से भगवान का भण्डार अपने हस्तगत कर लिया था और दिगम्बर यात्रियों की ज्यादह भीड़ भाड़ देख कर कितने ही काल के बाद भण्डार की लड़ी पालखी द्वारा एक विद्वान यति ने अपने को दिगंबर भट्टारक नाम से प्रसिद्ध किया। ठीक,

निरस्त पादपदश एरण्डापि द्रुमायते ॥

अन्धों में काणा भी राजा बन जाता है दिगंबर-संप्रदाय में इस वक्त साधुओं के न होने के कारण कई मिथ्या आडंबरी भी अपना नाम भट्टारक, त्यागीजी, ऐलक, क्षुल्लक, ब्रह्मचारी और पंडित रख कर हमारे दिगंबर भाइयों को ठग लेते हैं। मैं समस्त दिगंबर जैनों को योग्य सलाह देता हूं कि वह किसी भी ढोङ्गी को न मान कर फक्त श्री खरतर गच्छीय जैन साधुओं को ही अपना गुरु समझें। समस्त जैन संप्रदाय प्राग खरतराचार्य प्रति वांभिन है इसके हमारे पास कई प्रमाण मौजूद हैं। खरतरगच्छ के साधु प्राय उभय संप्रदायों उपरि समदर्शी होते हैं और एक उन्हीं ही की समाचारी जैन के सम-

स्त शास्त्रों से मिलती है। खरतरगच्छ के सर्व यति और त्यागी महात्माओं को मैं सविनय निवेदन करता हूं कि वह तीर्थ करते हुए महावीरजी की यात्रा भी जरुर करें। चैत्र मास में यहां बड़ा भारी एक मेला भरता है। जिसमें लाखों मनुष्यों की भीड़ भाड़ होती है। यात्रियों में प्राय मीनसंप्रदाय के लोक अधिक देखे जाते हैं। महावीर भगवान पर इन लोकों की श्रद्धा तो अटल है परन्तु इन्हों में विद्या का प्रचार कम होने के कारण निर्विवेकता का पूर्ण साम्राज्य है। महावीर भगवान के पवित्र मंदिर में असभ्य गीत गाते हुए ये लोक जूतों सहित आ जाते हैं और परमात्मा की भक्ति के बदले महान पाप बांध लेते हैं। तब ही तो ग्रंथकारोंने इस जाति को असभ्य और नीच लिख दी है अन्यथा यह जाति सब क्षत्रिय जातियों में शिरमौर थी। टाडराजस्थान में लिखा है कि वर्तमान समय में पतित यह मीनगण आदि में इस देश के अधीश्वर थे। सर्व राजपूतगण इन्हों को कर देते थे बड़े बड़े राजेमहाराजें इन्हों के अधीन होकर रहते थे। शत्रुओं से पराजयपा कर अनेक चौहान कछा बड आदि जाती के राजेमीनों के ही आश्रय (शरन में) रहा करते थे उन्होंने ही विश्वास घातकता कर इन्हा का राज्य खोसा है। मीनों की संप्रदाय में सब से पिछले राजे का नाम राव बाधो था राजस्थान के इतिहास में लिखा है कि भिन्न २ मीनाओं की संप्रदाय के अधीन से खोह

लाखों रुपये निज के खरच में बर्बाद कर दिये। जब यह पाप का घड़ा परिपूर्ण भर गया तो उन्हीं के एक चेले ने (जो अभी तक जेपुर में जन्म कैद है) धन के लोभ में आकर भट्टारक को बुरी तरह से कत्ल किया था। सिकन्द्राबाद निवासी सेठ जुहार लाल जैनी के मुख से ऐसा भी सुना गया है कि पल्ली वालों की पड़ती दशा देख विजय गच्छ के यतियों ने बुद्धिबल भगवान का भण्डार अपने हस्तगत कर लिया था और दिगम्बर यात्रियों की ज़्यादह भीड़ भाड़ देख कर कितने ही काल के बाद भण्डार की छड़ी पालखी द्वारा एक विद्वान यति ने अपने को दिगंबर भट्टारक नाम से प्रसिद्ध किया। ठीक,

निरस्त पादपदेश एरण्डापि द्रुमायते॥

अन्धों में काणा भी राजा बन जाता है दिगंबर-संप्रदाय में इस वक्त साधुओं के न होने के कारण कई मिथ्या आडंबरी भी अपना नाम भट्टारक, त्यागीजी, ऐलक, छुल्लक, ब्रह्मचारी और पंडित रख कर हमारे दिगंबर भाइयों को ठग लेते हैं। मैं समस्त दिगंबर जैनों को योग्य सलाह देता हूं कि वह किसी भी ढोङ्गी को न मान कर फक्त श्री खरतर गच्छीय जैन साधुओं को ही अपना गुरु समझें। समस्त जैन संप्रदाय प्राय खरतराचार्य प्रति बोधित है इसके हमारे पास कई प्रमाण मौजूद है। खतरगच्छ के साधु प्राय उभय संप्रदायों उपरि समदर्शी होते हैं और एक उन्हीं ही की समाचारी जैन के सम-

स्त शास्त्रों से मिलती है। खरतरगच्छ के सर्व यति और त्यागी महात्माओं को मैं सविनय निवेदन करता हूं कि वह तीर्थ करते हुए महावीरजी की यात्रा भी जरुर करें। चैत्र मास में यहां बड़ा भारी एक मेला भरता है। जिसमें लाखों मनुष्यों की भीड भाड़ होती है। यात्रियों में प्राय मीनसंप्रदाय के लोक अधिक देखे जाते हैं। महावीर भगवान पर इन लोकों की श्रद्धा तो अटल हैं परन्तु इन्हों में विद्या का प्रचार कम होने के कारण निर्विवेकता का पूर्ण साम्राज्य है। महावीर भगवान के पवित्र मंदिर में असभ्य गीत गाते हुए ये लोक जूतों सहित आ जाते हैं और परमात्मा की भक्ति के बदले महान पाप बांध लेते हैं। तब ही तो ग्रंथकारोंने इस जाति को असभ्य और नीच लिख दी है अन्यथा यह जाति सब क्षत्रिय जातियों में शिरमौर थी। टाडराजस्थान में लिखा है कि वर्तमान समय में पतित यह मीनगण आदि में इस देश के अधीश्वर थे। सर्व राजपूतगण इन्हों को कर देते थे बड़े बड़े राजेमहाराजे इन्हीं के अधीन होकर रहते थे। शत्रुओं से पराजय पा कर अनेक चौहान कछा बद आदि जाती के राजेमीनों के ही आश्रय (शरन में) रहा करते थे उन्होंने ही विश्वास घातकता कर इन्हा का राज्य खौसा है। मीनों की संप्रदाय में सब से पिछले राजे का नाम राव बाघो था राजस्थान के इतिहास में लिखा है कि भिन्न २ मीनाओं की संप्रदाय के अधीन में खोह

गांव, मांच, आमेर, खोटा, वाड़ा, गरोट, नंदाल, गतोर आदि प्रधान २ नगर भी थे। परंतु बाबर और हुमायु के समय में और कच्छ व राज भारमल्ल के शासन समय में भी मीना जाति अत्यन्त ही बलवान थी और इसके बल विक्रम को देख कर राजपूत लोक सदा शंकित रहते थे। उन स्वाधीन मीनों की सम्प्रदाय में एक अत्यंत प्राचीन नगरी नाहन थी भारमल्ल ने मुगलों की सहायता से उस नगर को विध्वंस करदिया। एक प्राचीन ऐतिहासिक कविता में नाहन की मीना जाति की सामर्थ्य इस प्रकार से वर्णन की गई है कि:—

बावन कोट छप्पन दरवाजा।
मीना मरद नाहन का राजा॥
बूडो राज नाहन को जब।
भूस में बांटो मांगो॥ १॥

इस कविता का अर्थ इस प्रकार है कि नाहन के राजा बाधाराव के ५२ तो किले थे और उसकी नाहन नगरी के आठों दिशों में सात २ करके ५६ तोरण द्वार थे। अकब्बर बादशाह की अपार सेना लेकर राजा भारमल्ल ने उस नगरी को नष्ट कर दिया जिस समय बाधाराव का शासन नाहन से लुप्त होगया उस समय उसने सामान्य भूस्मे (भूरी) के अंश को भी कर रूप मे ग्रहण किया था। अथवा यों कहिये कि चारे में से भी बांटा मांगने पर उसकी प्रजा बदल गई और दुश्मनों

का दाव लग गया ॥ लिखा है कि अन्य क्षत्रियों के समान बाघराव को भी अकबर ने अपने पाये लगाना चाहा परन्तु इस बहादुर राजपूत ने एक बार भी अनार्यों के सामने अपना सिर न झुकाया और न उन्होंको अपनी कन्या देकर कुल को कलंकित किया। चारणों के पास उस जमानेकी कविताएँ हैंकि:—

अड़े राव उमराव अकबर कने
आगरे, पट्टा लखंता पाण पावे।
परवतां जांवनां पांव पाछा पड़े॥
दड़हड़ां डूंगरां जावनां राव बाघो डरावे॥
बूझे राजा भारमल्ल सुं भोमदे चापटो।
दिनमान दौड़ मीनो न मानैं।
मुगलकी भड़तड़ चौके का चार दांत तोड़े॥ १॥
बाघो राजा नाहन को बांवन किल्लां आण।
दिल्लीपतिधड़का करे, सुभी भरेन दाण॥ २॥
बावनगढ लागे नाहन को छपन्न तोरण द्वार।
बाघो राजा नाहन को भडमारण सरदार॥ ३॥
बाघो तपियो नहड़े अकबर साह दिल्ली।
यह लाटे बावन परगणो वह बातकरेभल्ली॥ ४॥
पंसेरी की होड कब करेगो कांकरो।
ऊंचा पग छे पावका।

गांच, मांच, आमेर, झोटा, वाड़ा, गरोट, नंदाल, गतोर आदि प्रधान २ नगर भी थे। परंतु बावर और हुमायु के समय में और कच्छ व राज भारमल्ल के शासन समय में भी मीना जाति अत्यन्त ही बलवान थी और इसके बल विक्रम को देख कर राजपूत लोक सदा शंकित रहते थे। उन स्वाधीन मीनों की सम्प्रदाय में एक अत्यंत प्राचीन नगरी नाहन थी भारमल्ल ने मुगलों की सहायता से उस नगर को विध्वंस करादिया। एक प्राचीन ऐतिहासिक कविता में नाहन की मीना जाति की सामर्थ्य इस प्रकार से वर्णन की गई है कि:—

बावन कोट छप्पन दरवाजा।
मीना मरद नाहन का राजा॥
बूडो राज नाहन को जब।
भुस में बांटो मांगो॥ १॥

इस कविता का अर्थ इस प्रकार है कि नाहन के राजा बाधागव के ५२ तो किले थे और उसकी नाहन नगरी के आठों दिशी में सात २ करके ५६ तोरण द्वार थे। अकब्बर बादशाह की अपार सेना लेकर राजा भारमल्ल ने उस नगरी को नष्ट कर दिया जिस समय बाधागव का शासन नाहन से लुप्त होगया उस समय उसने सामान्य भूस्से (भूरी) के अंश को भी कर रूप में ग्रहण किया था। अथवा यों कहिये कि चारे में से भी बांट मांगने पर उसकी प्रजा ददल गई और दुश्मनों

अभिषेक के समय में उनके मस्तक पर अपने रुधिर से तिलक करते थे। वृद्ध मीना अपना पैरका अंगुठा से तिलक करता था। आमेरपतिकी जीवन रक्षा का भार भी उन्हीं के हाथ में था। आमेर के सभी राजे मीनाओं को मामाजी कहकर बोलते थे। राव पन्नोजी तो सर्व राज्याधिकार मीनाको ही देकर प्रथ्वीराज के पास रहते थे। आधागत्र तक तो यह मीनागण राजकीय समस्त चिन्हों का व्यवहार करते थे, परन्तु जब यह लोक क्षत्रिय धर्म से ज्यों २ पतित होते गये त्यों २ इन्हीं के पास राज्य चिन्ह अमंगत विचार कर खोसालिये गये। जब नगारा निसान खोसा गया तब लाखों मीनोंने अपने प्राण दिये परंतु नतीजा कुछ भी न निकला। अब रहे हुए सब ही जिमींदार बन गये हैं। इन्हों की जाति पतित क्षत्रियों में मानी गई है। कहते हैं कि ये लोग अपनी मूर्खता से अपनी जातिकी औरतों को नचा कर देवरिया और रमिया गवाकर साथ में आप भी असभ्य गीत गाते हुए नाच कूद कर के उत्तम क्षत्रियजाति से पतित होगये हैं। अब इन्होंमें ऐसे मनुष्य न रहे जो कि अपनी जाति की पड़ती दशा को सुधार सके। फक्त इन्हीं की असभ्यता ही के कारण से मथुरा के रणछोडजी के मंदिर से इन्हों का बहिस्कार हुआ है। अब जैनी भाइयों को भी चाहिये कि जब तक ये लोग क्षत्रियोचित सर्व गुण अपनी जाति में पुनः दाखिल न करलें तब तक भगवान महावीरस्वामि के मंदिर से

पहलीतो ढोल बाजिया हड़पाडो भवालका।
अरु पीछे बलवंत बाधाराबका ॥ ५ ॥
बाजे ढूंढारमें ढोल बलवत बाधारावका ॥ ६ ॥
एक हद मांडलगी दूजी सांभर है सही।
दाव बैठा नही दांण भरे।
इतर उमाओं की चोथ टरे
अबके तो अकबर की दुहाई।
के राव बाधा की आंण फिरे ॥ ७ ॥
बावन गढ को अधिपति बलवंत बाधोराव।
कपटं राजा भारमल्ल घणा देखतो दाव ॥ ८ ॥
बेटी राजा भारमल देही अकबर हाथ।
मन लेही सम्राट की।
कियो नाहन नगर को घात ॥ ६ ॥

टाड राजस्थान भा०२ में लिखा है कि मीनागण आज तक आमेरके अधीश्वर के यहां अत्यन्त ही विश्वासी पद पर नियुक्त हैं। जयगढ के धनागार और राजकीय कागज पत्रोंके देखने में भी यही नियुक्त हैं। राजधानी में यह आमेर राज्यके शरीर रक्षा अर्थात् प्रतिहारिता में नियुक्त है। राजा के अन्तःपुरकी रक्षा का भार भी इन्ही के हाथ में सौंपा गया है। मीनागण आमेर राज्य में सब राजनैतिक स्वत्वाधिकार और अनुग्रह भोग करते हैं। काला खोह के मीना जयपुर के प्रत्येक नरपतियों के

अभिषेक के समय में उनके मस्तक पर अपने रुधिर से तिलक करते थे। वृद्ध मीना अपना पैरका अंगुठा से तिलक करता था। आमेरपतिकी जीवन रक्षा का भार भी उन्हीं के हाथ में था। आमेर के सभी राजे मीनाओं को मामाजी कहकर बोलते थे। रावपज्जोजी तो सर्वराज्याधिकार मीनाको ही देकर प्रथ्वीराज के पास रहते थे। बाधागाव तक तो यह मीनागण राजकीय समस्त चिन्हों को व्यवहार करते थे, परन्तु जब यह लोक क्षत्रिय धर्म से ज्यों २ पतित होते गये त्यों २ इन्हीं के पास राज्य चिन्ह असंगत विचार कर खोसालिये गये। जब नगारा निसान खोसा गया तब लाखों मीनोंने अपने प्राण दिये परंतु नतीजा कुछ भी न निकला। अब रहे हुए सब ही जिमीदार बन गये हैं। इन्हीं की जाति पतित क्षत्रियों में मानी गई है। कहते हैं कि ये लोग अपनी मूर्खता से अपनी जातिकी औरतों को नचा कर देवरिया और रसिया गवाकर साथ में आप भी असभ्य गीत गाते हुए नाच कूद कर के उत्तम क्षत्रियजाति से पतित होगये हैं। अब इन्होंमें ऐसे मनुष्य न रहे जो कि अपनी जाति की पड़ती दशा को सुधार सके। फक्त इन्हीं की असभ्यता ही के कारण से मथुरा के रणछोडजी के मंदिर से इन्हीं का बहिस्कार हुआ है। अब जैनी भाइयों को भी चाहिये कि जब तक ये लोग क्षत्रियोचित सर्व गुण अपनी जाति में पुनः दाखिल न करलें तब तक भगवान महावीरस्वामि के मंदिर से

पहलीतो ढोल बाजिया हड़पाडी भवालका।
अरु पीछे बलवंत बाधारावका ॥ ५ ॥
बाजे ढूंढारमें ढोल बलवत बाधारावका ॥ ६ ॥
एक हद मांड़लगी दूजी सांभर है सही।
दाव बैठा नही दांण भरे।
इतर उमाओं की चोथ टरे
अबके तो अकबर की दुहाई।
कै राव बाधा की आंण फिरे ॥ ७ ॥
बावन गढ को अधिपति बलवंत बाधोराव।
कपटे राजा भारमल्ल घणा देखतो दाव ॥ ८ ॥
बेटी राजा भारमल देही अकबर हाथ।
मन लेही सम्राट की।
कियो नाहन नगर को घात ॥ ९ ॥

टाड राजस्थान भा०२ में लिखा है कि मीनागण आज तक आमेरके अधीश्वर के यहां अत्यन्त ही विश्वासी पद पर नियुक्त हैं। जयगढ के धनागार और राजकीय कागज पत्रोंके देखने में भी यही नियुक्त हैं। राजधानी में यह आमेर राज्यके शरीर रक्षा अर्थात् प्रातिहारिता में नियुक्त है। राजा के अन्तःपुरकी रक्षा का भार भी इन्ही के हाथ में सौंपा गया है। मीनागण आमेर राज्य में सब राजनैतिक स्वत्वाधिकार और अनुग्रह भोग करते हैं कालाखोह के मीना जयपुर के प्रत्येक नरपतियों के

शलो की बातें मै ना नहीं करते। बेगम की ऐसी बातें सुनकर अलाउद्दीन आश्चर्य और क्रोध के समुद्र में गोते खाने लगा, परंतु उसने अपने को सम्भाल कर कहा कि जो तू ऐसा पुरुष मुझे बतलादे तो मैं उस से बहुतही प्रसन्नता पूर्वक मिलूं और उसने मेरा कैसा ही अपराध क्यों न किया हो मैं सर्वथा उसे क्षमा करूंगा। इतनी बात सुनकर भवितव्यता वस बेगम ने अपने और महिमाशाह प्रति भूत वृतान्त को कह सुनाया और कहा कि सुनिये।

वन दक करै निजये।
घर बैठल बांजलमीरजिये॥
नहीं भाजन सोही गरम्म करैं।
चकुरु नहीं बैठत भूमि मरैं॥ २५८॥
सरणागत आवत नाहिं तजै।
पर बा मलखों मनमांहिं लजैं॥
जहां आवत प्राणन राख तहां।
नहीं झूंठ अकारन भाख महां॥ २५९॥
रणमें नहीं पीठ दइ कबहू।
लखि आरतिवन्तन सों अबहू॥
तहां मेटत आरति बोरितिहीं।
बिन आसन बैठत है कबही॥ २६०॥
मुजसें उच्चरे न डरें कबहीं।

भी इन्हीं का बहिस्कार ही रक्खें। यों तो पवित्र जैन धर्म का द्वार सबही के लिये खुला है परन्तु इस से लाभ वही उठा सकता है कि जिसकी अन्तर आत्मा शुद्ध हो। अस्तु महाराज हमीर के जीवन चरित्र से भली भांति जाना जाता है कि उन्हीं की अन्तर आत्मा बहुत ही शुद्ध थी। रणथंभोरगढ में उन्होंने ८४ गच्छों के उपाश्रय बनवाये थे। खरतर गच्छीय भट्टारक श्री जिनचन्द्र सूरीजीको वह अपने गुरु समझते थे। ब्राह्मणों के अत्याचार करनेपर आचार्य महाराजने अपने उपाश्रय में अत्र जलवाली पातालगंगा योगबल से प्रगट कर रायजी को बताई जो आज भी वहां मौजूद है। वर्त्तमान रणथंभोरकी छत्री बनाकर रावजी ने गुरुमहाराज की चरण पादुकायें पधराई सो भी मौजूद हैं।

९७–अब एक दिन दिल्ली के राजमहल में आधीरात के समय अलाउद्दीन रूपविचित्राके पास बैठा हुआथा उसी समय एक जंगी चूहा आ निकला तो बादशाह का कामज्वर जीर्ण होगया किन्तु उसने किसी प्रकार सम्भलकर एक ही बाण से चूहेको मार गेरा और अपनी बहादुरी की तारीफ करते हुए उसने रूपविचित्रा से कहा कि मैं जानता हुं कि स्त्रियां स्वभाव सेही कायर होती है। इसलिये मैंने यह पुरुषार्थ प्रगट कियाहै। यह सुनकर रूपविचित्रा ने मुस्कराकर कहा कि पुरुषार्थी मनुष्य वे होते हैं के जो इसी अवस्था में सिंहको सहज ही में मार कर

दिन दर्बार में बुलाया। दर्बार में पहुंच कर महिमाशाह ने अपनी ओर से पांच घोड़े एक हाथी दो मुल्तानी कमान एक अमूल्य तलवार दो वाण बहुत से बहुमूल्य मोती, और ऊनी तथा रेशमी वस्त्र रावजी के नजर किए। रावजी ने सादर स्वीकार कर लिया उसी समय महिमाशाह ने अपनी वार्ता भी रावजी से निवेदन करके सविनय कहा कि मैं अलाऊद्दीन का विरोधी हूं. यदि आप में मेरी रक्षा करने की शक्ति हो तो शरण दीजिये अथवा मुझे अपने भाग्य के भरोसे छोड़ दीजिये। ये सुनकर हम्मीर ने कहा कि मैं तुझे अभयदान देकर प्रण करता हूं कि इस मेरे तन पिंजर में प्राणपखेरु के रहते एक क्या सहस्रों बादशाहभी तेरा बाल बांका नहीं करसक्ते।

> तन धन गढ घर ए सब जावें।
> पै महिमा पति साह न पावें ॥ २६६ ॥

इस प्रकार कह कर राव हम्मीर ने उसी समय बहुत से घोड़े सुवर्ण के साज सहित दिये और अपने कंठ से उतार कर एक मोतियों की माला एक हीरों का कंठा और एक शिरपेच दिया जितने मनुष्य महिमाशाह के साथ में थे उन सबों को साल दुमाला आदि सिरपाव दिया गया और पांच लाख रुपयों की जागीरी का पट्टा भी महिमाशाह को रावजी ने लिख कर उसी समय देदिया। इसी प्रकार जब महिमाशाह रणथम्भोर के अभेद्यदुर्ग

सचतें मधुरे मुख बैन महो ॥
दृग लाज भरे रिझवार घने ।
रहनी करनी कविराज भनैं ॥ २६१ ॥
महिमा महिमा नहीं जात कही ।
जस चाहत गाहक गाह कही ॥
वरवीर महारणधीर अरैं ।
खग खेत गहे अरि खंड करै ॥ १६२ ॥

यह सुनते ही बादशाहका क्रोध घी सींची हुई अग्निके समान धधक उठा और उसी समय महिमाशाह को बुलाए जाने की आज्ञा दीगई। यह देख मरहटी भी बेगम अपनी मूर्खता पर पछताने लगी। अन्त में उसने साहस पूर्वक बादशाह से कहा कि यदि आप उस वीर पुरुषको कुछ दन्ड देना चाहते हैंतो प्रथम मुझे ही मरवा डालिये, क्योंकि इसमें मेराही दोष है-नकि उनका। जहांपनाह क्या यह अन्याय न होगाकि एक निरापराधी पुरुष दंडपावें और अपराधीको आप गले से लगावें! निदान-अपने कुटुम्ब को लेकर महिमाशाह अपनी रियासत से भी निकल भागा और बडे २ राजा महाराजों के पास यह इस उद्देश से गया कि अलाउद्दीन से लड़ने के वास्ते कुछ मदत दें, परन्तु किसी से कुछ भी नहीं बन पड़ा। फिरताहुआ जब राव हम्मीरकी ड्योढ़ी पर पहुंचा और उसने अपने आने की इत्तला कराई तो रावजी ने उसे बडे ही सम्मान पूर्वक डेरा दिलवाया और दूसरे

दिन दर्बार में बुलाया। दर्बार में पहुंच कर महिमाशाह ने अपनी ओर से पांच घोड़े एक हाथी दो मुल्तानी कमान एक अमूल्य तलवार दो वाण बहुत से बहुमूल्य मोती, और ऊनी तथा रेशमी वस्त्र रावजी के नजर किए। रावजी ने सादर स्वीकार कर लिया उसी समय महिमाशाह ने अपनी वार्ता भी रावजी से निवेदन करके सविनय कहा कि मैं अलाऊदीन का विरोधी हूं. यदि आप में मेरी रक्षा करने की शक्ति होतो शरण दीजिये अथवा मुझे अपने भाग्य के भरोसे छोड दीजिये। ये सुनकर हम्मीर-ने कहा कि मैं तुझे अभयदान देकर प्रण करता हूंकि इस मेरे तन पिंजर में प्राणपंखेरु के रहते एक क्या सहस्त्रों बादशाहभी तेरा बाल बांका नहीं करसके।

तन धन गढ धर ए सब जावें।
पै महिमा पति साह न पावें ॥ २६६ ॥

इस प्रकार कह कर राव हम्मीर ने उसी समय. बहुत से घोड़े सुवर्ण के साज सहित दिये और अपने कंठ से उतार कर एक मोतियों की माला एक हीरों का कंठा और एक शिरपेच दिया जितने मनुष्य महिमाशाह के साथ में थे उन सबों को साल दुमाला आदि सिरपाव दिया गया और पांच लाख रुपयों की जागीरी का पट्टा भी महिमाशाह को रावजी ने लिख कर उसी समय देदिया। इसी प्रकार जब महिमाशाह रणथम्मोर के अमेद्यदुर्ग

सचतैं मधुरे मुख बैन मही ॥
दग लाज भरे रिझवार घने।
रहनी करनी कविराज भनें ॥ २६१ ॥
महिमा महिमा नहीं जात कही।
जस चाहत गाहक गाह कही ॥
वरवीर महारणधीर अरें।
खग खेत गहें अरि खंड करें ॥ २६२ ॥

यह सुनते ही बादशाह का क्रोध घी सींची हुई अग्नि के समान धधक उठा और उसी समय महिमाशाह को बुलाए जाने की आज्ञा दी गई। यह देख मरहटी भी बेगम अपनी मूर्खता पर पछताने लगी। अन्त में उसने साहस पूर्वक बादशाह से कहा कि यदि आप उस वीर पुरुष को कुछ दन्ड देना चाहते हैं तो प्रथम मुझे ही मरवा डालिये, क्योंकि इसमें मेरा ही दोष है-नकि उनका। जहापनाह क्या यह अन्याय न होगा कि एक निरापराधी पुरुष दंड पावें और अपराधी को आप गले से लगावें! निदान अपने कुटुम्ब को लेकर महिमाशाह अपनी रियासत से भी निकल भागा और बड़े २ राजा महाराजों के पास यह इस उद्देश से गया कि अलाउद्दीन से लड़ने के वास्ते कुछ मदत दे, परन्तु किसी से कुछ भी नहीं बन पड़ा। फिरता हुआ जब राव हम्मीर की ड्योढ़ी पर पहूंचा और उसने अपने आने की इत्तला कराई तो रावजी ने उसे बड़े ही सम्मान पूर्वक डेरा दिलवाया और दूसरे

दिन दर्बार में बुलाए। दर्बार में पहुंच कर महिमाशाह ने अपनी ओर से पांच घोड़े एक हाथी दो मुल्तानी कमान एक अमूल्य तलवार दो वाण बहुत से बहुमूल्य मोती, और ऊनी तथा रेशमी वस्त्र रावजी के नजर किए। रावजी ने सादर स्वीकार कर लिया उसी समय महिमाशाह ने अपनी वार्ता भी रावजी से निवेदन करके सविनय कहा कि मैं अलाऊदीन का विरोधी हूं। यदि आप में मेरी रक्षा करने की शक्ति होतो शरण दीजिये अथवा मुझे अपने भाग्य के भरोसे छोड दीजिये। ये सुनकर हम्मीर-ने कहा कि मैं तुझे अभयदान देकर प्रण करता हूंकि इस मेरे तन पिंजर में प्राणपखेरु के रहते एक क्या सहस्रों बादशाहभी तेरा बाल बांका नहीं करसक्ते।

तन धन गढ घर ए सब जावें।
पै महिमा पति साह न पावें ॥ २६६ ॥

इस प्रकार कह कर राव हम्मीर ने उसी समय बहुत से घोड़े सुवर्ण के साज सहित दिये और अपने कंठ से उतार कर एक मोतियों की माला एक हीरों का कंठा और एक शिरपेच दिया जितने मनुष्य महिमाशाह के साथ में थे उन सबों को साल दुमाला आदि सिरपाव दिया गया और पांच लाख रुपयों की जागीरी का पट्टा भी महिमाशाह को रावजी ने लिख कर उसी समय देदिया। इसी प्रकार जब महिमाशाह रणथम्भोर के अभेद्यदुर्ग

में आनन्द से रहने लगे तो उसी समय गुप्तचरों ने दिल्ली में बादशाह को सब समाचार जा सुनाये। सुनकर अलाउद्दीन पूंछ कुचले हुए काल सर्प की तरह क्रोधित हो उठा और वहीं दम रणथम्भोर को एक दूत भेजा गया, दूत ने आकर राज्य सभा में हम्मीर को प्रणाम किया और:—

कहे तब दूत सुनो नृप बात।
बड़ो तुम वंश प्रतापि सुहात॥
तजो रतनागर को सब हेत।
रत्न अमूल्य तजो रज हेत॥ ३०९॥
कहो गुन कौन रखे इहि शंख।
जरत जु बाल गहो सुचि शंख॥
अजान असी जु करे नहिं राव।
सुनो तुम नीति जु राज स्वभाव॥ ३१०॥
तजो अब एक कुटुम्ब बचाय।
तजो गृह एक सुग्राम सहाय॥
तजो पुर एक सुदेश बचाय।
तजो सब आतम हेत सुभाय॥ ३११॥
महा यह नीच अधर्मिय सेख।
दरयो नहिं स्वामि तिया गुन देख॥
बड़े पति शाह दिल्ली पति बैर।
लरयो नहिं आमन प्रात सुफेर॥ ३१२॥

मल जिहिं रोपत जं घर देइ।
हम्मीर सु राव सुनो इह भेव॥
घटै नीति नह तुम पतिशाह।
अमीरस में विष घोरत काह॥ ३१३॥
परी फिर आप नहीं दुःख आय।
तजो यह जानि प्रथम सुभाय॥
जथा वह रावन जिति त्रिलोक।
सुर नर नागर हैं तिहिं ओक॥ ३१४॥
करयो निन वैर जबै रघुनाथ।
मिल्या गढ लंक सु पंकम पाथ॥
कहो फिर कौन करै पतिसाह।
करै नव जंग बचौ नहिं ताहि॥ ३१५॥

इत्यादि सुन कर हम्मीर ने बड़ा धैर्यता के साथ कहाकि चाहे मुसलमानों ने किसी शरणागत हिन्दू का रक्षण न किया हो परन्तु पतित पावन क्षत्रियों का यह धर्म नहीं कि उन्हीं के समान किसी से विश्वास घातकता करैं। तुम जाकर अलाउद्दीन को कहदो कि इस्लाम को स्वीकार करने पर भी महिमाशाह को हम्मीर नहीं जाने देगा। यह समाचार दूत ने जाकर दिल्ली में बादशाह को कहा ताः—

महमरखां उज्जीर सों, कह्ह बैन पतिशाहि।
इक फरमान हम्मीर को,

में आनन्द से रहने लगे तो उसी समय गुप्तचरों ने दिल्ली में बादशाह को सब समाचार जा सुनाये। सुनकर अलाउद्दीन पूंछ कुचले हुए काल सर्प की तरह क्रोधित हो उठा और उसी दम रणथम्भोर को एक दूत भेजा गया, दूत ने आकर राज्य सभा में हम्मीर को प्रणाम किया और:—

कहै तब दूत सुनो नृप बात।
बड़ो तुम वंश प्रतापि सुहात॥
तजो रतनागर को सर हेत।
रत्न अमूल्य तजो रज हेत॥ ३०६॥
वही गुन कौन रखे इहि शंख।
जरत जु चाल गहो सुवि शंख॥
अजान असी जु करै नहिं राव।
सुनो तुम नीति जु राज स्वभाव॥ ३१०॥
तजो अब एक कुटुम्ब बचाय।
तजो गृह एक सुग्राम सहाय॥
तजो पुर एक सुदेश बचाय।
तजो सब आतम हेत सुभाय॥ ३११॥
महा यह नीच अधर्मिय सेख।
टरयो नहिं स्वामि तिया गुन देख॥
बदै पति शाह दिल्ली पति बैर।
लख्यो नहिं आनन मात सुफेर॥ ३१२॥

मलै जिहिं रोपत जे धर देह ।
हम्मीर सु राव सुनो इह भेव ॥
घटै नीति नह तुमैं पतिशाह ।
अमीरस में विष घोरत काह ॥ ३१३ ॥
परी फिर आप नहीं दुःख आय ।
तजो यह जानि प्रथम सुभाय ॥
जथा वह रावन जिति त्रिलोक ।
सुर नर नागर हैं तिहिं ओक ॥ ३१४ ॥
करयो तिन वैर जबै रघुनाथ ।
मिल्या गढ लंक सु बंकम पाथ ॥
कहौ सिर कौन करै पतिसाह ।
करै तव जंग बच्यौ नहिं ताहि ॥ ३१५ ॥

इत्यादि सुन कर हम्मीर ने बड़ी धैर्यता के साथ कहाकि चाहे मुसलामानों ने किसी शरणागत हिन्दू का रक्षण न किया हो परन्तु पतित पावन क्षत्रियों का यह धर्म नहीं कि उन्हीं के समान किसी से विश्वास घातकता करैं। तुम जाकर अलाउद्दीन को कहदो कि इस्लाम को स्वीकार करने पर भी महिमाशाह को हम्मीर नहीं जाने देगा। यह समाचार दूत ने जाकर दिल्ली में बादशाह को कहा ता:—

महमरखां उजीर सौं, कह बैन पतिशाहि ।
इक फरमान हम्मीर को,

लिखि भेजहु अब ताहि ॥ ३१६ ॥
लिखि हजरति फरमान, उलटी एलची पठाये।
हठ मति करो हमीर, चौर मति रखौ पराये॥
हम दिल्ली के ईश, राव तुमहुं जु कहायो।
यह अलमि जिय माहिं बैर मैं कहा जु पायो॥
माल मुलक चाहो जितो।
कहैं शाह वहु लीजिये॥
फर्मान बांचि जिय राव तुम।
चौर हमारो दीजिये॥ ३२०॥

इस पत्र का उत्तर रावजी ने इस प्रकार से लिखा कि मैं यह भली भांति जानता हूं कि आप दिल्ली के बादशाह हैं, "परन्तु मैं जो प्रण कर चुका हूं उसे अपने जीवन पर्यन्त छोड़ने का नहीं। इसलिये उचित यही है कि आप अब मुझ से महिमाशाह के विषय में बात भी न करें। अस्तु और जो कुछ आपस बन पड़े उसके करने में विलम्ब भी न कीजिये।" इस पत्र को पाकर बादशाह का क्रोध और भी बढ़ उठा परंतु राज्य मन्त्रियों के समझाने बुझाने पर उसने एक बार फिर भी राव हम्मीर के पास दूत भेज कर उसके मन की थाह ली। परन्तु उस वीर पुरुष ने बड़े धैर्य और साहस के साथ फिर भी वही उत्तर दिया कि:—

दूजा हजरत का लिखा ।
बांचि राव फरमान ॥
बार बार क्यों लिखत है ।
तजूं न हट की बान ॥ ३२५ ॥
पश्चिम सूरज उगवै ।
उलटी गंग बह नीर ॥
कहो दूत पतिशाह सों ।
हठ न तजै हम्मीर ॥ ३२६ ॥

दूत ने पीछा आकर बादशाह की सभा में कहा कि:—

चले दूत मुरझाय दिल्ली दिशी कियो पयानो ।
गढ़ रणथम्भ हम्मीर शाह कैसे कम जानों ॥
हयदल पयदल सेन सूरवर वीर सवायो ।
हठी राव चहुंवान वंश यहि हट चलि आयो ॥
यह विधि सु तुमहुं घर लखै ।
हरे सकल तुम बार बर ॥
अब पतिशाह जु एक सुब ।
कै तुम कै जु हमीर वर ॥ ३२८ ॥

यह सुन बादशाह की बुद्धि भी चक्कर में पड़ गई । उसने विचार किया कि जब राव हम्मीर में इतना साहस है तब उसका कुछ कारण भी होगा, यदि न भी हो तोभी प्राण की परवाह न करने वाले के सामने विरलेही मर्द के लाल

दूजा हजरत का लिखो।
वांचि राव फरमान ॥
बार बार क्यों लिखत है।
तजूं न हट की बान ॥ ३२५ ॥
पश्चिम सूरज उग्गवे।
उलटी गग वह नीर ॥
कहो दूत पतिशाह सों।
हठ न तजै हम्मीर ॥ ३२६ ॥

दूत ने पीछा आकर बादशाह की सभा में कहा किः—

चले दूत मुरझाय दिल्ली दिशी कियो पयानो।
गढ़ रणथम्भ हम्मीर शाह कैसे कम जानों ॥
हयदल पयदल सेन सूरवर वीर सचायो।
हठी राव चहुंवान वंश यहि हट चलि आयो ॥
यह विधि सु तुमहुं धर लखे।
हरे सकल तुम बार बर ॥
अब पतिशाह जु एक भुव।
के तुम कै जु हमीर बर ॥ ३२८ ॥

यह सुन बादशाह की बुद्धि भी चक्कर में पड़ गई। इसने विचार किया कि जब राव हम्मीर में इतना साहस है तब उसका कुछ कारण भी होगा, यदि न भी हो तोभी प्राण की परवाह न करने वाले के सामने विरलेही माई के लाल

अरु गजराज असी मद गज्जें ॥
सुरवीर दश सहस अमानौं ।
इते राव रणधीर के जानौं ॥ ३३५ ॥
मेटि ममीत जु सकल तहं ।
कीनें मन्दिर देस ॥
बंग निवाज न होय जहं ।
श्रवण कथा हरी वेश ॥ ३३६ ॥
नहीं कुरान कलमा नहीं ।
मुसलमान नहिं चोर ॥
चारि वरण आश्रम सुखी ।
देस हमीर सु घोर ॥ ३३७ ॥
अपनें अपने धर्म में ।
रहैं सबै नर नारि ॥
राज नीति पन तेज जुत ।
करें राज सुख कारि ॥ ३३८ ॥
घर काहू के होय नहिं ।
दुखी न काऊ दीन ॥
आश्रम किते अनूप हैं ।
ऊंचे मिन्दर चीन ॥ ३३९ ॥
सरवर सु पंच जल अगम सोय ।
बहु रंग कमल फूले सु जोय ॥

मुंह होते हैं। सिंह हाथी से बहुत ही छोटा होता है किन्तु वह अपने साहस और पुरुषार्थ ही से उसे मार डालता है। यह विचार कर:—

कहे साहि श्रनु तुल सु बैनं।
कहो राय कोप न धुम एनं॥
कितोक दल बल सूर समाजं।
कित इक गढ़ सामांधर राजं॥ ३३१॥
रहनी करनी प्रजा प्रतापं।
बाना बिरद दान धन आपं॥
नीति अनीति ग्राम गढ़ कैसा।
सहर सरोवर घाट जु जैसा॥ ३३२॥

दूत कहता है कि:—

सत्तरि सहस तुरङ्गम आनों।
दोय लख पयदल श्ररमानों॥
सत्त पंच गजराज अमानों।
होय कीच मद बहत सु दानों॥ ३३३॥
रनथम्भोर ग्वालियर बंका।
नरवल और चित्तौड़ सुलंका॥
रहें जखीरा गढ के जेता।
अन वस्तु न जानत तेता॥ ३३४॥
तुरी सहस इकतीस सु सज्जै।

अरु गजराज असी मद गज्जै ॥
सूरवीर दश सहस अमानों ।
इतं राव रणधीर के जानों ॥ ३३५ ॥
मेटि मसीत जु सकल तहं ।
कीनें मन्दिर देस ॥
बंग निवाज न होय जहं ।
श्रवण कथा हरी वेस ॥ ३३६ ॥
नहीं कुरान कलमा नहीं ।
मुसलमान नहिं चोर ॥
चारि वरण आश्रम सुखी ।
देस हमीर सु धोर ॥ ३३७ ॥
अपनें अपनं धर्म में ।
रहैं सबै नर नारि ॥
राज नीति पन तेज जुन ।
करैं राज सुख कारि ॥ ३३८ ॥
कर काहू के होय नहिं ।
दुखी न काऊ दीन ॥
आश्रम किते अनूप हैं ।
ऊंचे मिन्दर चीन ॥ ३३९ ॥
सरवर सु पंच जल अगम सोय ।
बहु रंग कमल फुल्ले सु जोय ॥

मुंह होते हैं। सिंह हाथी से बहुत ही छोटा होता है किन्तु वह अपने साहस और पुरुषार्थ ही से उसे मार डालता है। यह विचार करः—

फहं साहि चनु तुम सु वैनं।
कहो राय कोप न धुम एनं॥
कितोक दल बल सूर समाज।
कित इक गढ़ सामंधिर राजं॥ १२१॥
रहनी करनी प्रजा प्रतापं।
बाना बिरद दान धन आपं॥
नीति अनीति ग्राम गढ़ कैसा।
सहर सरोवर थाट जु जैसा॥ १२२॥
दूत कहता है कि:—
सत्तरि सहस तुरङ्गम जानों।
दोय लख पयदल भरमानों॥
सत्त पंच गजराज अमानों।
होय कीच मद बहत सु दानों॥ १२३॥
रनथम्भौर ग्वालियर डंका।
नरवल और चित्तौड़ सुतंका॥
रहैं जखीरा गढ़ के जेता।
अन वस्तु न जानत तेता॥ १२४॥
तुरी सहस इकतीस सु सज्जै।

तब छुटत ओर पर्वत सुहल्ल ॥ ३५० ॥
छुटन्त गर्भ सुक्कन्त नीर।
मनु वज्रपात सुक्कत समीर ॥
आसा सुनाम रानी सुएक।
पतिवृत्त धर्म्म देवी सु टेक ॥ ३५१ ॥
रणथम्भनाथ सुत इक्कपूर।
चण्ड तेज मनु उग्गंत सूर ॥
रतने सनाम जग है विख्यात।
चित्तौड़ा दुग्ग पाल सुनात ॥ ३५२ ॥

इत्यादि दूत के मुख से राव हम्मीर की अपार शक्ति का वर्णन सुनकर अलाउद्दीन का कलेजा थर्रा उठा, परंतु बाहर से हिम्मत भरे वचनों में उसने कहा कि।

क्या हमीर मगरूर पलक में पाय लगाऊं।
खूनी महिमा साह उसे गहि दिल्लिय लाऊं ॥
जीति राव हम्मीर तोरि गढ़ धूरि मिलाऊं।
इति जो न अब करू तो न पत साह कहाऊं ॥
कतेक राज रण थंब को इतो कियो अभिमान तिहिं ॥
कोपि साह भेजे जबैं। दशों देश फर्मान जिहिं ॥

वृद्ध पुरुषों ने बादशाह को बहुत कुछ समझाया परन्तु उसने आवेश में आकर यह प्रतिज्ञा करली कि हम्मीर के

घहुं ओर नीर को न हिन छेह ।
परपत अनुप जल झरै एह ॥ ३४१ ॥
सो इह अगम पहुंचै न खग्ग ।
गहै चढ़ै कवन जहं इक मग्ग ॥
अरु भरे दोय भण्डार अन्न ।
दस लक्ख कोटि दश सहस्स मन्न ॥ ३४२ ।
दस लक्ख सून मन धरे संचि ।
दीप दाय लक्ख धरि घातु खंचि ॥
घृत सहस बीस मन भर हौद ।
दोय लक्ख पैंद चिहुं गढ न कौद ॥ ३४३
विन तोल नौंन पवेत सुनच्छ ।
दस महस अमल आफू समच्छ ॥
मृग मद कपूर केसरि सुगन्ध ।
भरि रहे भौन सौंधे सुबन्ध ॥ ३४४ ॥
नहिं तोल तल लोहा प्रमान ।
वारूद शुद्ध नवलच्छ जान ॥
अरुए तो जानो सीसो सु सुद्ध ।
नव लक्ख धरयो संचय समुद्ध ॥ ३४५ ॥
इद महा वक्र गहनश गड्ढ ।
विन मग्ग सकै पच्छी न चड्ढ ॥
वड तोप सत्तरि गढ पै अचड्ढ ।

तब छुटत गोर पर्वत सुहल्ल ॥ ३५० ॥
छुटन्त गर्भ सुक्कन्त नीर ।
मनु वज्रपात सुक्कत समीर ॥
आसा सुनाम रानी सुएक ।
पतिवृत्त धर्म्म देवी सु टेक ॥ ३५१ ॥
रणधम्मनाथ सुत इक्कपूर ।
चण्ड तेज मनुं उग्गंत सूर ॥
रतने सनाम जग है विख्यात ।
चित्तौडा द्रुग्ग पालै सुनात ॥ ३५२ ॥

इत्यादि दूत के मुख स राव हम्मीर की अपार शक्ति का र्णन सुनकर अलाउद्दीन का कलेजा थर्रा उठा, परंतु बाहर से हिम्मत भरे वचनों में उसने कहा कि ।

क्या हमीर मगरूर पलक में पाय लगाऊं ।
खूनी महिमा साह उसे गहि दिल्लिय लाऊं ॥
जीति राव हम्मीर तोरि गढ़ धूरि मिलाऊं ।
इति जो न अब करू तौ न पत साह कहाऊं ॥
कलंक राज रण थंभ को इतो कियो अभिमान तिहिं ॥
कोपि साह भेजे जबैं । दशों देश फर्मान जिहिं ॥

वृद्ध पुरुषों ने बादशाह को बहुत कुछ समझाया परन्तु उसने आवेश में आकर यह प्रतिज्ञा करली कि हम्मीर के

साथ समस्त चाहान वंश को नष्ट करके ही में अन्न जल ग्रहण करूंगा।

यह सुनकर महरमखां वजीर साह सों एसे भाषे॥
चहुवानन की चात सबे अगली मुख आखे॥
पहले हसन हुसेन संवद चहुवान सुपल।
सात वेर पृथिराज गह गवरीगही मल॥
वीसलदे अरु पिथयें। जह पोर करे अजमेर हनि॥
महरमखां इम उचरे। इसो वंश चहुवानगनि॥ ३६७
गीदड सिंह शिकार साह एको मति जानों।
रणतभंवर दिस सुद्धि आप मति करो पियानों॥
यहां राव हम्मीर और रणधीर अमानों।
अरु सामन्त अनेक अधिक तैं अधिक बखानों॥
यहु दुर्ग बंक रणथम्भगढ।
यह विचार जिय लिज्जिये॥
तुम अलावदी पीर अति।
आप मुहिम्मन कीजिये॥ ३६८॥

किमा की भी न सुनकर बादशाह ने उसी वक्त समस्त देशों में फरमान भेजे और तमाम हिंदु मुसलमानों की असंख्य सेना बुलवाली गई। इधर बादशाह की वैतनीक फौज भी समस्त सजाई गई। और अपार खाद्य सामग्री भी इकट्ठी हो गई तब:—

मिश्रदेश खंधार खरे गज्जनी दल आये।
अरु काबिल खुरसान कापिपति शाह बुलाये॥
रूम श्याम कश्मीर और मुलतान सुसज्जे।
इरां तूरां कटक बलख आरब धर गज्जे॥
सब देश रुहंग फिरंग के झकड़ के सज्जे सुबल।
अल्लावदीन पती शाहके।
चढे संग टिड्डी शुदल॥ ३७१॥
चढे हिन्द के देश प्रथम सौरठ गिरनारी।
दक्षिण पूरबदेश लिये दल बद्दल भारी॥
अरु पहार के भूप और पछिम के जानों।
दशों दिशा के वीर कहां काउ नाम बखानों॥
ग्यारसे अठतीस थे।
चैत्र मास द्वितीया प्रगट।
चढे शुमाह अल्लावदी।
करी हमीर पर कटक झट॥ ३७२॥

सात लाख हिंदु राजाओं की और बीस लाख मुसलमानों की जंगी फौज तथा अठारह लाख अन्य परिकर एवं कुल ४५ लाख मनुष्य ५००० हाथी और पांचलाख घोड़े आदि अपार भीड़ भाड़ लेकर अल्लाउद्दीन ने रणथंभगढ पर चढाई की। उस समय सात लाख राजपूतों को चौहानों के खून के पिपासु देख बिद्वान अलाउद्दीन को अपार आनंद होता था और मन ही

साथ समस्त चाहान वंश को नष्ट करके ही मैं अन्न जल ग्रहण करूंगा ।

यह सुनकर महरमखां वजीर साह सों एसे भाषै ॥
चहुवानन की बात सबे अगली मुख आखै ॥
पहले हसन हुसेन सैयद चहुवान सुपेल ।
सात बैर पृथिराज गह गवरीगही मेले ॥
बीसलदे अरु विरयवे । जह पीर करे अजमेर हनि ॥
महरमखां इम उच्चरे । इसा वंश चहुवानगनि ॥ ३६७
गीदड सिंह शिकार साह एको मति जानों ।
रणथंवर दिस सुज्झि आप मति करो बिरानों ॥
यहां राव हम्मीर और रणधीर अमानों ।
अरु सामन्त अनेक अधिक तें अधिक बखानों ॥
यहु दुर्ग वंक रणथम्भगढ ।
यह विचार जिय लिज्जिये ॥
तुम अलावदी पीर अति ।
आप मुहिम्मन कीजिये ॥ ३६८ ॥

किसी की भी न सुनकर बादशाह ने उसी वक्त समस्त देशों में फरमान भेजे और तमाम हिंदु मुसलमानों की असंख्य सेना बुलवाली गई । इधर बादशाह की वैतनीक फौज भी समस्त सजाई गई । और अपार खाद्य सामग्री भी इकट्ठी हो गई तथः —

...त अलवर नाम से प्रसिद्ध है ॥ अलाउद्दीनने महिमाशाह की जातिवाले मारू-और मेवामियों को जिनोंने इसलाम धर्म स्वीकार न किया था सर्वथा नष्ट ही कर दिये । उन्होंने भी लड़ कर अपने प्राण छोड़ दिये परन्तु हिन्दु धर्म न छोड़ा । जो कायर थे सो अपना घर जमीन और धनमाल छोड़कर पहाड़ों में भाग गये या मुसलमान होगये । उस सर्वनासी समयका वर्णन है कि ।

चढ़े शाहिकोपे लुबज्जे निशानं ।
चढ़े मीर गंभीर,सत्थं सुजानं ॥
उडी रेणु आकाश सूरं न भानं ।
धरा मेरु डुल्लं सुभुल्लं दिशानं ॥
सहैं शेष भारं न पारं न पावे
डगं कीं ह दिग्गज अग्गं सुघावे ॥
मनो छांडि वेला समुद्दं उमंडे ।
किये हैदलं पयदलं रत्थतंडे ॥ २७४ ॥
चढ़े सत्तलक्खं सुहिन्दु सपन्नं ।
सबै बीस लक्खं मलेच्छं अयन्नं ॥ २७५ ॥
सबै सैन सज्जी चल्यो साही कोपं ॥
सबै पंच चालीस लक्खं सुधोपं ॥ २७६ ॥
तहां तीस हज्जार निसान बज्जैं ।
सुनो घोर सोरं सुनैं मेघ लज्जैं ।

मन में समझता था कि हिन्दुओं के समान मूर्खजाति दीपक लेकर ढूंढने पर भी कहीं नहीं मिलती ।

६७—सच है अगर हिन्दु भाइयों में आपस का जाति विरोध और एक दूसरे पर वैरभाव न होता तो आज हिन्दुस्थान की ऐसी दुर्दशा कभी न होती । इन्होंने सवाई और पंच हजारी मनसबाआदि पदवियों के लालचमें फंसकर अपनी अज्ञानता से अपने ही देशको सर्वथा नष्ट कर दिया । अपने जाति और स्वदेशी भाइयों के खून में हाथ धोकर खुद कमजोर होगये. और सदा के लिये दासत्व की शृंखला में जकड़ कर बंधे गये । अब ऐसी आशा भी नहीं रही कि ये पराधीनता की बेड़ियां टूट सके । जो क्षत्रिय जातियां आफत के जमानोंमें अपने धर्म से पतित होकर जात्यन्तर में मिलगई थी अगर उन्होंका पुनरुद्धार होजाय तो उम्मेद है कि देशका कुछ भला हो । जिस समय बादशाही दल बल राव हम्मीरजी की शरहद में पहुंचा उस समय वहां की प्रजा में बड़ा भारी कोलाहल मच उठा । अलाउद्दीन के आज्ञानुसार सब सैनिक सिपाही प्रज को नाना प्रकार के कष्ट देने लगे । लाखों पुराणे वासी राजपूत जमीदारों को मुसलमान बनाया गया जो इस समय मेव नाम से प्रसिद्ध है । मेव और मेवासी ये प्राचीन राजपूतों की जाति है । उस समय इस देसमें इन्हीं का राज्य था । और इसी कारणसे इस देशको मेवास या मेवात भी कहते थे । जो इस समय में

रियासत अलवर नाम से प्रसिद्ध है ॥ अलाउद्दीनने महिमाशाह
की जातिवाले मारू और मेवामियों को जिनोंने इसलाम धर्म
स्वीकार न किया था सर्वथा नष्ट ही कर दिये। उन्होंने भी लड़
कर अपने प्राण छोड़ दिये परन्तु हिन्दु धर्म न छोड़ा। जो
कायर थे सो अपना घर जमीन और धनमाल छोड़कर पहाड़ों
में भाग गये या मुसलमान होगये। उस सर्वनासी समयका
वर्णन है कि।

चढे शाहिकोपे सुवज्जे निशानं।
चढे मीर गंभीर, सत्थं सुजानं ॥
उडी रेणु आकाश सूरं न भानं।
धरा मेरु डुल्लै सुभुल्लै दिशानं ॥
सहै शेष भारं न पारं न पावै
डगं कौं दिग्गज अग्गं सुध्यावै ॥
मनो छाँडि वेला समुद्दं उमंडै।
किये हैदलं पयदलं रत्थतंडं ॥ ३७४ ॥
चढै सत्तलख्खं सुहिन्दु सयन्नं।
सबै वीस लख्खं मलेच्छं अयन्नं ॥ ३७५ ॥
सबै सैन सज्जी चढ्यो साही कोपं
सबै पंच चालीस लख्खं सुआपं ॥ ३७६ ॥
तहां तीस हज्जार निसान वज्जैं।
सुनो घोर सोरं सुनैं मेघ लज्जैं।

शक्ता उस समय बैराटदेश को लूटने के लिये गया हुआ था। जब उसको यह खबर पहुंची कि अलाउद्दीन मेवात को विध्वंस कर रहा है तो उसने उसी दम आकर रातमें ही बादशाह की फौज को लूटनी शुरु करदी।

जब भगी सेनपति शाहकी।
लूटी जो ऋद्धि अपार।
तब महरमखां साहसों।
अर्जकरी तिहींवार ॥ ४०० ॥

हजरतिदेश हमीरको।
निपट अटपटो जानि।
भिल्ल काल तस्कर सबै।
अर किरात खुमानि ॥ ४०१ ॥

वीरमानी शक्ता पाकुल ने बादशाह को कहला भेजा कि यदि आप जबर्दस्ती से हिन्दुओं को मुसलमान बनाओगे तो मैं इसी प्रकार दिल्ली को भी लूट लूंगा। यह सुन बादशाह घबराया और हिन्दूधर्मको नष्ट नहीं करनेकी प्रतिज्ञा ले मेवात से निकलगया। यह देख फिर चारण कविने कहा कि—

सक्ता तु शत बादयो राख्यो मांन मेवातको।
फिर फिर घूमर देय :
बलकाक्यो बैराट को ॥ १ ॥

आहे हैं । आशा है कि वर्त्तमान अलवर नरेश भी इस पतित पावन कार्य्य में मदद देकर हिन्दूधर्म के साथ २ अपना क्षात्र बल बढ़ावें ॥

जो सात करोड़ हिन्दू जबरदस्ती से मुसलमान बना लिये गये थे अगर उन्हीं को पीछा गले लगा लिया जावे तो सहज में हिन्दुस्थान का उद्धार होसकता है ॥ मेवात से निकले के बाद में सहर मलहारणे आकर बादशाह ने फिर भयंकर जुल्म सुरु किया ।

तिही विच मलहारणो इक गढ्ढ ।
लड्डे राव के राव तं जोर दढ्ढ ॥
दिना तीन लों सो कियो जुद्ध भारी ।
फने बादशाहको भई वनकारी ॥ ३८६ ॥

किलेदार रावत् जातिका क्षत्रिय था । आजकल यहजाति जैपुर राज्य में चोकीदारी के काम पर नीयत है । अब यह लोग क्षत्रिय धर्म से बिलकुल पतित होचुके हैं । जमीदारों के समान इन्हों में भी घोर अविद्यान्धकार फैला हुआ है । सूद्रों के घर की कच्ची रसोई खाने में इन्हों को बिल्कुल सूग नहीं आती । कलालों के प्याले के भी यह लोग अपना मुंह जा टेकते हैं कि जिसमें ढेड चमार रेगर कोली खटीक आदि सबही नीच जाति के लोग सराब पीते हैं । जिस के घर में चोरी को गये चाहे वह नीच जाति का भी क्यों न हो अगर

आग्रह है। आशा है कि वर्तमान अलवर नरेश भी इस पतित पावन कार्यमें मदद देकर हिन्दूधर्म के साथ २ अपना चात्र बल बढ़ावें॥

जो सात करोड़ हिन्दू जबरदस्ती से मुसलमान बना लिये गये थे अगर उन्हों को पीछा गले लगा लिया जावे तो सहज में हिन्दुस्थान का उद्धार होसकता है॥ मेवात से निकले के बाद में सहर मल्लारणे आकर बादशाह ने फिर भयंकर जुल्म सुरु किया।

तिही बिच नलहारणो इक गड्ड।
लड़ें राव के राव तं जोर दड्ड॥
दिना तीन लों सो कियो जुद्ध भारी।
फने बादशाहको भई बनकारी॥ ३८३॥

किलेदार रावत् जातिका क्षत्रिय था। आजकल यहजाति जैपुर राज्य में चौकीदारी के काम पर नीयत है। अब यह लोग क्षत्रिय धर्म से बिलकुल पतित होचुके हैं। जमींदारों के समान इन्हों में भी घोर अविद्यान्धकार फैला हुआ है। सूद्रों के घर की कच्ची रसोई खाने में इन्हों को बिल्कुल सूग नहीं आती। कलालों के प्याले के भी यह लोग अपना मुंह जा टेकते हैं कि जिसमे ढेड चमार रेगर कोली खटीक आदि सबही नीच जाति के लोग सराब पीते हैं। जिस के घर में चोरी को गये चाहे वह नीच जाति का भी क्यों न हो अगर

उस में दही का पात्र मिल जावे तो ये लोग उस को अच्छा शकुन समझकर खुशी से खाते हैं । चोरी करने में यह लोग कुछ फायदा समझते हैं लेकिन इस बुरे कर्म से अपनी जाति की कितनी बडी दुर्दशा होरही है इसका विचार करनेवालाभी इन्हों में अभी तक नहीं जन्मा । इन्ही के कारण से परदेशों में बिचारे गरीब जमीदार भी मारे २ फिरते हैं परन्तु उन्हों को कहीं अच्छी नौकरी और अच्छास्थान भी नहीं मिलता। मैंने एक रावत सरदार से पूंछा था कि यदि आप लोग राज पूत हैं तो फिर चोरियां क्यों करते हैं । इसके उत्तरमें उन्होंने कहा कि महाराज चौरीकरना तो हम क्षत्रियों का धर्म है। मैने कहा चौरी करना यह क्षत्रियोंका धर्म नहीं किन्तु बदमाश और नीच जातियों का काम है । हां यदि अनार्य लोग हिन्दू ओंकी जाति और धर्म को नष्ट करता हो तो उन्हों को लूट ने का और सर्वस्व नष्ट करदेने का क्षत्रियोंका धर्म है । अपने प्राणों की भी परवा न रखकर देशवैरियों को लूट और खोस लेना यह बहादुरी का काम है और रात को चुपके से जाकर गरीबों के दाह लगाना यह क्षत्रिय जाति के विरुद्ध कापुरुषों और कमजोरों का काम है । शिवपुराण में लिखा है कि—

वर्णाश्रम विरुद्धं च, कर्म कुर्वंति ये नराः
कर्मणा मनसा वाचा निरयेतु पतंति ते।२४। अ०१६

अर्थात् मनवचन और काया से जो कोई मनुष्य अपनी जाति और आश्रम से विरुद्ध चोरी आदि कर्म करता है वह घोर नर्क में पड़ता है और उस के जाति के लोगों की भी संसार में बुरी दशा होजाती है। व्यभिचारी तेरेपंथी साधुओं के समान चोरों की ८ दिन में दो बार हाजरी होती है परन्तु ईमान्दार राजपूतों की कोई हाजरी नहीं ले सकता। आशा है कि रावत (नयाँवासी चौकीदार) भाई इसपर खूब विचारकर अपनी बरादरी को पराधीनता की शृंखला से मुक्त करेंगे।

रावतद्वारा मल्लारणा की निरपराधी प्रजा के खूनके समाचार पाते ही हम्मीर की वंक भ्रकुटी और भी टेढ़ी हो गई। कमल के समान नेत्र अग्निशिखा से लाल हो उठे। बहु) और ओष्ट फड़कने लगे. रावजी का ऐसा आकार देख कर अभयसिंह प्रमार १ भूरसिंह राठौर २ हरिसींह बघेला ३ सादूला चौहान ४ और अजमलसींह शिहिरा ५ इन ५ सरदारों ने मीनों की तीस हजार फौज लेकर बनास नदी पर शाही फौज को रास्ते में ही रोक लिया और ऐसे पराक्रम से लड़े कि बादशाही सेना के पैर उखड़गये और बड़े २ अमीर उमरा जहां तहां भागने लगे।

जुरं आय जुद्ध नदीजो बनासं।
चढ़े लख्ख चालीस और पाँचतासं॥

पतित होकर पद दलित होरही है। अब इस जाति में कोई भी ऐसा क्षात्रियाभिमानी सच नहीं रहा कि अपने देश और जाति की गौरवता को पुनः स्थापित कर शके॥

१००—बनास नदी से उठ कर दुर्ग के पास बादशाह की अपार फौजों की अलग २ छावणियें पड़गई। जिसमें दो लाख तो व्यौपारी हिन्दु बनिये थे। एक लाख सोलह हजार मुसलमान ठेकेदार थे। चारलाख बेलदार थे। चारलाख रसोइदार थे। दो लाख घासी थे। चार लाख निमनी लगानेवाले(पहरेदार) थे। एक हजार उपर दम मरहम पट्टी करने वाले डाक्टर थे और एक हजार आदमी चिट्ठी पत्री देने वाले कासीद थे। मुख्य २ बेपारियों के और सेनाध्यक्षों के नाम से बड़े २ शहर बसगये सरपुर खलचीपुर इत्यादि एक वर्ष तक बादशाह ने तन तोड़ परिश्रम करलिया लाखों कबरें होगई लेकिन दुर्ग फते न हुआ। तब सेनापति उलगखांने अपनी सेनाके छोटे२ हिस्से कर ८४ घाटियों द्वारा प्रवेश करना सुरु किया। उसने अपने भाइ नसरतखां को तो मंडीपथ की घाटी को भेजा। और म्होलणदेवको हम्मीर की सभा में इस आशय से भेजा कि दो चार दिन तक संधी की बात चीत में उन्हें बहलाये रहें और हिन्दाघाटी के द्वार की सेना कुछ पीछी हटाली गई तो सर्व रक्षक भी निश्चिन्त होगये और फते के नगारे बजाते हुए रणथंभोर की तर्फ मुंह गये। दोनों सेनाध्यक्षों में धर्मसिंह तो

इते राव हम्मीर के पंच सूरं ।
अभयसिंह पम्मार रट्ठौर भूरं ॥ ३२६ ।
हरीसिंह बघ्घेल कुरम्मभीरं ।
चहुवान मद्दून अजमत्त सिहिरं ॥
त्रिभागे करी सेन वागें उठाई ।
मिले बीर धीरं अमीरं हठाई ॥ ३३० ॥

इस युद्ध में अलाउद्दीन के तीस हजार सिपाही डेढ सौ घोड़े और कई एक अमीर उमराव काम आए किन्तु हम्मीर के १२५ सिपाही और १० सरदार खेत रहे जिन्हों में अजमत सिहीरा मुख्य था।

९९—सिहीरा यह भारत के प्राचीन निवासी चन्द्रवंशीय (चान्द्रा) राजपूतों की एक शाखा है। सांच नगरी जिसको इस समय अंग्रेज़ का रामगढ बोलते हैं शिहीरों की राजधानी थी इन्हों में राव मेदानामक शिहीरा बड़ा धर्मिष्ट और दानेश्वरी हुआ है। कहते हैं कि उसके नाम से डूबते हुए जहाज तिरजाते थे। भयंकर रोग नष्ट होजाते थे। अपुत्रियों के पुत्र हो जाते थे याचना करने पर कवीश्वर और ब्राह्मणों के लिये इन्होंके पास कोइ वस्तु अदेय नहीं थी। स्वार्थपरायण और विश्वासघातक कछवाओं ने इन्हों को मारकर नष्ट करदिया। इन्हों की बड़ी बड़ी प्राचीन महिलायतों के खंडरों को आजदिन तक भी राम गढ का पहाड़ अपनी अचल गोद में लेकर बैठा हुआ है॥ दुश्मनों के दबाव से सिहिरा जाति भी अपने शिखर स्थान से

आप महिमाशाह को बादशाह के हवाले करदें अथवा एक लाख मोहर चार हाथी तीनसौ घोड़े भेट कर अपनी बेटी अलाउद्दीन को ब्याहदें तो वह आप से प्रशन्न हो संधि कर दिल्ली को चला जायेगा। हम्मीर इस अपमानकारी संदेश से बहुत ही क्रुद्ध हुआ और उसने मोल्हणदेव से कहा यदि तुम भेजे हुए दुत नहीं होते तो जिस जीभ से तुमने यह अपमान सूचक बातें कही है वह काटली गई होती। उसी दूत के साथ हम्मीर ने यह फर्मान लिख भेजा कि मैं जानता हूं कि तू बादशाह है परंतु मैं भी उसी चहुआन कुलमें से हूं जिसने सदैव मुसलमानों के दांत खट्टे किए हैं। ख़्वाजा मीरां पीर का एक लाख अस्सीहजार दल बल अजमेर में चहुआनोंने ही खपाया था। उसी वंशमें पृथ्वीराज ने सातबार शाहाबुद्दीन को पकड़ चूड़ी पहनाकर छोडदिया। बस मैं भी उसी चहुआनकुलमें हूं। यवनराज तु निश्चय रख मेरी टेक यह है के सूर्य चाहे पूर्व से पश्चिम में उगने लगे। समुद्र मर्यादा छोडदे। शेष पृथ्वी को त्यागदे। अग्नि शीतल होजाय। परंतु राव हम्मीरका अटल पण नहीं टल सकता। हां यदि अलाउद्दीन उक्त सब चीजें हमारे को दें और साथ में उतनेही खड्ग आघात हमीर के हाथ के स्वीकार करले तो महिमाशाह को पासकता है।

लिखें हमीर साहि सब बंचे।
कारमन कोप जंगको नंचे॥

लूट का माल ले अपने घर पहुंचे और भीमसिंह हिन्दावतकी घाटी में पहुंचे उसी वक्त बादशाह की फौज ने चारों तर्फ से आकर भयंकर वेग से आक्रमण करदिया। सहस्रों प्राचीन निवासी सैनिकों सहित सेनापति भीमसिंह खेत रहगया, यह सुन हम्मीर ने धर्मसिंह को धिक्कारा और उसके पदपर भोजदेवको नियुक्त करदिया। इतने में बादशाह की फौज भी आ पहुंची। दोनों पक्ष अपनी २ घातमें थे। मुसलमानोंने समझा कि हम आक्रमण करनेके लिये धूर्तता से उत्तम स्थिती पागये। उधर राजपूतों नें विचारा कि शत्रु अंतरभागमें इतनी दूर बढ़आएहैं कि वे अब हम से किसी प्रकार भाग नहीं सकते। अंग तेलंग मगध मैसूर, कलिंग, बंग, भोट मेडपाट, पंचाल, थमिम, भिल्ल नैपाल तथा दाहल के राजा और कुछ हिमालय के सरदार अपना, २ दल आक्रमणकारी सेनाओं में भरने को लाए। इस बहुरंगिनी सेनामें कुछ लोग ऐसे थे जो युद्धदेवी के प्रेम से आए थ और कुछ ऐसे थे जो लूट की चाह से आक्रमण कारियों के दलमें भरती हुए थे। कुछ लोग केवल उस घमसान युद्ध को देखने के हेतू ही आए हुए थे। हाथी घोड़ों रथों और मनुष्यों की इतनी कमाभर्सा थी कि भीड़ में कहीं एक तिल रखने की भी जगह नहीं थी। राजा का आज्ञा होने पर दूतने दुर्गमें प्रवेश पाया। शिष्टाचार के उपरांत उस नउम संदेश का कहा जो लेकर आया था। निदान उसने कहा यदि

एकादशीजु पुष्पको ।
साको पूरण होई ॥ ४२९ ॥
यह साको अरु जस अमर ।
फवे तोहि कलिमांहि ॥
क्षत्री का जुग जुग धरम ।
यह समान कछु नाहिं ॥ ४३० ॥
हरष सहित हम्मीर जब ।
ईश चरण दिय सीस ॥
तब मंदिरसे निकसि के करीजुद्धकों रीस ॥ ४३१ ॥
राव हमीर दिवान कराय ।
मंत्रि मित्र बंधु सब आये ॥
सूर वीर रावत भड़ बंके ।
स्वामिधर्म तन मन लिन हंके ॥ ४३२ ॥

१०१—रावत और भड़ ये भारत के पुरातनवासी क्षत्रियों की जातियां हैं। विश्वकोष में लिखा है कि भड़ जाति के राजपूतों ने अयोध्या में भी कई पीढियों तक राज्य किया है। टॉड राजस्थान में लिखा है कि भड़गोत्र मीनजाति के राजपूतों की एक शाखा है पूर्वकालमें यमुना से लूणी तक इन्हों का राज्य था। मोरेल के तीरवर्ती प्रांतों में पंचभड़ अति प्रसिद्ध हुए हैं इसही कारण इस प्रदेश का नाम पंचभड़ा पड़ा था, जिसको अब पचवारा बोलते हैं। अजमेर प्रांत के सर्व भड़गोत्रीय राज-

तीन सहस निसान सुवज्जे ।
धर अम्बर मग सोर सुगज्जे ॥ ४१७ ॥
रणतभँवर चहू ओरसुधरिव ।
दल न समात पुहमिं सबहरिव ॥ ४१८ ॥

रणथंभ की सेना भी युद्ध के लिए सुसज्जित होने लगी। बड़ी योग्यता और पराक्रम के साथ सेनापति भिन्न २ स्थानों की रक्षा के हेतु नियुक्त हुए। दुर्ग की दीवारों पर रक्षकों को धूप से बचाने के लिए इधर उधर डेरे गाडे गए। कई स्थानों पर उबलता हुआ तेल और राल रक्खी गई कि यदि आक्रमण कारी निकट आनेका साहस करे तो उन्हों पर छोडदिया जांय। उपयुक्तस्थानों पर तोपें चढादी गई। अंत में मुसलमानी सेना भी दुर्ग के सामनेही आगई तब हमीरने शिवालय में जाकर पूजन किया और स्तुति कर के जिस समय रावजी ध्यान में मग्न थे, उसी समय शिवालय में आकाशवाणी हुई कि–

कहै संभु हम्मीर सुन ! कीरति जुग जुग तोर ॥
चौदह वर्षजु साहिसों। लरत विघ्न नहीं ओर ॥ ४२८ ॥
वार अरु है वरषपरि । सुदि असाढ सुनि साई ।

रणधीरजी के सन्मुख आया किंतु रणधीरजी ने उसे भी मार गिराया। अजमतखां के गिरते ही मुसलमानी सेना के पैर उखड़ पड़े। इस युद्ध में मुसलमान सेना के अस्सी हजार अस्त्रधारी खेत रहे और राव रणधीर के एक हजार जवान मारे गए। महम्मदमीर के मारे जाने पर जब मुसलमानी फौज भागने लगी तब अलाउद्दीन ने वादितखां को सेना नायक बनाया। वादितखां ने बड़े धैर्य और दृढ़ता से उत्तेजनाजनक वाक्य कह कर बिखरी हुई फौज को बटोर कर राजपूत वीर राव रणधीर का सामना किया किन्तु अन्त में उसे भी भूत सेनानायकों के पास जाना पड़ा। वादितखां के मरते ही सारी सेना भाग निकली। दूसरे दिन हम्मीर से खुद अलाउद्दीन ने युद्ध रोपण का वचन दिया। प्रातः कृत्य होने के अनन्तर ही अत्यन्त भीषण और कराल युद्ध हुआ। इन दो दिनों में मुसलमानों के कम से कम ८५००० आदमी मारे गये। अलाउद्दीन स्वयं निस्तेज होकर पीर पैगम्बरों को पुकारने लगा! दोनों योद्धाओं के बीच कुछ दिनों विश्राम करना निश्चित होने पर लड़ाई कुछ काल के लिये बन्द हुई।

१०२—एक दिन वजीर महम्मदखां ने बादशाह से कहा कि इस प्रकार सन्मुख युद्ध करके जय पाना अति कठिन है इसलिये कुछ सेना यहां छोड़ कर छायागढ़ के किले पर चढ़ाई की जाय। उस किले में राव रणधीर के परिवार के सब लोग

सुनते ही दोनों राज कुमारों का मुख प्रसन्नता से प्रफुल्लित हो उठा। उन्होंने वीर रस में उन्मत होकर मदान्ध मृगराज की भांति झूमते हुए रावजी से कहा कि अब तक आपने परिश्रम किया अब तनिक हमारा भी पराक्रम देख लीजिये, यों कह कर दोनों राज कुमार रनवास में गए। रानी आसुमती के चरण छूकर वे बोले कि हे माता आप कृपा कर जयलक्ष्मी के लिए हमारे मस्तक पर मौर बांध कर हमें युद्ध करने का आशीर्वाद दीजिए। दोनों राज कुमारों के ऐसे वचन सुनकर आसुमती ने भी सुतस्नेह से सने हुए वाक्यों से संबोधन करते हुए उन्हें कलेजे से लगा लिया और अपने हाथों से उन्हों के शीश पर मौर बांधा और केसरी बागा पहिना कर उन्हें युद्ध में जाने को बिदा किया। यह सुनकर बादशाह ने मीर जमाल को सेनाध्यक्ष बनाया। इधर से दोनों राज कुमार केसरिया बाना पहने शीश पर मुकुट हाथों में रणकंकण बांधे तुरंगों पर सवार हो सोलह हजार राजपूतों की सेना के बीच में ऐसे भले मालुम देते थे मानों रणबांकुरे देवताओं के दल में इन्द्र और कुबेर सुशोभित हो रहे हों। दोनों वीर सेना सहित उज्वल नेजे और खड्ग चमकाते हुए मुसलमान सेना में इस प्रकार धँस पड़े जैसे काले २ बद्लों में बीजली विलीन हो जाती है। इधर अलाउद्दीन से उत्तेजित किए हुए यवनदल ने उन राजकुमारों को घेर लिया और जमालखां बड़े वेग से उन दोनों

रहते हैं। शायद अपने परिवार पर भीड़ पड़ी देख राव रणधीर आपके शरण में आजाय तो फिर अपनी जय होने में कोई सन्देह नहीं है। निदान वजीर की बात मान कर बादशाह ने वैसा ही किया, किन्तु पांच वर्ष व्यतीत हो गए और छाणगढ़ हाथ न आया। वरना इसी में एक नवीन बात यह निकल पड़ी कि दिन भर तो हम्मीरजी घोर युद्ध कर यवनों का संहार करते थे और रात को रणधीर का धावा पड़ता था कि जिससे शाही सेना अत्यन्त ही व्याकुल हो उठी। बड़े २ अमीर उमराव मिट्टी के मोल मारे जाने लगे। जब अब्दुलकरीम, करमखां, युसफजंग आदि बड़े २ बुद्धिमान योद्धा मारे गए तब अलाउद्दीन घबडा उठा और कुछ दिनों के लिए युद्ध बन्द कर फिर से अमीर उमरावओं की सभा करके अपने उद्धार का उचित उपाय विचारने लगा।

१०३—इसी समय राव रणधीरजी की सलाह से सब हकीकत लिखकर राव हम्मीरजी ने चित्तौड से अपने दोनों कुंवरों को बुलाया तो वे तीस हजार राठौड आठ हजार चहुआन और पांच हजार परमार (मारण) राजपूतों की सेना लेकर रणथंभ को चले आए। दोनों राज कुमारों को देख कर राव हम्मीरजी ने प्रसन्नता पूर्वक उन्हें गले लगा लिया और मीर महिमा को शरण में रखने के कारण अलाउद्दीन से रार बढ़ जाने का हाल भी विधिवत् वर्णन कर सुनाया, जिसके

सुनते ही दोनों राज कुमारों का मुख प्रसन्नता से प्रफुल्लित हो उठा। उन्होंने वीर रस में उन्मत होकर मदान्ध मृगराज की भांति झूमते हुए रावजी से कहा कि अब तक आपने परिश्रम किया अब तनिक हमारा भी पराक्रम देख लीजिये, यों कह कर दोनों राज कुमार रनवास में गए। रानी आसुमती के चरण छूकर वे बोले कि हे माता आप कृपा कर जयलक्ष्मी के लिए हमारे मस्तक पर मौर बांध कर हमें युद्ध करने का आशीर्वाद दीजिए। दोनों राज कुमारों के ऐसे वचन सुनकर आसुमती ने भी सुतस्नेह से सने हुए वाक्यों से संबोधन करते हुए उन्हें कलेजे से लगा लिया और अपने हाथों से उन्हों के शीश पर मौर बांधा और केसरी बागा पहिना कर उन्हें युद्ध में जाने को विदा किया। यह सुनकर बादशाह ने मीर जमाल को सेनाध्यक्ष बनाया। इधर से दोनों राज कुमार केसरिया बाना पहने शीश पर मुकुट हाथों में रणकंकण बांधे तुरंगों पर सवार हो सोलह हजार राजपूतों की सेना के बीच में ऐसे भले मालुम देते थे मानों रणबांकुरे देवताओं के दल में इन्द्र और कुबेर सुशोभित हो रहे हों। दोनों वीर सेना सहित उज्वल नेजे और खड्ग चमकाते हुए मुसलमान सेना में इस प्रकार धँस पड़े जैसे काले २ बद्लों में बीजली विलीन हो जाती है। इधर अलाउद्दीन से उत्तेजित किए हुए यवनदल ने उन राज-कुमारों को घेर लिया और जमालखां बड़े वेग से उन दोनों

रहते हैं। शायद अपने परिवार पर भीड़ पड़ी देख राव रण-धीर आपके शरण में आजाय तो फिर अपनी जय होने में कोई सन्देह नहीं है। निदान वजीर की बात मान कर बादशाह ने वैसा ही किया, किन्तु पांच वर्ष व्यतीत हो गए और छाणगढ़ हाथ न आया। वरना इसी में एक नवीन बात यह निकल पड़ी कि दिन भर तो हम्मीरजी घोर युद्ध कर यवनों का संहार करते थे और रात को रणधीर का धावा पड़ता था कि जिसमे शाही सेना अत्यन्त ही व्याकुल हो उठी। बड़े २ अमीर उमराव मिट्टी के मोल मारे जाने लगे। जब अब्दुलकरीम, करमखां, यूसफजंग आदि बड़े २ बुद्धिमान योद्धा मारे गए तब अलाउद्दीन घबड़ा उठा और कुछ दिनों के लिए युद्ध बन्द कर फिर से अमीर उमरावों की सभा करके अपने उद्धार का उचित उपाय विचारने लगा।

१०३—इसी समय राव रणधीरजी की सलाह से सब हकीकत लिखकर राव हम्मीरजी ने चित्तौड से अपने दोनों कुंवरों को बुलाया तो वे तीस हजार राठौड आठ हजार चहुआन और पांच हजार परमार (मारण) राजपूतों की सेना लेकर रणथंभ का चले आए। दोनों राज कुमारों को देख कर राव हम्मीरजी ने प्रसन्नता पूर्वक उन्हें गले लगा लिया और मीर महिमा को शरण में रखने के कारण अलाउद्दीन से रार बढ़ जाने का हाल भी विधिवत् वर्णन कर सुनाया, जिसके

सुनते ही दोनों राज कुमारों का मुख प्रसन्नता से प्रफुल्लित हो उठा। उन्होंने वीर रस में उन्मत होकर मदान्ध मृगराज की भांति झूमते हुए रावजी से कहा कि अब तक आपने परिश्रम किया अब तनिक हमारा भी पराक्रम देख लीजिये, यों कह कर दोनों राज कुमार रनवास में गए। रानी आसुमती के चरण छूकर वे बोले कि हे माता आप कृपा कर जयलक्ष्मी के लिए हमारे मस्तक पर मौर बांध कर हमें युद्ध करने का आशीर्वाद दीजिए। दोनों राज कुमारों के ऐसे वचन सुनकर आसुमती ने भी सुतस्नेह से सने हुए वाक्यों से संबोधन करते हुए उन्हें कलेजे से लगा लिया और अपने हाथों से उन्हों के शीश पर मौर बांधा और केसरी बागा पहिना कर उन्हें युद्ध में जाने को विदा किया। यह सुनकर बादशाह ने मीर जमाल को सेनाध्यक्ष बनाया। इधर से दोनों राज कुमार केसरिया बाना पहने शीश पर मुकुट हाथों में रणकंकण बांधे तुरंगों पर सवार हो सोलह हजार राजपूतों की सेना के बीच में ऐसे भले मालुम देते थे मानों रणबांकुरे देवताओं के दल में इन्द्र और कुबेर सुशोभित हो रहे हों। दोनों वीर सेना सहित उज्वल नेजे और खड्ग चमकाते हुए मुसलमान सेना में इस प्रकार धँस पड़े जैसे काले २ बादलों में बीजली विलीन हो जाती है। इधर अलाउद्दीन से उत्तेजित किए हुए यवनदल ने उन राजकुमारों को घेर लिया और जमालखां बड़े वेग से उन दोनों

राजकुमारों पर टूटा । यह देख राव हम्मीरजी ने वीर शङ्खधर को कुंमारों की सहायता के लिए भेजा । इस पर इधर से अरबी फौज का धावा हुआ । राजपूत और मुसलमान सेना में इस प्रकार विकट मार होने लगी कि किसी को अपना बिगाना न सूझता था । इसी समय जमालखां ने अपना हाथी राजकुमारों के सामने बढ़ाया । तब वाल्हनसिंह कुंमार ने तलवार का ऐसा हाथ मारा कि एक ही हाथ में लोहे का टोप कटके मीर जमाल की खोपड़ी के दो टूक हो गए । हाथी पर से जमाल को धड़ाम से गिरता देख बालमखां ने कुंमारों पर धावा किया । इधर से वीर सङ्खोदर ने बढ़कर उसको रोका निदान सायङ्काल तक बराबर लोहा भरता रहा । दोनों कुंमार अपनी समस्त १६००० सेना सहित स्वर्गगामी हुए । इस युद्ध में मुसलमानी फौज के ७१००० योधा खेत रहे ।

१०४–इस प्रकार दोनों राज कुमारों के मारे जाने पर राव रण धीरने क्रोधित होकर किलेपर से आग बरसाना आरंभ करदी । तब बादशाह ने कहला भेजा कि आप क्यों जान बुझकर जान देने पर उतारु हुए हैं । ऐसे इस झगड़े का अन्त नहोगा । यदि आप राव हम्मीरजी को समझाकर महिमाशाह को मेरे पास भिजवादें तो आप और रावहम्मीरजी सुख से राज्य करें हम दिल्ली चले आयेंगे । परन्तु रणधीर ने केवल यही उत्तर दिया कि विपय सुखकी लालसा व मृत्यु के भय से डर के

अपना धर्म छोड़ देना यह क्षत्रियों का धर्म नहीं है। इस प्रकार कोरा उत्तर पाकर अलाउदीन ने भी अपनी फौज को छाण के किलेपर एकदम आक्रमण करने की आज्ञादी बादशाह का हुकम पाते ही मुसलमानी फौजने टिड्डीदल की तरह उमड कर किलेको चारों ओर मे घेर लिया और किले पर से चलते हुए गोले गोली बाण बर्छों की घोर बौछार की कुछ भी परवाह न कर किलेपर चढही गये। मुसलमानी सेना जब किले में धमपड़ी तब राजपूत लोग सर्वथा प्राणों का मोह छोड़कर तलवार से ही काम लेने लगे। रेलापेल में बादशाह के निज पेशका ने राव [illegible] तलवार के सामने आने की हिम्मत की किन्तु वीर रणधीर के एक ही वार में उसके जीवन को वारा न्यारा हो गया, तब उसके सहकारी ५० रूमी सरदारों ने रणधीरजी को घेर लिया राव रणधीरजी ने इन पचासों योद्धाओं सहित उनके मालिक रूमी सरदार को भी मार ही गेरा। इस प्रकार दिनभर मार काट होते हुए राव रणधीर सहित ३०००० राजपूत वीर उस किले में थे सब के सब काम आए। और चै० शु० ६ शनी को छाणगढ़ बादशाह के हाथ आया। तब एक हजार राजपूतानी स्त्रियां स्वयं जल कर भस्म हो गई। इस युद्ध में शाही फौज के दो बड़े २ सर्दार और एक लाख रूमी सैनिक खेत रहे जिन्हों की अगणित कबरें आज भी छाण के पास मौजूद हैं। इस भयङ्कर युद्ध का वर्णन कवि के वचनों में यो है—

राजकुमारों पर टूटा । यह देख राव हम्मीरजी ने वीर शङ्खधर को कुमारों की सहायता के लिए भेजा । इस पर इधर से अरबी फौज का धावा हुआ । राजपूत और मुसलमान सेना में इस प्रकार विकट मार होने लगी कि किसी को अपना बिगाना न सूझता था । इसी समय जमालखां ने अपना हाथी राजकुमारों के सामने बढ़ाया । तब चाल्हनसिंह कुमार ने तलवार का ऐसा हाथ मारा कि एक ही हाथ में लोहे का टोप कटके मीर जमाल की खोपड़ी के दो टूक हो गए । हाथी पर से जमाल को धड़ाम से गिरता देख बालमखां ने कुमारों पर धावा किया । इधर से वीरे सङ्गोदर ने बढ़कर उसको रोका निदान सायङ्काल तक बराबर लोहा भरता रहा । दोनों कुमार अपनी समस्त १६००० सेना सहित स्वर्गगामी हुए । इस युद्ध में मुसलमानी फौज के ७१००० योधा खेत रहे ।

१०४—इस प्रकार दोनों राज कुमारों के मारे जाने पर राव रण धीरने क्रोधित होकर किलेपर से आग बरसाना आरंभ करदी । तब बादशाह ने कहला भेजा कि आप क्यों जान बुझकर जान देने पर उतारु हुए हैं । ऐसे इस झगड़े का अन्त नहोगा । यदि आप राव हम्मीरजी को समझाकर महिमाशाह को मेरे पास भिजवादें तो आप और रावहम्मीरजी सुख से राज्य करें हम दिल्ली चले जायेंगे । परन्तु रणधीर ने केवल यही उत्तर दिया कि विषय सुखकी लालसा व मृत्यु के भय से डर के

अपना धर्म छोड़ देना यह क्षत्रियों का धर्म नहीं है। इस प्रकार कोरा उत्तर पाकर अलाउदीन ने भी अपनी फौज को छाण के किलेपर एकदम आक्रमण करने की आज्ञादी बादशाह का हुकम पाते ही मुसलमानी फौजने टिड्डीदल की तरह उमड कर किलेको चारों ओर मे घेर लिया और किले पर से चलते हुए गोले गोली बाण बर्छों की घोर बोछार की कुछ भी परवाह न कर किलेपर चढही गये। मुसलमानी सेना जब किले में धमपड़ी तब राजपूत लोग सर्वथा प्राणों का मोह छोड़कर तलवार से ही काम लेने लगे। रेलापेल में बादशाह के निज पेशका ने राव ... तलवार के सामने आने की हिम्मत की किन्तु वीर रणधीर के एक ही वार में उसके जीवन का वारा न्यारा हो गया, तब उसके सहकारी ५० रुमी सरदारों ने रणधीरजी को घेर लिया राव रणधीरजी ने इन पचासों योद्धाओं सहित उनके मालिक रुमी सरदार को भी मार ही गेरा। इस प्रकार दिनभर मार काट होते हुए राव रणधीर सहित ३०००० राजपूत वीर उस किले में थे सब के सब काम आए। और चै० शु० ६ शनी को छाणगढ़ बादशाह के हाथ आया। तब एक हजार राजपूतानी स्त्रियां स्वयं जल कर भस्म हो गई। इस युद्ध में शाही फौज के दो बड़े २ सर्दार और एक लाख रूमी सैनिक खेत रहे जिन्हों की अगणित कबरें आज भी छाण के पास मौजूद हैं। इस भयङ्कर युद्ध का वर्णन कवि के वचनों में यो है—

चढे साहिदल विपुल जब छे किव गढ रणधीर ।
तब चहूआन रिसाय के सन्मुख,जुडे सुवीर ॥

रणधीर चढ़े करि कोप मनं ।
सब सामत सूर सजे अपनं ॥
गजराजन उप्पर ढंबरयं ।
उछल लगिवीर सु अंबरयं ॥ ५६३ ॥
बहु चञ्चल वाजिसु वग्ग लियं ।
किय अग्ग सु पैदल लाग कियं ॥
गढतैं बहु भांति सु तोप चली ।
पतिशाह समंत सु कोप चली ॥ ५६४ ॥
रणधीर सुबन्धन दुर्ग कियं ।
करि मंगल विप्रन दान दियं ॥
रवि को परनाम सु कीन तबै ।
कर जोरि सु आयसु मांगि जबै ॥ ५६५ ॥
अरु राव हम्मीर जुहार कियं ।
हर्ष चहुवान सुमोद हियं ॥
बहु दुंदुभि ढोल सुभेरी बजै ।
कसि आयुध मायुध वीर सजै ॥ ५६६ ॥
हलका करि वीर चढे दल पैं ।
मनु राघव कोप,कियो खल पैं ॥
उतसाहि हुक्म कियो रिस में ।

सब सैन जु आय जुरयो छिन में ॥ ५६७ ॥
विफरं सब वीर सुधीर मनं ।
सब स्वामी सु धम्म सु कीन पनं ॥
दुहूं ओर सु तोप सु कोपि छुटे ।
गढ कोटन कंगूर पार फुटे ॥ ५६८ ॥
वरषे धर आगि सु धूम उठी ।
सुर अंबर भुमि कराल वुठी ॥
वहु गोलन गोलन गोल परे ।
गजराजन सों गजराज जुरे ॥ ५६६ ॥
हय सोंहय पयदल पयदल सों ।
जुरिये वहु जोध महा वल सो ॥
वहु बान दुहुं दल मांझ परे ।
धर शीश कहू कर पांव झरैं ॥ ५७० ॥
वहु शोर अंधेर सु घोर भयो ।
निसि वासर काहून ज्ञान लयो ॥
कर कुंडिय वीर कमान कसैं ।
गज बाजिन फुट्टत पार लसैं ॥ ५७१ ॥
वरषै मनु पावस वुन्द अयं ।
वहु फुट्टत पाखर कंगलयं ॥
तहां लागत सेल सुपारहियं ।
मनुश्रोत पनारन तें वहियं ॥ ५७२ ॥

चढे माहिदल विपुल जब छे किव गढ रणधीर ।
तब चहुआन रिसाय के सन्मुख जुडे सुबीर ॥ ५५२ ॥

रणधीर चढे करि कोप मनं ।
सब सामत सूर सजे अपनं ॥
गजराजन उप्पर डंबरयं ।
उछल लगिवीर सु अंबरयं ॥ ५५३ ॥
बहु चञ्चल बाजिसु बग्ग लियं ।
किय अग्ग सु पैदल लाग कियं ॥
गढतें बहु भांति सु तोप चली ।
पतिशाह समंत सु कोप चली ॥ ५५४ ॥
रणधीर सुबन्धन दुर्ग कियं ।
करि मंगल विप्रन दान दियं ॥
रवि को परनाम सु कीन तबै ।
कर जोरि सु आयसु मांगि जबै ॥ ५५५ ॥
अरु राव हम्मीर जुहार कियं ।
हर्ष चहुवान सुमोद हियं ॥
बहु दुंदुभि ढोल सुभेरी बजै ।
कसि आयुध मायुध धीर सजै ॥ ५५६ ॥
हलका करि धीर चढे दल पैं ।
मनु राघव कोप कियो खल पैं ॥
उत्साहि हुकम कियो रिस में ।

सब सैन जु आय जुरयो छिन में ॥ ५६७ ॥
विफरं सब वीर सुधीर मनं ।
सब स्वामी सु धम्म सु कीन पनं ॥
दुहुं ओर सु तोप सु कोपि छुटे ।
गढ कौटन रुँधत पार फुटे ॥ ५६८ ॥
वरपे धर आगि सु धूम उठी ।
भुर अंवर भुमि कराल वुठी ॥
वहु गोलन गोलन गोल परे ।
गजराजन सों गजराज जुरे ॥ ५६६ ॥
हय सोंहय पयदल पयदल सों ।
जुरिये वहु जोध महा बल सो ॥
वहु वान दुहुं दल मांझ परे ।
धर शोश कहू कर पांव झरै ॥ ५७० ॥
वहु शोर अंधर सु घोर भयो ।
निसि वासर काहुन ज्ञान लयो ॥
कर कुंडिय बीर कमान कसैं ।
गज वाजिन फुट्टत पार लसैं ॥ ५७१ ॥
वरपै मनु पावस वुन्द अयं ।
वहु फुट्टत पाखर कंगलयं ॥
तहां लागत सेल सुपारहियं ।
मनुश्रोत पनारन ते वहियं ॥ ५७२ ॥

लुथ बत्थ हुए भय देख दलं ॥
रणधीर कटार सुँ पार कियो
पल खान सु तेग जु कंध दियो ॥ ५७८ ॥
शिर टुट्टत धीर उठ्यो धडयं
बल खानहि आय गह्यो करयं ॥
शिर बत्थसु हत्थ पछारि मलं
हिय पार कटार किये सुखलं ॥ ५७९ ॥
परयो खेत बकसी बड भारी
और संग दल बीस हजारी ॥
मीर पचास संग तेहि सुते
इक लख कुमि बिहुस्त पहुंते ॥ ५८० ॥
तीस सहस रणधीर सुसंगी
परे खेत वर बीर उमंगी ॥
घोर जुद्ध दोपहर सु मच्यो
एक सहसह निगज जस संच्यो ॥ ५८१ ॥
पक्ख उज्जल चैत्र सुदि तिथि नौमी शनिवार ॥
बीस हस छत्री परे अवला जरी हजार ॥ ५८४ ॥

१३५८ छाणगढ़ फतह करके अलाउद्दीन ने अपने लश्कर की बागें रणथंभगढ की ओर मोडी और कुवार सुदी ६ शनी-चार को किले के चारों तरफ घेरा डाल के दूत द्वारा कहला भेजा कि अब भी यदि महिमाशाह को मेरे पास भेजदो तो

लगि तेग फरैं दुवटुक तनं ।
जिमिशीश परैं तर तूज घनं ॥
तहँ साह सु सेन मुरक्कि चली ।
चहुवान तबै करि कोप चली ॥ ५७३ ॥
मुरकी पतिशाह तनी जो अनी ।
मुख बात सबै पतिसाह भनी ॥
करि कोप तबै पतिशाह कहै ।
मुहि जीवत सेन सुभज्जि चहै ॥ ५७४ ॥
बकसी तब आय सलाम कियं ।
लख रूमिक अप्प सुसंग दियं ॥
रणधीर तबै सनमुख चिले ।
बकसी करि कोप सु ओप मिले ॥ ५७५ ॥
गुर जैं रणधीर के सीसदई ।
तिन ढल्ल सु तुउप्प रि ओट लई ॥
बरछी रणधीर सु अंग दियं ।
धर फुट्टि सु वाजि को पार कियं ॥ ५७६ ॥
हय तें बकसी धर मॉहि पर्‌यौ ।
तहि संग सुमोर पचास गिर्‌यौ ॥
इक रूमिय धोर सु आय जुर्‌यौ ।
किरवान लिये मन नाहिं मुर्‌यौ ॥ ५७७ ॥
रणधीर हतै उत खात चलं ।

लथ बत्थ हुए भय देख दलं ॥
रणधीर कटार सुँ पार कियो
बल खान सु तेग जु कंध दियो ॥ ५७८ ॥
शिर टुट्टत धीर उठ्यो धड्यं
बल खानहि आय गह्यो करयं ॥
सिर बत्थसु हत्थ पछारि बलं
हिय पार कटार किये सुखलं ॥ ५७९ ॥
परयो खेत चकसी बड भारी
और संग दल बीस हजारी ॥
मीर पचास संग तेहि सूते
इक लख कृमि बिहस्त पहूते ॥ ५८० ॥
तीस सहस रणधीर सुसंगी
परे खेत वर वीर उमंगी ॥
घोर कंड द्वैपहर सुन च्यो
एक सहसह निगज जस संच्यो ॥ ५८१ ॥
पक्ख उजारो चैत्र सुदि, तिथि नौमी शनिवार ॥
बीस दस छत्री परे अबला जरी हजार ॥ ५८२ ॥

१३५८ छाणगढ़ फतह करके अलाउद्दीन ने अपने लश्कर का बाग रणथंभगढ़ की ओर मोड़ी और क्वार सुदी ६ शनी-वार को किले के चारों तरफ घेरा डाल कर दूत द्वारा कहला भेजा कि अब भी यदि महिमाशाह को मेरे पास भेज दो तो

उसके प्रत्येक गात में अलाउद्दीन की अपमान सूचक ध्वनि
निकलती थी। बादशाह की ओर पदाघात करके उसने एक ऐसा
विलचण कटाक्ष किया कि जिसको देख कर सभा के समस्त
चत्रियों ने एक बड़ी आनन्द सूचक ध्वनि की। यह देख
अलाउद्दीन से न रहा गया। सब अमराव उमीरों को बुलाकर
उसने कहा कि यदि कोई इस वेश्या को बाण से मार कर हम्मीर
के रंग में भंग कर दे तो मैं उसको बे सुमार दौलत दूं। यह
सुन कर महिमाशाह के भाई मीरगभरु ने कहा कि स्त्री पर
शस्त्र चलाना वीरों का काम नहीं, लेकिन श्रीमान की आज्ञा
नुसार हम्मीर के रंग में भंग कर ही देता हूं। यह कह कर
उस वेश्या के पांव में उसने एक ही ऐसा बाण मारा कि वह
उसी दम लौट पोट हो गई। और भी वीरों ने अनेक बाण
चलाए जो किले की दीवार में अभी तक लगे हुए हैं वेश्या को
गिरते देख रावजी आश्चर्य क्रोध में आकर चारों ओर देखने
लगे। तब हाथ बांध कर महिमाशाह ने अर्ज किया कि यह
बाण मेरे भाई मीरगभरु का चलाया हुआ है। श्रीमान इस
पर किसी प्रकार का खेद न करें और तनिक मेरा भी पराक्रम
देखें। यह कह कर उसने एक ही ऐसा बाण मारा कि बाद-
शाह के सिर से मुकट उड़ कर चूर चूर होगया। यह देख
बादशाह भय भ्रांत होगया। तब वजीर महरखां ने कहा कि
अब यहां ठहरना उचित नहीं है। महिमाशाह के संचालन

रवा होनी कठिन है। अब आप महिमाशाह को अलाउद्दीन के पास भेज कर सुलह करलें। सुरजन की इस बात का रावजी ने विश्वास न किया और जाकर पातल गृह में स्वयं पत्थर डाला तो चमड़ा खड़क उठा। भावी वशात् निश्चय होगया कि खजाने में अब खाद्य पदार्थ नहीं है।

हम्मीर को शोकाकुल देख महिमाशाह ने कहा श्रीमान् यदि अब आज्ञा दें तो मैं स्वयं अलाउद्दीन से जा मिलूं जिससे वह दिल्ली चला जाय। यह सुनते ही रावजी के नेत्रों से आग की चिनगारियां निकलने लगी। उन्होंने कहा महिमाशाह क्या फिर यह समय आवेगा। यदि मैं तुम्हें शरण गत को शाह के पास भेज कर रणथंभ का राज मांगा करूं तो संसार मुझे क्या कहेगा। क्या इस कायर कर्तव्य से मेरा क्षात्रिय कुल सदैव के लिये कलंकित न होगा। अब तो जो कुछ होना था हो चुका। इस तन में प्राण रहते तुम्हें मैं शत्रु के हाथ कभी न दूंगा।

इधर सुरजन ने बादशाह को पूर्ण शक्ति से आक्रमण का संकेत किया। अलाउद्दीन ने एक बार फिर भी दूत भेजा परंतु हम्मीरजी का कड़ा चूर उत्तर पाकर बादशाह अत्यन्त ही कुपित हुआ और उसी दम भयंकर वेग से आक्रमण की तैयारी की। इधर हम्मीरजी रणवास में पटरानी आसां और बेटी देवल के पास गये सब हवाल कहकर वे बोले हे प्रिये अब क्या

रानी की इस प्रकार उत्तम शिक्षा सुन रावजी के मुखारविंद पर प्रसन्नता की झलक पड़ गई। उन्होंने कहा मन्त्रि प्रिये! बस, मैं इतना ही चाहता था, इसके बाद रावजी ने खजाना खुलवा कर सब याचकों को बेसुमार दान दिया और राजकुमार नरसिंह को चितोड़ भेज सब सर्दारों से कहा कि अब धर्म के लिये प्राण न्योछावर करने का समय निकट आगया है। जिनको मृत्यु प्यारा होवे मेरे साथ रहें और जिन्हें जीवन प्यारा होवे खुशीसे अपने घर चले जांय। तब महिमाशाह ने सब सूरवीर सर्दारों की तर्फ से प्रतिनिधि स्वरूप में कहा, रावजी ऐसा कौन पुरुष कुलांगार होगा जो आपको इस समय धर्म में छोडकर अपने तुच्छ जीवन का सुख चाहेगा। देवता मनुष्य शूरवीर पुरुष किसी का भी जीवन स्थिर नहीं है एक दिन मरना [illegible]

कौन छोड़े, [illegible]

सतीस्त्री और शूरवीर पुरुष ही ऐसे हैं जो मृत्यु को सदैव आलिंगन करते हैं। दूसरे दिन अरुणोदय होते ही राव जी नित्य शौचादि से निवृत हो गंगाजल से स्नानकर सुगंधित विलेपनकर केसर सने पीले सिर धारण किए। मस्तक पर रत्न जटित मुकुट बांधा और शूरवीरों के ३६ आयुद्ध धारण कर असभर्ता पूर्वक सम्मन साहित दान दिया। इधर की फौज में राठोड़, कूमर, गौड़, तोवर, पडिहार, पारेख, पूंडीर,

रानी की इस प्रकार उत्तम शिक्षा सुन रावजी के मुखारविंद पर प्रसन्नता की झलक पड़ गई। उन्होंने कहा धन्य प्रिये! बस, मैं इतना ही चाहता था, इसके बाद रावजी ने खजाना खुलवा कर सब याचकों को बेसुमार दान दिया। और राजकुमार रत्नसिंह को चित्तौड़ भेज सब सर्दारों से कहा कि अब धर्म कि लिये प्राण न्योछावर करने का समय निकट आगया है। जिनको मृत्यु प्यारा होवे मेरे साथ रहें और जिन्हें जीवन प्यारा होवे खुशी से अपने घर चले जांय। तब महिमाशाह ने सब सूरवीर सर्दारों की तर्फ से प्रतिनिधि स्वरूप में कहा; रावजी ऐसा कौन पुरुष कुलांगार होगा जो आपको इस समय रणथंभमें छोड़कर अपने तुच्छ जीवन का सुख चाहेगा। देवता मनुष्य शूरवीर पुरुष किसी का भी जीवन थिर नहीं है एक दिन मरेंगे सब तब फिर ऐसे सुअवसर की मृत्यु को कौन छोड़े, मरने से सब डरते हैं संसार में केवल सतीस्त्री और शूरवीर पुरुष ही ऐसे हैं जो मृत्यु को सदैव आलिंगन करते हैं। दूसरे दिन अरुणोदय होते ही राव जी निशौचादि से निवृत हो गंगाजल से स्नानकर सुगंधित विलेपनकर केसर सने पीले से धारण किए। मस्तक पर रत्न जटित मुकुट बांधा और शूरवीरों के ३६ आयुद्ध धारण कर असमर्ता पूर्वक सम्मन साहित दान दिया। इधर की बाव में राठोड, कुमर, गौड, तोवर, पडिहार, पारख, पूंडार,

करूं। क्या महिमाशाह को अलाउद्दीन के पास भेजकर ही मैं अपनी प्रजा की रक्षा करूं। रावजी के ऐसे वचन सुनकर रानी ने क्रोध शोक लज्जा एवं आश्चर्य से भरे कंठ कहा, हे राजन वीर कुल शिरोमणी आज आपको बादशाह से लड़ते २ बारह वर्ष होगए। आज आपको यह कुलधर्म के विरुद्ध सलाह देने वाला कौन है। हे प्राणप्यारे यह संसार सब झूंटा है। अतएव इस संसार चक्र से संचालित दुःख और सुख भी अनित्य हैं, परंतु एक मात्र कीर्ति ही ऐसी वस्तु है कि जो इस संसार के प्रलिहत चक्र से कुचली नहीं जा सकती। हे राजन अपने हाथ से शीस काट कर देने वाले राजा जगदेव, विद्या विशारद राजा भोज, परदुःख भंजन राजा विक्रमादित्य, दान वीर कर्ण इत्यादि कोई भी इस संसार में अब नहीं हैं परंतु उनके यश की पताका अवतक अक्षय रूप से उड़रही है और सदा उड़ेगी। माहाराज धन यौवन सदैव नहीं रहता, मनुष्य ही क्या, आकाश में स्थित सूर्य और चन्द्रमा भी एक रस स्थिर नहीं रहते। जीवन मरण सुख दुःख यह सब होनहार के आधीन है और जब होनहार होनी ही है तब अपने कर्तव्य से क्यों चूकिए। श्रीमान् आप इस समय अपने पूर्व पुरुष सोमेश्वर पृथीराज जैतराव आदि की वीरता और उनकी अक्षय कीर्ति का स्मरण कीजिए और तन धन सब कुछ जाय तो जाय परन्तु शरणागत महिमाशाह और अपने धर्म को न जाने दीजिए।

रानी की इस प्रकार उत्तम शिक्षा सुन रावजी के मुखारविंद पर प्रसन्नता की झलक पड गई। उन्होंने कहा मन्त्रि प्रियेवर मैं इतना ही चाहता था, इसके बाद रावजी ने खजाना खुलवा कर सब याचकों को बेसुमार दान दिया और राजकुमार रतनसिंह को चित्तोड भेज सब सर्दारों से कहा कि अब धर्म के लिये प्राण न्योछावर करने का समय निकट आगया है। जिनको मृत्यु प्यारा होवे मेरे साथ रहें और जिन्हें जीवन प्यारा होवे खुशी से अपने घर चले जांय। तब महिमाशाह ने सब शूरवीर सदारों की तर्फ से प्रतिनिधि स्वरूप में कहा, रावजी ऐसा कौन पुरुष कुलांगार होगा जो आपको इस समय रणथंभ में छोडकर अपने तुच्छ जीवन का सुख चाहेगा। देवता मनुष्य शूरवीर पुरुष किसी का भी जीवन स्थिर नहीं है एक दिन मरेंगे सब तब फिर ऐसे सुअवसर की मृत्यु को कौन छोडे, मरने से सब डरते हैं संसार में केवल सतीस्त्री और शूरवीर पुरुष ही ऐसे हैं जो मृत्यु को सदैव आलिंगन करते हैं। दूसरे दिन अरुणोदय होते ही राव जी ने शौचादि से निवृत हो गंगाजल से स्नान कर सुगंधित विलेपन कर केसर सने पीले से धारण किए। मस्तक पर रत्न जटित मुकट बांधा और शूरवीरों के ३६ आयुद्ध धारण कर प्रसन्नता पूर्वक सम्मन साहित दान दिया। इधर की ओर से राठोड, कुमर, गौड तौवर, पडिहार पारख, पूंवार,

कड़खा गाय गाय कर सहज कठोर हृदय सूरवीरों के चित्त को उत्कर्ष देने लगे। इधर से ये सूरवीर लोग उमंग से भरे हुए आगे बढ़ते जाते थे। उधर आकाश में अप्सराओं के वृन्द के वृन्द इस समर में शत्रुओं के सम्मुख प्राण परित्याग करने वाले वीरों को अपने हृदय के हार बनाने के लिये आ रहे थे। जिस प्रकार ये वीर लोग इधर झिलम, टोप, बख्तर, दस्ताने कलंगी, तुर्रा, सरपेच, और तीर तुवक, तेगा, तलवार, तपल तोमर, तीरा, नेत, कटार, बरछी, बिछुवा, बांक, छुरी, पिस्तौल पेशकब्ज, परिघ, गदा, लोहंगी, गंडासी, बाण, गुर्ज, गोफन, मुद्गर, चक्र, परशु, शांग, सेल, लाठी फरसा, दाव आदि ३६ अस्त्र शस्त्रों से सजे हुए थे उसी प्रकार सर्वांग, सुन्दरी नव-यौवना अप्सराएँ भी सीसफूल, दामनी, आड़, ताटंक, हार, बाजूबन्द, जोसन, पौंची, पाजेब आदि गहने और नाना प्रकार की रंग बिरंगी कंचुकी, चोली चौबन्द आदि वस्त्रों को धारण कर आकाश में स्थित थीं। इस प्रकार अंग रंग राते मदमाते राजपूत वीर इधर से बढ़ और उधर से बाणों की बौछार करती हुई मुसलमान सेना भी पहाड़ों की कंदराओं में से टीड़ी दलसी निकल पड़ी। दोनों सेनाओं में प्रथम तो धुंवाधोर तोपें आदि अग्न्यास्त्रों की घोर वर्षा हुई परन्तु थोड़ी ही देर में समुद्र की तरह उमड कर एक दूसरे से खिल्ते मिल्ते होगई। उसी समय एक दम तेगा, तलवार, तबल, छुरी, बिछुवा,

बाहर से आते हुए खाद्य पदार्थ बिलकुल बन्द कर दिये गये। मनुष्यों का भी आना जाना कतई बन्द होगया। उस समय अलाउद्दीन ने अपनी सेना को (दीवान, बांके, बगसी और स्वयं बादशाह) चार विभाग कर किले को घेर लिया। हिन्दू प्रत्येक बुर्ज में से अग्नि वर्षा करने लगे। यह देख मुसलमानों ने अपने बचाव के लिये रेत से भरे बोरों का धुंस बनाया और मंजनीकों से किले पर पत्थर फेंकना आरम्भ किया। सं० १३५८ चैत्र से श्रावण तक रात दिन भयंकर लड़ाई होती रही परन्तु अन्त में यहांतक रसद की कमी हुई कि चांवल की क़ीमत किले में सोने से भी दुगुनी होगई। यह देख हमीर के बहुतसे सर्दार मुसलमानों में जा मिले तब महिमाशाह पर भी रावजी का अविश्वास हुआ। उन्होंने उन्हों को बुला कर कहा कि महिमाशाह देश की सेवा के लिये मैं तो शत्रुओं के बीच लड़कर प्राण देने को उद्यत हूं परन्तु अपने लिये अब तुम वह स्थान बताओ जहां सपरिवार आनन्द में रह सकते हो मैं कुशलता पूर्वक तुम्हें वहां पहुंचा दूं। यह सुन महिमाशाह के दिल में बड़ा खेद हुआ और बिना कुछ उत्तर दिये ही वह अपने घर लौट गया। वहां जाकर उसने तलवार द्वारा अपने समस्त कुटुम्ब को नष्ट कर दिया और हमीर के पास आकर बोला कि मेरे सब कुटुम्बी दूसरे सुरक्षित स्थान पर चले जाने को तैयार हैं परन्तु वे सब एक बार आपके दर्शनों

कटार, गुर्ज, फर्शा आदि कठोर शस्त्रों की एक दूसरे पर भयंकर मार होने लगी। क्षण मात्र में वह आमोदमय रणभूमि साक्षात करुणा और वीभत्सरस का समुद्र होगई। जहां तहां घायल और मृतक शूरवीरों के शवों के ढेर के ढेर नजर आते थे। मृतक हाथी, घोड़ों के शव, जहां तहां चट्टानों से दीखते थे। बहुतेरे नरदेह रक्त की नदी में जहां तहां बहे जाते थे और उन पर बैठकर मांस भक्षण करते हुए, कौव्वे, चील्ह, गृद्ध, कुद्दी, बाज, कुर्रा और शृगाल आदि जन्तु अत्यन्त भयानक शब्द मचाते थे। उस समय वीर-रस से प्रोत्साहित हो रावजी बोले:—

> वयस्याः क्रोष्टारः प्रतिशृणुत बद्धोऽञ्जलिरियं।
> किमप्या कांक्षामः क्षरतिन यथा वीरचरितम्॥
> मृतानामस्माकं भवतु परवश्यं वपुरिदं।
> भवद्भिः कर्तव्यौ नहि नहि पराचीन चरणौ॥ १॥

इस प्रकार कठिन मार मचने पर मुसलमान सेना के पैर उखड़ पड़े। उन्हों का बेशुमार असबाब राजपूतों ने लूटलिया और जीत के नगारे बजाते किले में चले गये।

१०७ दूसरे दिन बादशाह ने अपनी बची हुई सेना को बटोरी और वज़ीर की सलाह से सर्व मार्ग रोक कर किले में

बाहर से आते हुए खाद्य पदार्थ बिलकुल बन्द कर दिये गये। मनुष्यों का भी आना जाना कतई बन्द होगया। उस समय अलाउद्दीन ने अपनी सेना को (दीवान, बांके, बगसी और स्वयं बादशाह) चार विभाग कर किले को घेर लिया। हिन्दू प्रत्येक बुर्ज में से अग्नि वर्षा करने लगे यह देख मुसलमानों ने अपने बचाव के लिये रेत से भरे बोरों का धुंस बनाया और मंजनीकों से किले पर पत्थर फैंकना आरम्भ किया। सं० १३५८ चैत्र से श्रावण तक रात दिन भयंकर लड़ाई होती रही परन्तु अन्त में यहांतक रसद की कमी हुई कि चावल की क़ीमत किले में सोने से भी दुगुनी होगई। यह देख हमीर के बहुतसे सर्दार मुसलमानों में जा मिले तब महिमाशाह पर भी रावजी का अविश्वास हुआ। उन्होंने उन्हों को बुला कर कहा कि महिमाशाह देश की सेवा के लिये मैं तो शत्रुओं के बीच लड़कर प्राण देने को उद्यत हूं। परन्तु अपने लिये अब तुम यह स्थान बताओ जहां सपरिवार आनन्द में रह सकते हो मैं कुशलता पूर्वक तुम्हें वहां पहुंचा दूं। यह सुन महिमाशाह के दिल में बड़ा खेद हुआ और बिना कुछ उत्तर दिये ही वह अपने घर लौट गया। वहां जाकर उसने तलवार द्वारा अपने समस्त कुटुम्ब को नष्ट कर दिया और हमीर के पास आकर बोला कि मेरे सब कुटुम्बी दूसरे सुरक्षित स्थान पर चले जाने को तैयार हैं परन्तु वे सब एक बार आपके दर्शनों

के अभिलाषी हैं। आशा है कि आप स्वयं वहां पधार उनकी इच्छा पूर्ण करेंगे। यह सुन हमीर अपने भाई वीरम सहित महिमाशाह के घर गये और यह हत्याकांड देख उनके आश्चर्य और शोक का ठिकाना न रहा। महिमाशाह को हृदय से लगा कर रावजी बच्चे के समान रोने लगे और बोले कि हे मारण हा! तुमने अपने ही हाथ से स्वकुटुम्ब को भी मार कर अपना (मारण) नाम सार्थक किया। तुम्हें चलेजाने का कहने के कारण मैं ही इसमें पूर्ण दोषी हूं। ऐसी अलौकिक स्वामिभक्ति का बदला नहीं हो सकता। तब हमीर को समझाते हुए महिमाशाह बोले रावजी आप कोई भी हालत में ऐसा न समझें कि अन्य राजपूत जातियों के समान मारण जाति भी स्वामीद्रोही, विश्वासघातक, कृतघ्न और निमकहरामी हो सकती है। इस भव की ही कौन कहे भवान्तर में भी मैं आप श्री जी का संग छोड़नेवाला नहीं हूं। यह सुन रावजी का हृदय उमंग से भर आया और अपने हाथ से महिमाशाह के कुटुम्ब का प्रत्येक कर्म कर उसी स्थान पर बत्तीस ३२ थंभों की छत्री निर्माण करवाई, जो आज भी रणथंभोरगढ़ में स्थित है। इसके अनन्तर वे अपनी बचीहुई स्वामीभक्त सेना को लेकर गढ़ के बाहर निकले और शत्रुओं पर टूट पड़े। बड़ा ही भीषण युद्ध हुआ। इसबार उपर्युक्त व्यूह बद्ध होने के

कारण मुसलमानी सेना ने बड़ी वीरता दिखाई। बादशाह ने पुकार कर कहा कि मेरा जो उमराव हमीर को पकड़ कर ला वेगा उसको बारह हज़ार की जागीर और दरबार में सबसे बड़ा मंसब मिलेगा। यह सुन कर अब्दुल नामक एक उमराव अपनी सेना सहित बड़े वेगसे आगे बढ़ा। इधर राजपूत वीरों ने उसको रोका। इस होड़ हौस में बड़ी कड़ी मार हुई, दोनों ओर के अगणित कबंध खड़े हुए। इस घोर युद्ध में राजपूतों की बड़ी क्षति हुई। वीरम, जाज, गंगाधर, तकि, क्षत्रसिंह आदि बड़े २ उमराव तथा २०० घोड़े २० हाथी और ६०००) जोधे काम आचुके, तब वीर मूर्ति महिमाशाह ने हमीर से आगे बढ़ कर कहा श्रीमान् अब बहुत हुआ जरा मेरा भी पराक्रम देखिये। यह कह कर बीच समर भूमि में कूद पड़ा और दोनों हाथों में भयंकर तलवार ले, साक्षात् यमराज के समान असंख्य यवनों को काटता हुआ आगे बढ़ा और संहार मूर्त्ति से बादशाह को सम्बोधन करके बोला कि यह मैं महिमा आ पहुंचा हूं अब आप अपनी इच्छा को पूर्ण कीजिए। यह सुन कर अलाउद्दीन ने खुरासान की ओर देख कर कहा कि जो कोई महिमाशाह को जीवित पकड़ लावेगा उसे तीस हज़ार की जागीर, बारह हज़ारी मंसब, नौबत नीसान और एक अमूल्य तलवार दूंगा। यह सुन कर खुरासानियों

ने कहा: वीर अधीर मत हो जीवन मरण यह संसार का धर्म है इसका पश्चाताप ही क्या । फिर हम तुम तो एक ही अंश के अवतार हैं, एक ही में लीन होंगे यह अवश्य है कि मनुष्य देह धारण कर इस प्रकार कीर्ति संपादन करने का समय बड़ी कठिनता से प्राप्त होता है।

१०६ बची हुई और कुछ नवीन सेना को संग्रहित कर बादशाह ने दो दिन के बाद मीरगभरु की सेनाध्यक्षता में किले पर पुनः आक्रमण किया । इधर राजपूत वीर भी किले से निकल कर भूखे व्याघ्रों के समान यवनों पर टूट पड़े। इस दिन भी वीरोचित उत्कर्ष से भरा हुआ महिमासाह असंख्य यवनों का संहार करता हुआ बादशाह के सन्मुख आ उपस्थित हुआ । यह देख मीरगभरु भी उसके सामने आ जुटा जिस समय यह दोनों वीर बान्धव एक दूसरे पर प्रहार करने को थे कि अल्लाउद्दीन ने हंस कर कहा मीर-महिमाशाह मैं सच्चे दिल से तेरी तारीफ करता हूं कि जिस दिन से तूने दिल्ली छोड़ी उस वक्त से और आज तक मुझको सिर न झुकाया, बस अब तुम खुशी से मेरे पास चले आओ मैं तुम्हारा कसूर माफ करता हूं और यह बेगम भी तुमको देकर साथ ही में गोरखपुर का परगना जागीर में दूंगा । इस पर महिमाशाह ने मुस्कराते हुये कहा कि मैं आपकी जातीय चातुरी से पूर्ण परिचित हूं । इस विषय में आपका कहना बिलकुल व्यर्थ है भवान्तर में भी मैं हम्मीर का साथ छोड़ने

ने सहसों १०००० फौज के साथ भयंकर वेग से महिमाशाह के ऊपर आक्रमण किया। राजपूत और मुसलमान सेना एक दूसरे पर बाणों की घोर वर्षा करने लगी। उधर अब्दुल भी हाथी के उपर से बाण चलाता हुआ हम्मीर के सन्मुख हुआ, यह देख रावजी ने एक ही बाण ऐसा मारा कि उसकी छाती को तोड़ कर आर-पार निकल गया और प्राण रहित हो अब्दुल हाथी पर से शिखर की टोंक के समान धड़ाम से जमीन पर गिर पड़ा। इधर दोनों वीर स्वयं आमने सामने जुटकर एक मात्र खड्ग के सहारे पर खेलने लगे। अन्तमें कूद कर, महिमाशाह ने ऐसा खड्ग मारा कि खुरासानखां एक के दो होगए। यह देख मुसलमानी सेना भाग निकली और उन्हों का सारा सामान हिन्दुओं ने लूट लिया।

१०८ खुरासान के निशान आदि लेजा कर महिमाशाह ने रावजी को नजर किए और बोले कि हे शरणागत पथ रक्षक वीर चहुआन आपको कोटिशः धन्यवाद है कि राज्य परिवार स्त्री और सब राजसी वैभवों को तिलांजुली देकर एक मात्र मेरी रक्षा करने के लिये आप अपने हठ से नाहटे। यह अचल कीर्ति आपकी इस संसार में सनातन स्थिर रहेगी। अब वह समय कब आवेगा कि मैं पुनः अपनी माता के गर्भ से जन्म धारण कर आपसे फिर भी मिलूं। यह सुन रावजी

ने कहा:वीर अधीर मत हो जीवन मरण यह संसार का धर्म है इसका पश्चाताप ही क्या। फिर हम तुम तो एक ही अंश के अवतार हैं, एक ही में लीन होंगे। यह अवश्य है कि मनुष्य देह धारण कर इस प्रकार कीर्ति संपादन करने का समय बड़ी कठिनता से प्राप्त होता है।

१०६ बची हुई और कुछ नवीन सेना को संग्रहित कर बादशाह ने दो दिन के बाद मीरगभरु की सेनाध्यक्षता में किले पर पुनः आक्रमण किया। इधर राजपूत वीर भी किले से निकल कर भूखे व्याघ्रों के समान यवनों पर टूट पड़े। इस दिन भी वीरोचित उत्कर्ष से भरा हुआ महिमासाह असंख्य यवनों का संहार करता हुआ बादशाह के सन्मुख आउपस्थित हुआ। यह देख मीरगभरु भी उसके सामने आ जुटा जिस समय यह दोनों वीर बान्धव एक दूसरे पर प्रहार करने को थे कि अल्लाउद्दीन ने हंस कर कहा मीर-महिमाशाह मैं सच्चे दिल से तेरी तारीफ़ करता हूं कि जिस दिन से तूने दिल्ली छोड़ी उस वक्त से और आज तक मुझको सिर न झुकाया, बस अब तुम खुशी से मेरे पास चले आओ मैं तुम्हारा कसूर माफ करता हूं और यह बेगम भी तुमको देकर साथ ही में गोरखपुर का परगना जागीर में दूंगा। इस पर महिमाशाह ने मुस्कराते हुये कहा कि मैं आपकी जातीय चातुरी से पूर्ण परिचित हूं। इस विषय में आपका कहना बिलकुल व्यर्थ है भवान्तर में भी मैं हम्मीर का साथ छोड़ने

वाला नहीं हूं। यह सुन बादशाह ने क्रोधित हो मीरगभरु को महिमाशाह पर पूर्ण शक्ति से आक्रमण करने का हुक्म दिया। उस समय मीरगभरु ने अपने बड़े भाई महिमाशाह के पैर छू कर कहा दादा भाई अब मुझे आज्ञा हो। इसके उत्तर में महिमाशाने कहा कि स्वामी धर्म पालने में दोष ही क्या है। यह कह कर दोनों भाइयों में नाना प्रकार के अस्त्र और शस्त्रों द्वारा जमी आसमान को कपायमान करने वाला घोर युद्ध हुआ उस समय सुर और असुरों के समान हिन्दू और मुसलमानों में बड़ा ही भीषण युद्ध हुआ कि जिसको देख कर प्रलय काल की संभावना होती थी। स्वर्गीय अप्सराओं ने दोनों भाइयों को एक ही साथ वरमालाएं पहनाईं। तिल तिल में अङ्ग हुहाने के। हने बाजि गजराज॥ हजरत रावहम्मीर के। सबै संवार काज॥ ८४६॥ मुसलमान हिंदवान को। चले सबै सिरनाय॥ चढ़ि विमान दोऊँ तहा। भिस्तहि पहुँचे जाय॥ ८४७ जब महिमाशाह मारा जा चुका, रावहम्मीर ने दोनों हाथों से तलवारें खैंची और साक्षात यमराज के समान ही असंख्य यवनों का संहार करता हुआ आगे बढ़ा। यह देख मुसलमान वीर रणभूमि से भाग निकले और उन्होंकी बहुत सी युद्ध सामग्री राजपूतों के हाथ लगी, जिसको लेकर किले में आगये, उस लूट का चिन्ह स्वरुप-मीरगाभरु का लोह मुद्गर आज भी रणथभ में पड़ा हुआ है।

गाय गाय कर सहज कठोर हृदय सूरवीरों के चित्त को
देने लगे। इधर से ये सूरवीर लोग उमंग से भरे हुए
बढ़ते जाते थे। उधर आकाश में अप्सराओं के वृन्द के
इस समर में शत्रुओं के सम्मुख प्राण परित्याग करने
वाले वीरों को अपने हृदय के हार बनाने के लिये आ रहे थे।
जिस प्रकार ये वीर लोग इधर झिलम, टोप, बख्तर, दस्ताने
कलंगी, तुर्रा, सरपेच, और तीर तुबक, तेगा, तलवार, तपल
तोमर, तोरा, नेत, कटार, बरछी, बिछुवा, बांक, छुरी, पिस्तौल
पेशकब्ज, परिघ, गदा, लोहंढी, गंडासी, बाण, गुर्ज, गोफन,
मुद्गर, चक्र, परशु, सांग, सेल, लाठी फरसा, दात्र आदि ३६ अस्त्र
शस्त्रों से सजे हुए थे उसी प्रकार सर्वांग सुन्दरी नव यौवना
अप्सराएँ भी सीसफूल, दामनी, आड़, टाटंक, हार, बाजू-
बन्द, जोसन, पौंची, पाजेब आदि गहने और नाना प्रकार
की रंग बिरंगी कंचुकी, चोली चौबन्द आदि वस्त्रों को धारण
कर आकाश में स्थित थीं। इस प्रकार अंग रंग राते मदमाते
राजपूत वीर इधर से बढ़ और उधर से बाणों की बौछार करती
मुसलमान सेना भी पहाड़ों की कंदराओं में से टीड़ी
दलसी निकल पड़ी। दोनों सेनाओं में प्रथम तो धुंआधार
तोपें आदि अग्न्यास्त्रों की घोर वर्षा हुई परन्तु थोड़ी ही देर
में समुद्र की तरह उमड़ कर एक दूसरे से खिल्त मिल्त हो गई
उसी समय एक दम तेगा, तलवार, तबल, छुरी, बिछुवा,

कटार, गुर्ज, फर्सा आदि कठोर शस्त्रों की एक दूसरे पर भयंकर मार होने लगी । क्षण मात्र में वह आमोदमय रणभूमि साक्षात करुणा और बीभत्सरस का समुद्र होगई । जहां तहां घायल और मृतक सूरवीरों के शवों के ढेर के ढेर नजर आते थे । मृतक हाथी, घोड़ों, के शव; जहां तहां चट्टानों से दीखते थे । बहुतेरे नरदेह रक्त की नदी में जहां तहां बहे जाते थे और उन पर बैठकर मांस भक्षण करते हुए कौव्वे, चील्ह, गृद्ध, कुही, बाज, कुर्रा और शृगाल आदि जन्तु अत्यन्त भयानक शब्द मचाते थे । उस समय वीर रस से प्रोत्साहित हो रावजी बोले:—

वयस्याः कोटारः प्रतिशृणुत बद्धोऽञ्जलिरियं ।
क्रिमप्या कांक्षामः चरतिन यथा वीरवीरितम् ॥
मृतानामस्माकं भवतु परवश्यं वपुरिदं ।
भवद्भिः कर्तव्यो नहि नहि पराचीन चरणौ ॥ १ ॥

इस प्रकार कठिन मार मचने पर मुसलमान सेना के पैर उखड़ पड़े । उन्हों का बेशुमार असबाब राजपूतों ने लूटलिया और जीत के नगारे बजाते किले में चले गये ।

१०७ दूसरे दिन बादशाह ने अपनी बची हुई सेना को बटोरी और वजीर की सलाह से सब मार्ग रोक कर किले में

शहर मे आते हुए खाद्य पदार्थ बिलकुल बन्द कर दिये गये। मनुष्यों का भी आना जाना कतई बन्द होगया। उस समय अलाउद्दीन ने अपनी सेना को (दीवाने, बांके, बगसी और स्वयं बादशाह) चार विभाग कर किले को घेर लिया। हिन्दू प्रत्येक बुर्ज में से अग्नि वर्षा करने लगे यह देख मुसलमानों ने अपने बचाव के लिये रेत से भरे बोरों का धुंस बनाया और मंजनीकों से किले पर पत्थर फैंकना आरम्भ किया। सं० १३५८ चैत्र से श्रावण तक रात दिन भयंकर लड़ाई होती रही परन्तु अन्त में यहांतक रसद की कमी हुई कि चावल की कीमत किले में सोने से भी दुगुनी होगई। यह देख हमीर के बहुतसे सर्दार मुसलमानों में जा मिले तब महिमाशाह पर भी रावजी का अविश्वास हुआ। उन्होंने उन्हों को बुला कर कहा कि महिमाशाह देश की सेवा के लिये मैं तो शत्रुओं के बीच लड़कर प्राण देने को उद्यत हूं परन्तु अपने लिये अब तुम वह स्थान बताओ जहां सपरिवार आनन्द में रह सकते हो मैं कुशलता पूर्वक तुम्हें वहां पहुंचा दूं। यह सुन महिमाशाह के दिल में बड़ा खेद हुआ और बिना कुछ उत्तर दिये ही वह अपने घर लौट गया। वहां जाकर उसने तलवार द्वारा अपने समस्त कुटुम्ब को नष्ट कर दिया और हमीर के पास आकर बोला कि मेरे सब कुटुम्बी दूसरे सुरक्षित स्थान पर चले जाने को तैयार हैं परन्तु वे सब एक बार आपके दर्शनों

कटार, गुर्ज, फर्सी आदि कठोर शस्त्रों की एक दूसरे पर भयंकर मार होने लगी। क्षण मात्र में वह आमोदमय रणभूमि साक्षात करुणा और वीभत्सरस का समुद्र होगई। जहां तहां घायल और मृतक सूरवीरों के शवों के ढेर के ढेर नजर आते थे। मृतक हाथी घोड़ों के शव; जहां तहां चट्टानों से दीखते थे। बहुतेरे नरदेह रक्त की नदी में जहां तहां बहे जाते थे और उन पर बैठकर मांस भक्षण करते हुए कौवे, चील्ह, गृद्ध, कुही, बाज, कुर्रा और शृगाल आदि जन्तु अत्यन्त भयानक शब्द मचाते थे। उस समय वीर रस से प्रोत्साहित हो रावजी बोलेः—

वयस्याः क्रोशारः प्रतिशृणुत बद्धोऽञ्जलिरियं ।
किमप्या कांक्षामः चरतिन यथा वीरचरितम् ॥
सुतानामस्माकं भवतु परवश्यं वपुरिदं ।
भवद्भिः कर्तव्यो नहि नहि पराचीन चरणौ ॥ १ ॥

इस प्रकार कठिन मार मचने पर मुसलमान सेना के पैर उखड़ पड़े। उन्हीं का बेशुमार असबाब राजपूतों ने लूटलिया और जीत के नगारे बजाते किले में चले गये।

१०७ दूसरे दिन बादशाह ने अपनी बची हुई सेना को बटोरी और वजीर की-सलाह से सब मार्ग रोक कर किले में

कारण मुसलमानी सेना ने बड़ी वीरता दिखाई। बादशाह ने पुकार कर कहा कि मेरा जो उमराव हमीर को पकड़ कर लावेगा उसको बारह हजार की जागीर और दरबार में सबसे बड़ा मंसब मिलेगा। यह सुन कर अब्दुल नामक एक उमराव अपनी सेना सहित बड़े वेगसे आगे बढ़ा। इधर राजपूत वीरों ने उसको रोका। इस होड़ हौस में बड़ी कड़ी मार हुई, दोनों ओर के अगणित कमंध खड़े हुए। इस घोर युद्ध में राजपूतों की बड़ी क्षति हुई। वीरम, जाज, गंगाधर, ताक, क्षेत्रसिंह आदि बड़े २ उमराव तथा २०० घोड़े २० हाथी और ६००० जोधे काम आचुके तब वीर मूर्ति महिमाशाह ने हमीर से आगे बढ़ कर कहा श्रीमान् अब बहुत हुआ जरा मेरा भी पराक्रम देखिये। यह कह कर बीच समर भूमि में कूद पड़ा और दोनों हाथों में भयंकर तलवार ले, साक्षात् यमराज के समान असंख्य यवनों को काटता हुआ आगे बढ़ा और संहार मूर्त्ती से बादशाह को सम्बोधन करके बोला कि यह मैं महिमा आ पहुंचा हूं अब आप अपनी इच्छा को पूर्ण कीजिए। यह सुन कर अलाउद्दीन ने खुरासान की ओर देख कर कहा कि जो कोई महिमाशाह को जीवित पकड़ लावेगा उसे तीस हजार की जागीर; बारह हजारी मंसब, नौबत नीसान और एक अमूल्य तलवार दूंगा। यह सुन कर खुरासानखां

के अभिलाषी हैं। आशा है कि आप स्वयं वहां पधार उनकी इच्छा पूर्ण करेंगे। यह सुन हमीर अपने भाई वीरम सहित महिमाशाह के घर गये और यह हत्याकांड देख उनके आश्चर्य और शोक का ठिकाना न रहा। महिमाशाह को हृदय से लगा कर रावजी बच्चे के समान रोने लगे और बोले कि हे मारण हा! तुमने अपने ही हाथ से स्वकुटुम्ब को भी मार कर अपना (मारण) नाम सार्थक किया। तुम्हें चलेजाने का कहने के कारण मैं ही इसमें पूर्ण दोषी हूं। ऐसी अलौकिक स्वामिभक्ति का बदला नहीं हो सकता। तब हमीर को समझाते हुए महिमाशाह बोले रावजी आप कोई भी हालत में ऐसा न समझें कि अन्य राजपूत जातियों के समान मारण जाति भी स्वामीद्रोही, विश्वासघातक, कृतघ्न और निमकहरामी हो सकती है। इस भव की ही कौन कहे भवान्तर में भी मैं आप श्री जी का संग छोड़नेवाला नहीं हूं। यह सुन रावजी का हृदय उमंग से भर आया और अपने हाथ से महिमाशाह के कुटुम्ब का प्रत्येक कर्म कर उसी स्थान पर बत्तीस ३२ थंभों की छत्री निर्माण करवाई, जो आज भी रणथंभोरगढ़ में स्थित है। इसके अनन्तर वे अपनी बचीहुई स्वामिभक्त सेना को लेकर गढ़ के बाहर निकले और शत्रुओं पर टूट पड़े। बड़ा ही भीषण युद्ध हुआ। इसप्रकार उपर्युक्त युद्ध बन्द होने के

कारण मुसलमानी सेना ने बड़ी वीरता दिखाई । बादशाह ने पुकार कर कहा कि मेरा जो उमराव हमीर को पकड़ कर लावेगा उसको बारह हजार की जागीर और दरबार में सबसे बड़ा मंसब मिलेगा । यह सुन कर अब्दुल नामक एक उमराव अपनी सेना सहित बड़े वेगसे आगे बढ़ा । इधर राजपूत वीरों ने उसको रोका । इस होड़ हौस में बड़ी कड़ी मार हुई, दोनों ओर के अगणित कमंध खड़े हुए । इस घोर युद्ध में राजपूतों की बड़ी क्षति हुई । वीरम, जाज, गंगाधर, ताक, क्षत्रसिंह आदि बड़े २ उमराव तथा २०० घोड़े ३० हाथी और ६००० जोधे काम आचुके तब वीर मूर्ति महिमाशाह ने हमीर से आगे बढ़ कर कहा श्रीमान् अब बहुत हुआ जरा मेरा भी पराक्रम देखिये । यह कह कर बीच समर भूमि में कूद पड़ा और दोनों हाथों में भयंकर तलवार ले, साक्षात् यमराज के समान असंख्य यवनों को काटता हुआ आगे बढ़ा और संहार मूर्त्ति से बादशाह को सम्बोधन करके बोला कि यह मैं महिमा आ पहुंचा हूं अब आप अपनी इच्छा को पूर्ण कीजिए । यह सुन कर अलाउद्दीन ने खुरासान की ओर देख कर कहा कि जो कोई महिमाशाह को जीवित पकड़ लावेगा उसे तीस हजार की जागीर, बारह हजारी मंसब, नौबत नीशान और एक अमूल्य तलवार दूंगा । यह सुन कर खुरासानखां

कारण मुसलमानी सेना ने बड़ी वीरता दिखाई । बादशाह ने पुकार कर कहा कि मेरा जो उमराव हमीर को पकड़ कर लावेगा उसको बारह हजार की जागीर और दरबार में सबसे बड़ा मंसब मिलेगा । यह सुन कर अब्दुल नामक एक उमराव अपनी सेना सहित बड़े वेगसे आगे बढ़ा । इधर राजपूत वीरों ने उसको रोका । इस होड़ हौस में बड़ी कड़ी मार हुई, दोनों ओर के अगणित कमंध खड़े हुए । इस घोर युद्ध में राजपूतों की बड़ी क्षति हुई । वीरम, जाज, गंगाधर, ताक, क्षत्रसिंह आदि बड़े २ उमराव तथा २०० घोड़े ३० हाथी और ६००० जोधे काम आचुके तब वीर मूर्ति महिमाशाह ने हमीर से आगे बढ़ कर कहा श्रीमान् अब बहुत हुआ जरा मेरा भी पराक्रम देखिये । यह कह कर बीच समर भूमि में कूद पड़ा और दोनों हाथों में भयंकर तलवार ले, साक्षात् यमराज के समान असंख्य यवनों को काटता हुआ आगे बढ़ा और संहार मूर्ती से बादशाह को सम्बोधन करके बोला कि यह मैं महिमा आ पहुंचा हूं अब आप अपनी इच्छा को पूर्ण कीजिए । यह सुन कर अलाउद्दीन ने खुरासान की ओर देख कर कहा कि जो कोई महिमाशाह को जीवित पकड़ लावेगा उसे तीस हजार की जागीर, बारह हजारी मंसब, नौबत नीसान और एक अमूल्य तलवार दूंगा । यह सुन कर खुरासानखां

ने सहकी ३०००० फौज के साथ भयंकर वेग से महिमाशाह के ऊपर आक्रमण किया। राजपूत और मुसलमान सेना एक दूसरे पर बाणों की घोर वर्षा करने लगी। उधर अब्दुल भी हाथी के उपर से बाण चलाता हुआ हम्मीर के सन्मुख हुआ, यह देख रावजी ने एक ही बाण ऐसा मारा कि उसकी छाती को तोड़ कर आर का पार निकल गया और प्राण रहित हो अब्दुल हाथी पर से शिखर की टोंक के समान धड़ाम से जमीन पर गिर पड़ा। इधर दोनों वीर स्वयं आमने साम्हने जुटकर एक मात्र खड्ग के सहारे पर खेलने लगे। अन्तमें कूद कर, महिमाशाह ने ऐसा खड्ग मारा कि खुरासानखां एक के दो होगए। यह देख मुसलमानी सेना भाग निकली और उन्हों का सारा सामान हिन्दुओं ने लुट लिया। [illegible]

१०८ खुरासान के निशान आदि लेजा कर महिमाशाह ने रावजी को नजर किए और बोले कि हे शरणागत पण रक्षक वीर चहुआन आपको कोटिशः धन्यवाद है कि राज्य परिवार स्त्री और सब राजसी वैभवों को तिलांजुली देकर एक मात्र मेरी रक्षा करने के लिये आप अपने हट से नाहटे। यह अचल कीर्ति आपकी इस संसार में सनातन स्थिर रहेगी। अब वह समय कब आवेगा कि मैं पुनः अपनी माता के गर्भ से जन्म धारण कर आपसे फिर भी मिलूं। यह सुन रावजी

ने कहा वीर अधीर मत हो जीवन मरण यह संसार का धर्म है इसका पश्चाताप ही क्या। फिर हम तुम तो एक ही अंश के अवतार हैं, एक ही में लीन होंगे। यह अवश्य है कि मनुष्य देह धारण कर इस प्रकार कीर्ति संपादन करने का समय बड़ी कठिनता से प्राप्त होता है।

१०८ बची हुई और कुछ नवीन सेना को संग्रहित कर बादशाह ने दो दिन के बाद मीरमभरु की सेनाध्यक्षता में किले पर पुनः आक्रमण किया। इधर राजपूत वीर भी किले से निकल कर भूखे व्याघ्रों के समान यवनों पर टूट पड़े। इस दिन भी वीरोचित उत्कर्ष से भरा हुआ महिमाशाह असंख्य यवनों का संहार करता हुआ बादशाह के सन्मुख आउपस्थित हुआ। यह देख मीरगबरु भी उसके सामने आ जुटा जिस समय यह दोनों वीर बान्धव एक दूसरे पर प्रहार करने को थे कि अल्लाउद्दीन ने हंस कर कहा मीर-महिमाशाह मैं सच दिल से तेरी तारीफ करता हूं कि जिस दिन से तूने दिल्ली छोड़ी उस वक्त से और आज तक मुझको सिर न झुकाया, बस अब तुम खुशी से मेरे पास चले आओ मैं तुम्हारा कसूर माफ करता हूं और यह बेगम भी तुमको देकर साथ ही में गोरखपुर का परगना जागीर में दूंगा। इस पर महिमाशाह ने मुस्कराते हुये कहा कि मैं आपकी जातीय चातुरी से पूर्ण परिचित हूं। इस विषय में आपका कहना बिलकुल व्यर्थ है भवान्तर में भी मैं हम्मीर का साथ छोड़ने

ने सहकी ३०००० फौज के साथ भयंकर वेग से महिमाशाह के ऊपर आक्रमण किया। राजपूत और मुसलमान सेना एक दूसरे पर बाणों की घोर वर्षा करने लगी। उधर अब्दुल भी हाथी के उपर से बाण चलाता हुआ हम्मीर के सन्मुख हुआ, यह देख रावजी ने एक ही बाण ऐसा मारा कि उसकी छाती को तोड़ कर आर का पार निकल गया और प्राण रहित हो अब्दुल हाथी पर से शिखर की टोंक के समान धड़ामसे जमीन पर गिर पड़ा। इधर दोनों वीर स्वयं आमने सामने जुटकर एक मात्र खड्ग के सहारे पर खेलने लगे। अन्तमें कूद कर, महिमाशाह ने ऐसा खड्ग मारा कि खुरासानखां एक के दो होगए। यह देख मुसलमानी सेना भाग निकली और उन्हों का सारा सामान हिन्दुओं ने लुट लिया।

१०८ खुरासान के निशान आदि लेजा कर महिमाशाह ने रावजी को नजर किए और बोले कि हे शरणागत पथ रक्षक वीर चहुआन आपको कोटिशः धन्यवाद है कि राज्य परिवार औ और सब राजसी वैभवों को तिलांजुली देकर एक मात्र मेरी रक्षा करने के लिये आप अपने हठ से नाहटे। यह अचल कीर्ति आपकी इस संसार में सनातन स्थिर रहेगी। अब वह समय कब आयेगा कि मैं पुनः अपनी माता के गर्भ से जन्म धारण कर आपसे फिर भी मिलूं। यह सुन रावजी

ने कहा वीर अधीर मत हो जीवन मरण यह संसार का धर्म है इसका पश्चाताप ही क्या। फिर हम तुम तो एक ही अंश के अवतार हैं, एक ही में लीन होंगे। यह अवश्य है कि मनुष्य देह धारण कर इस प्रकार कीर्ति संपादन करने का समय बड़ी कठिनता से प्राप्त होता है।

१०९ बची हुई और कुछ नवीन सेना को संग्रहित कर बादशाह ने दो दिन के बाद मीरगभरु की सेनाध्यक्षता में किले पर पुनः आक्रमण किया। इधर राजपूत वीर भी किले से निकल कर भूखे व्याघ्रों के समान यवनों पर टूट पड़े। इस दिन भी वीरोचित उत्कर्ष से भरा हुआ महिमासाह असंख्य यवनों का संहार करता हुआ बादशाह के सन्मुख आउपस्थित हुआ। यह देख मीरगभरु भी उसके सामने आ जुटा जिस समय यह दोनों वीर बान्धव एक दूसरे पर प्रहार करने को थे कि अल्लाउद्दीन ने हंस कर कहा मीर-महिमाशाह मैं सच्चे दिल से तेरी तारीफ करता हूं कि जिस दिन से तूने दिल्ली छोड़ी उस वक्त से और आज तक मुझको सिर न झुकाया, बस अब तुम खुशी से मेरे पास चले आओ मैं तुम्हारा कसूर माफ करता हूं और यह बेगम भी तुमको देकर साथ ही में गोरखपुर का परगना जागीर में दूंगा। इस पर महिमाशाह ने मुस्कराते हुये कहा कि मैं आपकी जातीय चातुरी से पूर्ण परिचित हूं। इस विषय में आपका कहना बिलकुल व्यर्थ है भवान्तर में भी मैं हम्मीर का साथ छोड़ने

वाला नहीं हूं। यह सुन बादशाह ने क्रोधित हो मीरगभरु को महिमाशाह पर पूर्ण शक्ति से आक्रमण करने का हुक्म दिया। उस समय मीरगभरु ने अपने बड़े भाई महिमाशाह के पैर छू कर कहा दादा भाई अब मुझे आज्ञा हो। इसके उत्तर में महिमाशाने कहा कि स्वामी धर्म पालन में दोष ही क्या है। यह कह कर दोनों भाइयों में नाना प्रकार के अस्त्र और शस्त्रों द्वारा जमी आसमान को कंपायमान करने वाला घोर युद्ध हुआ उस समय सुर और असुरों के समान हिन्दू और मुसलमानों में बड़ा ही भीषण युद्ध हुआ कि जिसको देख कर प्रलय काल की संभावना होती थी। स्वर्गीय अप्सराओं ने दोनों भाइयों को एक ही साथ वरमालाएं पहनाई। तिल तिल में अङ्ग दुहाने के। हने बाजि गजराज॥ हजरत रावहम्मीर के। सबै संवार काज॥ ८४६॥ मुसलमान हिंदवान को। चले सबै सिरनाय॥ चढ़ि विमान दोऊँ वहा। भिस्तहि पहुंचे जाय ८४७ जब महिमाशाह मारा जा चुका, रावहम्मीर ने दोनों हाथों से तलवारें खैंची और साक्षात यमराज के समान ही असंख्य यवनों का संहार करता हुआ आगे बढ़ा। यह देख मुसलमान वीर रण-भूमि से भाग निकले और उन्होंकी बहुत सी युद्ध सामग्री राजपूतों के हाथ लगी, जिसको लेकर किले में आगये, उस लूट का चिन्ह स्वरुप मीरगाभरु का लोह मुद्गर आज भी ग्रथम में पड़ा हुआ है।

११० सभी अमीर उमराव हताहत होजाने के कारण दूसरे दिन बादशाह खुद सेनानी हुए और बची हुई समस्त सेना को ले, किले पर पुनः आक्रमण किया। इस बीचमें रतीपाल ने रनिवास में यह खबर फैलाई कि अब अलाउद्दीन केवल राज कन्या से विवाह करना चाहता है यदि उसकी यह इच्छा पूरी होजाय तो वह सन्धी कर लेने को प्रस्तुत है। इस पर रानी देवल की सिखाई हुई चन्द्रकला ने आकर हम्मीर से कहा, हे पिता मैं एक व्यर्थ काच के टुकड़े के समान हूं और आपका राज्य और प्राण चिंतामणी व पारस के समान है, मैं विनती करती हूं कि आप उनको रखने के लिये मुझे फेंक दीजिए। यह सुन रावजी का जी भर आया और बोले कि तुम अभी बालिका हो इससे जो कुछ तुम्हें सिखाया गया है उसके कहने में तुम्हारा दोष नहीं किन्तु उनकी जीभ काटली जाय जिन्होंने तुम्हारे हृदय में ऐसे खयाल भर दिए हैं परन्तु स्त्रियों का अङ्ग भङ्ग करना राजपूतों का काम नहीं! पुत्री तुम्हें म्लेच्छ मुसलमान को देकर सुख भोगना मेरे लिये ऐसा है कि जैसा अपना ही मांस खाकर जीवन काटना हो। ऐसे सम्बन्ध से मेरे कुल में कलंक लगेगा, मुक्ति की आशा नष्ट होगी, इस संसार में हमारे अन्तिम दिन कडुए हो जायंगे। मैं ऐसे कलंकित जीवन की अपेक्षा दश हजार बार मरना अच्छा समझता हूं। यह सुन कर कन्या रनवास में चली गई और

इधर दूत के हाथ अल्लाउद्दीन का प्रतिज्ञापत्र रावजी को मिला उसमें लिखा था कि "रावहम्मीर मैं अल्लाउद्दीन बादशाह आप की अद्वयवीरता से अत्यन्त ही प्रसन्न होकर अपनी तरफ से पांच परगने और देने स्वीकार करता हूं और कुरान को हाथ में लेकर यह भी प्रतिज्ञा करता हूं कि अब मैं कभी रणथंभगढ़ पर चढ़ाई न करूंगा। बस अब आप युद्ध न कीजिये और मेरे साथ संधीवद्ध हो स्वच्छंदता पूर्वक रणथंभ का राज्य कीजिए। मैं इसी वक्त दिल्ली को लौट जाऊंगा"। इसके उत्तर में रावजी ने कहा कि 'अल्लाउद्दीन! यह मैं अच्छी तरह से जानता हूं कि मुसलमान लोग कुरान खुदा और इस्लाम की ओट में रह कर ही अपना काम करते हैं। उनकी बातों को सच मान मूर्ख हिन्दू अपने प्राण तक खो बैठते हैं अब आइये तुम और हम साथ ही स्वर्ग चलें। रावजी के ऐसे वचन सुन अल्लाउद्दीन ने अपनी सेना को किले पर आक्रमण करने की आज्ञा दी। उधर राजपूत सेना भी प्राणों का मोह छोड़ कर मदोन्मत्त की तरह मुसलमानों पर टूट पड़ी। दसों दिग्गजों के हृदय को कंपायमान करने वाला घोर युद्ध होने लगा। उस समय भील गोत्रीय रावभोज ने युद्ध में अग्रेसर होने की आज्ञा मांगी, तब हम्मीर ने कहा अभी तुम किले की रक्षा करो इस पर उसने उत्तर दिया कि मुझे श्रीमान् की आज्ञा मानने में किसी प्रकार की आपत्ति नहीं परन्तु मैंने जो श्रीमान्

की आजन्म चरण सेवा की है वह इसी अवसर के लिये, अतएव अब मुझे आज्ञा हो कि मैं अपने कर्त्तव्य के ऋण से उऋण होऊं। यों कह कर भोजराज अपनी दो हजार भील सेना सहित यवनों पर ऐसे कूद पड़ा कि जैसे बकरियों के झुंड पर भूखा सिंह टूट पड़ता है। असंख्यायवनों का संहार करता हुआ भोजराज आगे बढ़ा। उधर से तीस हजार कंधारी फौज लेकर मीर सिकन्दर का भोजराज से मुकाबला हुआ। बड़ी देर तक कल्पान्त युद्ध होता रहा। अन्त में सिकन्दर ने भोज पर तलवार चलाई और भोजराज ने सिकंदर पर कटार का वार किया। निदान दोनों वीर एक ही समय धराशायी हुए। भोजराज को पड़ता देख कर हम्मीर ने अपना हाथी यवनों पर हंकारा। यह देख शाही सेना भाग उठी। इस युद्ध में रावजी की तरफ से भोजराज के साथ वाले दो हजार भील सरदार और अल्लाउद्दीन के तीस हजार कंधारी योद्धा काम आए। दस उमराव और पचीस हजार कसमीरी मरे॥

१११ उसी समय हमीर हाथी से उत्तर भोज की लाश से मिले और रुदन करते बोले कि धन्य हो वीरवर तुमने स्वामी सेवा में अपने प्राण तक देकर अतुलित कीर्त्ति सम्पादन की। परे भोज संग भीलवर। सहस दोइ इक ठौर, सहस पचीस कसमीर के। अरु कंधार वरमौर॥ ८७६॥ सहस तीस कंधार

के और सिकदर मीर ॥ अलीसयद के संग भट । पर मीर दस मीर ॥ ८८० ॥ भजी फौज पतशाह की । विकल सकल उमराव ॥ दोय सहस भट भोज संग । रहे खेत करि चाव ॥ ८८१ ॥ राव हमीर भोज ढिग आये । देखि सुभोज नैन जल छाये ॥ तुम सब अमर भए कलि माहीं । स्वामि काम सब देह सराही ॥ ८८२ ॥

भील यह प्राचीन राजपूतों की एक शाखा है इस समय भी बहुत से ठिकाने भील गोत्रीय क्षत्रियों का राज्य विद्यमान हैं और इस हम्मीरासा के कर्त्ता ने भी इन्हों को ३६ राजवंशों में लिखा है यथा—कमध्वज कूरम गौड, तँवर पडिहार अमानो। पौरच वैस पुँडीर, वीर, चहुवान सुजानो ॥ जदव गोहिल धीर। वड़े गहिलोत गहरं । सैंगर और पँवार भील इक भोज महरं ॥ छत्तीस वंश छत्री चढ़े । जिम पावस बद्दल बढ़े ॥ हम्मीर राव चहुवान सव ! जंग कज्जचौरँ कढ़े ॥ ७०० ॥ क्षत्रिय वंश प्रदीप ग्रन्थ में लिखे हुए राजपूतों के ११०० गोत्रों में भील ७०६ वां है ॥ असम्यों के समान नाम देख कर इन्हों से नफरत करने वालों की अज्ञानता है । क्योंकि समान नाम होने पर ऊंच नीच सब एक नहीं हो सकते । जाति की ऊंचता और नीचता उसकी आचरण पर है । महत्त्वकांक्षा के लिये कई श्रेणियों में वंट जाना फिर्मा जाति के लिए सब से बड़ी

मूर्खता का कार्य है । तीन तेराह होकर फिर वह जाति संसार में कहीं नहीं रहती । अगर इस प्राचीन चात्रिय जातिय में आपस में सम्प होता तो आज यह जाति सृष्टी की सुरुआत से चलते आए हुए अपने सनातन और स्वतन्त्र राज्य को खोकर पद दलित कभी न होती । एक कवि ने ठीक लिखा है कि:—

न जाति प्रेम हो जिसमें, मुहब्बत न हो भाई की ।
वह मुर्दा कौम है जिसमें न बू हो एकताई की ॥ १ ॥

चहुवान और भीलों के आपसमें कितना बड़ाभारी प्रेम था वह ८८२ वीं चौपाई से विदित होता है। यदि आज भी समस्त चत्रिय मात्र में ऐसा जातीय प्रेम साहस और संगठन होजाय तो सहज में हिन्दूस्तान का उद्धार हो सकता है ।

११३ भागे हुए वीरों को चुरं नीकें कह कर दूसरे दिन बादशाह ने लड़ने के लिये मैदान में खड़े किए।राजपूत तो सदैव प्राण हथेली पर रक्खे हुए थे बीजलियों के समान यवनों पर टूट पड़े । दोनों में इस तरह कड़ा चूर मार उड़ी कि चण भर में रक्त की नदियां बह निकली । वेग से बहती हुई श्रोणित सरिता में जहां वहां पड़े हुए हाथियों के शव वास्तविक चट्टानों से भासित होते थे । वीरों के हाथ पांव जंघादि कटे हुए अवयव जलचर जंतुओं के समान तैरते जाते थे । वीरों के सिर केस;

सिवार और ढाल कछु ऐसी प्रतीत होती थी नवयुवावीरों के कटे हुए मस्तक कमल से नजर आते थे इस भीषण युद्ध में अल्लाउद्दीन के ७५ हाथी, सवालाख घोड़े, ७०० निशान वाले, और अगणित योद्धा काम आए। सिकंदरशाह, सेरखां, महरमखां, मोहब्बतखां, मुदफ्फतरमुजफ्फर, नूरनिजाम आदि मुसलमान मारे गये और रावजी की तरफ के भी नामी २ चार सौ योद्धा खेत रहे। इसी भारी मार में हम्मीर ने अपना हाथी अल्लाउद्दीन के सनमुख किया और ललकार के रावजी बोले कि अब तक वृथा ही रक्त प्रवाह हुआ, अब आइये तुम और हम दोनों ही लड़ कर इस युद्ध को समाप्त करलें ! यह सुन मंत्री की सलाह से अल्लाउद्दीन भाग निकले और उन्हीं की युद्ध सामग्री राजपूतों के हाथ लगी ॥

११४ बादशाह ने विश्राम लेकर फिर भी हम्मीर के पास संधि का प्रस्ताव भेजा लेकिन उसने अपना हट न छोड़ा और दूत के साथ लिख भेजा कि अल्लाउद्दीन शत्रु के, सन्मुख विनती करना यह तुम्हारी नितान्त कायरता छल मय चातुरता का चिन्ह है। जब मेरे सब जाति भाई मरचुके, तब मुझे जिन्दा रहकर क्या करना है। उस समय एक भाट ने कहा कि सिंह गमन सत्य पुरुष वचन कदली फलत इकसार ॥ तिरिया तेल हम्मीर हट, चढ़े न दूजी बार ॥ १ ॥ निदान बादशाह ने

शेष और और नयी फौज संग्रहित कर भयंकर वेग से किले पर आक्रमण किया राजपूत वीर भी प्राणों का सर्वथा मोह छोड़, वहित वेग से यवनों पर टूट पड़े । बड़ा ही घमशाण युद्ध हुआ। कछु जंत्रन तोप रुकंत नहीं । तजि चापन चक्रन बान जिहीं किरवान लई करि बाजि चढ़े । चहुवान अमानसु खेत बढ़े ॥ ९३३ ॥ उतमीर वजीर रुसाहि निजं । करि कोप तबै पति साहसजं ॥ तरवार अपार दुधार बहै । सब साहि सुमैन समूहद है ॥ ९३४ ॥ कटि ग्रीव भुजा धर सों विफरे । मनु काटि करे रस कृत हरे, उडि मत्थपरें घरुंड उठै। चहुवान घरा महधार उठै ॥९३५॥ सिर मारत हाक पड़े धरमें । धर जुज्झत जुद्ध करें अर में, कर जोर कटार सुं अंग बहै । बहु खंजर पंजर देह दहै ॥९३६॥ बहु रंचक मुष्टक वत्थ परें । मल जुद्ध मयुद्ध सुधीर करे ॥ पंचरंग अनग्गिय खेत बन्यो । बकसी नृपसाह को आप हन्यो ॥ ९३७ ॥ भयभीत सुसाह की फौज भगी । घमसान मसान सुज्योति जगी । परियो बकसी लखि नैन तवै उलटो गज कीन सुसाह जवै ॥ ९३८ ॥ इक संग वजीर न और नरं । फिरि रोकिये साह अनंतभरं ॥ चहुवान हम्म सुजानि कहै । यह मारत साहि सुपाप अहै ॥९३९ ॥ अभिषेक लिलाट कियो इनके । मही ईश कहावत है तिनके । घरि अग्र सुसाह को पील जबै । जहँ रावहम्मीर-सुलाये पगे ॥ ९४० ॥ अब साहि सुराव कही तब ही तुम जाहु दिल्ली न डरो अब ही

लखि साह को लोग मुरकि चल्यौ नृप आप हम्मीर सु खेत भिल्यौं ॥ ६४१ ॥ इस युद्ध में वधीजी के मरने पर क्षुधित मृगराज की भांति रण बांकुरे राजपूतों का वेग मुसलमानी सेना क्षण भर भी नहीं सहसकी और बड़े २ सैनिक अमीर उमराव बादशाह को अकेला छोड़ कर भेड़ बकरियों की भांति भाग उठे। राजपूत सेना ने अल्लाउद्दीन को हाथी सहित चौतरफ से घेर लिया और उसे पकड़ हम्मीर के पास ले आये। लाल नेत्र कर हम्मीर बोले अये देश के शत्रु अब तू बता तुझे किस मौत मारुं। यह देख बादशाह भय भ्रान्त होगये, और गद्गद् स्वर से नम्रता के साथ बोले कि वीर रावहम्मीर अब मैं तुम्हारे शरणागत हूं मुझे जीवित दान दें। आज ही मैं दिल्ली लौट जाउंगा और फिर कभी रणथंभवर पर चढ़ाई न करुंगा। यह सुन रावजी का क्रोध शांत होगया और बाद-शाह को उसकी फौज में पहुंचा दिया। छोड़ी खेत पत साह तब पैं कोस द्वै जाय ॥ हसम सकल चहुवान ने। लीनो तबै छिनाय ॥ ६४५ ॥ लिए साही निसान तब। बानाजीत बनाय ॥ और सम्हारी सुखेत को। घायल सोधि उठाय ॥ ६४६ ॥ सब के जतन कराय कै। देस काल समभाय ॥ राव जीति गढ़ को चले। हर्ष न हृदय समाय ॥ ६४७ ॥ बिन जाने नृप हर्ष में। गय भूलि यह बात ॥ साही निसान अग्र करी। चले भवन हर्षात ॥ ६४८ ॥ मुसलमानी झंडियों को

गढ में आता देख रानियों ने जान लिया कि रावजी खेत हार गए और यह किले पर शाही सेना आरही है। ऐसा विचार कर सपरिवार १८ सौ वीर महिलाओं सहित समस्त रानियें बारूद बिछा कर ऊपर बैठ गई और अग्नि लगा कर शाका किया। जब रावजी ने किले में आकर यह सोचनीय कांड देखा तो बड़ा ही अफसोस हुआ। सब सर्दारों के मना करने पर भी रावजी ने शिवालय में जाकर पूजन कर अपने ही हाथों से खड्ग खींच कमल पुष्प के समान अपना माथा उतार के शिवजी को चढ़ा दिया। प्राण छोडते समय रावजी ने यह वरदान मांगा कि अगर मैं पुनः जन्म धारण करूं तो इसी वीर क्षत्रिय कुल में कि जिससे देश सेवा का मुझे पुनः सौभाग्य प्राप्त हो। यह कह करे महाराज राव हम्मीर ने सं० १३५८ श्राव० शु० ५ को वैकुण्ठ धाम का मार्ग लिया। राव हम्मीर और महिमा शाह के दपर्दमय मस्तक आज भी महादेव के मंदिर में मौजूद है॥

११५ इस सोचनीय घटना के बाद सुरजनसिंह, रत्नपाल आदि निमकहरामी नख ने बादशाह को जाकर बधाई दी कि, आप दिल्ली न पधारें। हमीर सकुटुम्ब परमधाम पहुंच गए है। यह सुन बादशाह को अपार आनन्द हुआ। निदान जब बादशाह की असवारी जीत के नगारे देती सप्तपोल दरवाजे

लखि साह को लोग मुरकि चल्यौ नृप आप हम्मीर सु खेत झिल्यौ ॥ ६४१ ॥ इस युद्ध में वधीजी के मरने पर क्षुधित मृगराज की भांति रण बांकुरे राजपूतों का वेग मुसलमानी सेना क्षण भर भी नहीं सहसकी और बड़े २ सैनिक अमीर उमराव बादशाह को अकेला छोड़ कर भेड़ बकरियों की भांति भाग उठे। राजपूत सेना ने अल्लाउद्दीन को हाथी सहित चौतरफ से घेर लिया और उसे पकड़ हम्मीर के पास ले आये। लाल नेत्र कर हम्मीर बोले अये देश के शत्रु अब तू बता तुझे किस मौत मारुं। यह देख बादशाह भय भ्रान्त होगये, और गद्गद् स्वर से नम्रता के साथ बोले कि वीर रावहम्मीर अब मैं तुम्हारे शरणागत हूं मुझे जीवित दान दें। आज ही मैं दिल्ली लौट जाउंगा और फिर कभी रणथंभवर पर चढ़ाई न करुंगा। यह सुन रावजी का क्रोध शांत होगया और बादशाह को उसकी फौज में पहुंचा दिया। छोड़ी खेत पत साह तब परै कोस द्वै जाय ॥ हसम सकल चहुवान ने। लीनो तबै छिनाय ॥ ६४५ ॥ लिए साही निसान तब। बानाजीत बनाय ॥ और सम्हारी सुखेत को। घायल सोधि उठाय ॥ ६४६ ॥ सब के जतन कराय कै। देस काल समझाय ॥ राव जीति गढ़ को चले। हर्ष न हृदय समाय ॥ ६४७ ॥ बिन जाने नृप हर्ष में। गय भुलि यह बात ॥ साही निसान अग्र करी। चले भूवन हर्षात् ॥ ६४८ ॥ मुसलमानी झंडियों को

यहां तक कि भगवान के मंदिर में जाकर जिनेन्द्रदेव के दर्शन पूजन कीए बिना अन्न जल भी नहीं लेते थे। पृथ्वीराज रासो में लिखा है कि वीसलदेवजी के पडिहारिन पट-रानी से सारंगदेव नामक पुत्र उत्पन्न हुआ परन्तु पुत्र के जन्मते ही माता का देहान्त होगया तो वीसलदेवजी ने एक विश्वासु कन्या प्रसूद ओसवाल स्त्री को सारँगदेवजी के पालन -पोषण-पर नियत किया। उस महाजन स्त्री ने अपनी कन्या नंदनी और सारंगदेव का अच्छी तरह से पालन पोषण किया। जन्म काल से ही साथ २ रहने के कारण उन दोनो में भाई बैहन के समान गाढ़ी प्रीति होगई थी। जब नन्दिनी की उमर नो वर्ष की हुई तो वीसलदेवजी ने एक सुन्दर महाजन युवावर के साथ उसका विवाह कर दिया किन्तु शिकार करते दैवयोग से उस युवाको सिंह ने भक्षण कर लिया और वह कन्या विधवा हो गई। इससे सारँगदेवजी के हृदय में ऐसा शोक हुआ कि वे शस्त्र बांध कर हिंसक कार्यों से विरक्त हो बैठे। और योगीश्वर के समान हो वीतराग देव के ध्यान में लीन होगए। यथा अति दुचित्त भयो सारंगदेव। नितप्रति करें अरहंत सेव॥ बुध धम्म लियो बंधे नतेग। सुनिश्चयन राज्ञमन मौउदेग॥ ३४८॥ पृ० रा० प्राचीन इतिहासों से पाया जाता है कि शुरुआत में चौहान आदि सभी ही क्षत्रिय जातियां जिन धर्म को पालने वाली थी। जिन शब्द का

पर आ पहुंची तो, एक मारण सर्दार जोकि राव हम्मीर का माहबत था, तलवार खींच कर यमदूत के समान यवनों पर कूद पड़ा, बड़े २ यवनों को यमालय भेजकर वह बहादुर क्षत्रिय, वीरगती को प्राप्त हुआ, जिसका पाषाणमय बड़ा जंगी मस्तक आज भी रणथंभ द्वार पर पड़ा हुआ है।

११६ इसके बाद समस्त मीन किलेदारों ने भी शाही फोज पर धावा बोल दिया। अन्त में बड़ी भारी खून खराबी के साथ किले पर सुलतान का अधिकार होगया। उस समय सर्व संहार मूर्ति से मुसलमानों ने किले में प्रवेश कर हिन्दुओं की सर्व सम्पत्ती लूट ली। हिन्दू अबलाओं का सतित्व धर्म नष्ट किया और बहुत से यतियों को मार कर समस्त देव मंदिर तोड़ दिये गये। उन्हीं में जैतराव के पिता महाराज वाहड़देव का बनाया हुआ जैन मंदिर मुख्य था। कहते हैं कि मल्लधार हेमचंद्राचार्य संग्रहित और ताड पत्रों पर लिखित हजारों जैन शास्त्र इस मंदिर में भरे हुए थे। काजी की सलाह से सबके सब अग्नि देव को अर्पण कर दिये गए। भारत के प्राचीन राज वंश से पता लगता है कि रणथंभगढ़ में अभय देव सूरि के उपदेश से वीसलदेव के पुत्र महाराज पृथ्वीराज का भी बनाया हुआ एक जैन मंदिर था। आनाराव के पिता और वीसलदेव के पुत्र महाराज सारंगदेवजी तो पक्के जैनी थे।

पर आ पहुंची तो, एक मारण सर्दार जोकि राव हम्मीर का माहबत था, तलवार खींच कर यमदूत के समान यवनों पर कूद पड़ा, बड़े २ यवनों को यमालय भेजकर वह बहादुर क्षत्रिय, वीरगती को प्राप्त हुआ, जिसका पाषाणमय बड़ा जंगी मस्तक आज भी रणथंभ द्वार पर पड़ा हुआ है।

११६ इसके बाद समस्त मीन किलेदारों ने भी शाही फोज पर धावा बोल दिया। अन्त में बड़ी भारी खून खराबी के साथ किले पर सुलतान का अधिकार होगया। उस समय सर्व संहार मूर्ति से मुसलमानों ने किले में प्रवेश कर हिन्दुओं की सर्व सम्पत्ती लूट ली। हिन्दू अबलाओं का सतित्व धर्म नष्ट किया और बहुत से यतियों को मार कर समस्त देव मंदिर तोड़ दिये गये। उन्हों में जैतराव के पिता महाराज बाहड़देव का बनाया हुआ जैन मंदिर मुख्य था। कहते हैं कि मल्लधार हेमचंद्राचार्य संग्रहित और ताड पत्रों पर लिखित हजारों जैन शास्त्र इस मंदिर में भरे हुए थे। काजी की सलाह से सबके सब अग्नि देव को अर्पण कर दिये गए। भारत के प्राचीन राज वंश से पता लगता है कि रणथंभगढ़ में अभय देव सूरि के उपदेश से वीसलदेव के पुत्र महाराज पृथ्वीराज का भी बनाया हुआ एक जैन मंदिर था। आनाराव के पिता और वीसलदेव के पुत्र महाराज सारंगदेवजी तो पक्के जैनी थे

अ० १८॥ श्रेयान्स्व धर्मोविगुणः। परधर्मात्स्वनुष्ठितात॥ स्वधर्मे निधनं श्रेयः । परधर्मोभयावहः ॥ ३५ ॥ अ० ३ ॥ जनेश्वर भगवान ही विष्णु है यथा अजरो अमरः सिद्धः । अचिंनः अक्षयोविभुः । अमूर्त्त अच्युतो ब्रह्म । विष्णुरीश प्रजापति ॥ ८ ॥ अनिद्यो विश्वनाथश्च । अजो अनुपवो भवः ॥ अप्रमयो जगन्नाथ । बोध रूपी जिनात्मकः ॥ ६ ॥ जिनसहस्रनाम ॥

११७मत्र से पहले क्षत्रिय जाति को जैन धर्म से पतित करने वाले ब्राह्मण का नाम शंकराचार्य था, उस समय प्रायः चार ही वर्णों ने जैन धर्म छोड़ दिया था। प्रथम शंकराचार्य मरे के बाद ब्राह्मणों का जोर हटा, और चन्द्रगच्छीय रत्नप्रभाचार्य ने मारवाड़ के क्षत्रियों को प्रति बोध देकर पुनः जैन धर्म में दाखिल कीये जिन्हों की ओसवाल नाम से एक काम होगई है। इसको वर्णशंकर लिखने वालों की बड़ी भूल है। कारण ओसवाल जाति पुराणे वासी क्षत्रियों से ही मुसलमानी जमानों में बनाई गई है। उस समय क्षत्रिय जाति पर वारम्बार बड़ी भयंकर आफतें आती थी, इसीलिये जैनाचार्यों के सदुपदेशों से प्राचीन निवासी आर्य, राजपूतों ने, अपना जान माल इजत और धर्म बचाने को महाजन, नाम

अर्थ होता है जीतने वाला। अर्थात् सर्व प्रकार के शत्रुओं को नष्ट करने वाली वीरक्षत्रिय जाती का जो सर्वोत्तम धर्म उसको जिन धर्म कहते हैं। अरिहंत धर्म को त्याग कर अकर्मण्य हो जाना यह ही क्षत्रिय जाति की कमज़ोरी का प्रधान कारण है। ब्राह्मणों ने सब मे पहिलों इन्हीं को यह ही पाठ पढ़ाया कि मनुष्य का किया कुछ भी नहीं होता, सब कुछ ईश्वर करता है ऐसे ही स्वप्न शकुन और लक्षण आदि झूंटे शास्त्रों की बातों पर विश्वास दिला कर इन्होंने अनार्यों के हाथों क्षात्रय जाति को नष्ट करा दी है। क्षत्रिय जाति की अल्प संख्या रहने के कारण इस समय हमारे हिन्दू धर्म का दिन प्रति दिन ह्रास ही होता जारहा है। यदि हिन्दू धर्म का रक्षण करने के लिये समस्त प्राचीन क्षत्रिय जातियां पुनः संगठित न होंगी, तो आज से एक हज़ार वर्षों के बाद हिन्दू धर्म का नाम निशान भी न रहेगा। पुरातन निवासी हिन्दू धर्माभिमानी राजपूत यदि अपनी पवित्र क्षत्रिय जाति को हिन्दुस्थान में सदा अमर रखना चाहते हैं तो वह अब शीघ्र ही सर्व धर्मों को छोड़ कर स्वधर्म में दाखिल हो जायें। गीता में श्री भगवान ने कहा है कि—

सर्वधर्म्मांन्परित्यज्य। मामेकं शरणंव्रज॥ अहं त्वां सर्व पापेभ्यो। मोक्षयिष्योमिमाशुचः॥६६॥

जपां मेडतवाल जग । हरसूरा ठठवाल लघु खंडेल-वाल एग अनेक नाम विरुद ओपमा कह- रूप कीरत कही । प्रथमाद आदऐती पहव साढि वारे न्यात सही ॥ २ ॥ दुहा—साढी चारे न्यात सही । मालुम जग महराण । वखाणं व वखाणिये । सुजे नाहार सुराण ॥ छंद मोती दाम ॥ सुराणा नाहर पारख सोह । मालु मुहणोत लुणावत मोह । डोसी वल दूगड डूगरवाल । ऐती इमन्यात जपौ औसवाल ॥ ४ ॥ केल्हाणी कांकट ककड कार । सचीती जोगड वेगड सार । चावा चमचंम चौधरी चित्रावल ऐती-इम० ॥ ५ ॥ लोढा ललवाणी लोंकड लेख । ब्रंमेचा श्रावक सांड विशेप । सोनी सफला सिरोहा संखे-वाल ऐती० ॥ ६ ॥ पालावत लालंण सेठ प्रमाणे विशो-लिया भीदड भुरट बखाण । तोगाधाडीवाहा तो-डरवाल ऐती इमन्या० ॥ ७ ॥ गुणधर गोलवच्छा गुण, जांण भूराभणशालीय वेहड भाण । पार्वेचा धोयाले पडियाल ऐती० । ८ ॥ राखेचा हींगड मोरच रूप भंडारी य भगलीयानें भूप । वेगाणी रेहड बोगर-वाल ऐती ॥ ९ ॥ बांगाणी बांवलिया विरदैत । वेहू बोथरावल वेद वानैत । वदां पालेचा पहुकरवाल ऐ० ॥ १० ॥ हेडाउ आभू कूभटहेम । पीपोडा घंघरोटा

रख लिया है। ऐसा नहीं करते तो उन्हीं के संतानों का आज अस्तित्व नहीं रहता। जहां २ जैनाचार्यों का प्रचार नहीं था, वहां २ के राजपूत म्लेच्छों के भय से कृपकादि होगये। तो भी जाति उन सबों की राजपूत ही है। क्योंकि कृषी वाणिज्यादि कर्मचारी हो वर्ण कर सकते हैं। आज भी अगर कोई राजपूत माँस मद्य मांसादि अभक्ष वस्तुओं का त्याग कर पवित्र जैन धर्म पालें और सदाचार से वर्त्ते तो ओसवाल कौम में आसकता है। क्योंकि यह कौम जैन में समुद्र के समान है। संसार भर की सभी जातियों के गौत्र इसी में विद्यमान हैं। और सेवक जाति के सभी ब्राह्मण लोग इन गोत्रों को अपना उपास्य देव समझ कर सदा जाप करते रहते हैं। यथा—

११८ अथ न्यात रासो भोजक रूपदेव मेडतियारो कह्यो।

दोहा—सरसती सुपसाय कर। अविरलवयण अथाह। ओसवाल ओपमइला। सकल करूं साराह ॥ १ ॥ कवित्त प्रथम सोढी वारे न्यातरा नाम ॥ श्री श्रीमाल श्रीमाल डीडू औसवाल दिनंकर। चित्रवाल पोरवाड विनै वाघेस चालवर। पोकरवाल खंरवाल

जपां मडतवाल जग । हरसूरा ठठखाल लघु खंडेल-
वाल एग अनेक नाम विरुद ओपमा कह- रूप
कीरत कही । प्रथमाद आदएंती पहव साढि वारे
न्यात सही ॥ २ ॥ दुहा—साढी वारे न्यात सही ।
मालुम जग महराण । वखाणें व क्खाणिये । सुज
नाहार सुराण ॥ छंद मोती दाम ॥ सुराणा नाहर
पारख सोह । मालु मुहणोत लुणावत मोह । डोसी
वल दूगड डूगरवाल । ऐती इमन्यात जपौ औसवाल
॥ ४ ॥ केल्हाणी कांकट ककड कार । सचीती जोगड
वेगड सार । चावा चमचंम चौधरी चित्रावल ऐती
इम० ॥ ५ ॥ लोढा ललवाणी लोंकड लेख । ब्रंमेचा
श्रावक सांड विशेष । सोनी सफला सिरोहा संख-
वाल ऐती० ॥ ६ ॥ पालावत लालंण सेठ प्रमाण विरो-
लिया भीदड भुरट वखाण । तोगाधाडीवाहा तो
डरवाल ऐती इमन्या० ॥ ७ ॥ गुणधर गोलवच्छा गुण,
जाण भूराभणशालीय वेहड भाण। पावेचा धीयाने
पडियोल ऐती० ॥ ८ ॥ राखेचा हींगड मौरच रूप
भंडारी य भगलीयानें भूप । वेगाणी रेहड चोगर-
वाल ऐती ॥ ९ ॥ बांगाणी बांवलिया बिरदैत । बेहू
चोधरावल वेद बानैत । वदां पाललेचा पहुकरवाल,
ऐ० ॥ १० ॥ हेडाउ आभू कूमटहेम । पीपाडा घंघरोटा

गलपेम । मसाहणी भंण मेहतवाल ऐती ॥ ११ ॥ वडहर पागडीयो वणवट । मीसोदीया आसु भगोत अथट । ठावा घोरवाल सांधा ठंठवाल ऐती० ॥ १२ ॥ भुटेरा डागा बोहरा भल्लु । लिगा लुणियां हेमुव खेडिवाल ऐति० ॥ १३ ॥ डीडू अरभंड रोंगी दरियाव चंडालिया चींचड चूतरचाव । रांका करणाट आछा रुणवाल ऐती ॥ १४ ॥ औला धूपिया ओयरी अवकार साहेला साहिलेचो सिरदार । दीगा जग जंमड टूणीवाल ऐ० ॥ १५ ॥ नराणा नंदकुहोड नं खत । बनू कोडीयां वाघचार वखत । घेणु ककडा गीडियां घंघरवाल ऐती ॥ १६ ॥ मारु जांगडा गोसरु मेहराण साडेला सांव सुखा सुजाण । मघी मडलेचा महिमवाल ऐती ॥ १७ ॥ नादेचा हुंवड भहिरण नरेस । सौ जतिया देसलनैच संदेस । डाकलिया दरडा दिल्लीवाल ऐती० ॥ १८ ॥ वहसंदा गांधी बुरड विरद्ध । सघा सांखला वघगोत ससुद्ध । सुवां श्रीमाली श्री श्रीमाली ऐती इम ॥ १९ ॥ मंडोवरा मालविया वडमंन । घाणी चाहूडीया धवल धन । कोठारी का करिया किरणाल ऐ० ॥ २० ॥ सदा सांभरा खींचिया सिणगार । आखा पराइचा गोत खड वड अपार । खटि हड खीवसरा स्तैरवाल ऐती० ॥ २१ ॥ चलोहडा कू पूगलिया घायेल

भुगडिया भेलडिया सरभेल । आंचलिया भरहा उछत्तवाल ऐ० ॥ २२ ॥ छगा छिलिया छजलाणी आछोल । पठाण खाटण छाजड उपटोल । भडकतिया दानसूरा भाल ऐ० ॥ २३ ॥ तिलहरा आईचणा ताछेड । बाघेला वा घरेचा खावड । पुन्नू पुसला फूलकरफाल ऐ० ॥ २४ ॥ गोणा नाहटा वाघमार गंभीर । संवचा सूरिया थूल सधीर । बांधी चोपडा चापणा विरदाल ऐ ॥ २५ ॥ चूरवडिया चखड गांधोचीत । नाहूला झांबट काजल नीत । कटोरिया कावडिया कघोल ऐ० ॥ २६ ॥ पटवा तिलहड वल्हडपीत । जालौरा जागी यथड जीत । इङ्गी हूल छाहो मयीकाल ऐ० ॥ २७ ॥ कुवंशीया असोत्रीया कुलवंत । गडोणी गुणहडीया गुणवंत । भाभू भूगडी खुथडा भूपाल ए० ॥ २८ ॥ गदहीयो गुणहोडया गिरमेर, नावरिया दावरियो नगनेर । पितलिया फोफलिया प्रितपाल ऐ० ॥ २९ ॥ मंठडिया समदडिया मंडलीक । टोकुलिया सौनगरा जसटीक । विलौंडा काकुलिया विहाल ऐ० ॥ ३० ॥ तवा वांठिया नवल खातेह । दूधेडीया डागुलिया थर देह । अछाहा चौगाल ऐ० ॥ ३१ ॥ गुदेचा गैहलडा गुडमंड । झांबावत मग दियाचड झंड । खाचहीया पोकरण छोदरिया खरीवाल

गलपेम । मसाहणी भंण मेडतवाल ऐती॰ ॥ ११ ॥ वडहर पागडीयो वणवट । मीसोदीया आसु भगोत अथट । ठावा घोरवाल सांचा ठंठवाल ऐती॰ ॥ १२ ॥ भुटेरा डागा बोहरा भल्ल । लिगा लुणियां हेमुत खेडिवाल ऐति॰ ॥ १३ ॥ डीडू अरभंड दोंगी दरियाव चंडालिया चींचड चूतरचाव । रांका करणाट आछा रूणवाल ऐती ॥ १४ ॥ भौला धूपिया ओयरी अधकार साहेला साहिलेचो सिरदार । दीगा जग जंमड टूणीवाल ऐ॰ ॥ १५ ॥ नराणा नंदकुहोड न खत । बनू कोडीयां वाघचार बखत । घेणु ककडा गीडियां घंघरवाल ऐती ॥ १६ ॥ मारु जांगडा गोखरू मैहराण साडेला सांच सुखा सुजाण । मधी मडलेचा महिमवाल ऐती ॥ १७ ॥ नादेचा हुंबड अहिरण नरेस । सौ जतिया देसलनैव संदेस । डाकलिया दरडा दिल्लीवाल ऐती॰ ॥ १८ ॥ वहसंदा गांधी बुरड विरद्ध । सधा सांखला वधगोत समुद्ध । सुर्वा श्रीमाली श्री श्रीमाली ऐती इम ॥ १९ ॥ मंडोवरा मालविया वडमंन । घाणो चाहूडीया धवल धन । कोठारी का करिया किरणाल ऐ॰ ॥ २० ॥ सदो सांभरा खींचिया सिणगार । आम्बा पराइचा गोत खड बड अपार । खांटे इट खीवसरा खैरवाल ऐती॰ ॥ २१ ॥ चलौहडा कू पूगलिया घावल

ढींल रामोहीलाल ऐ० ॥ ४३ ॥ देवडा गंछारा झोटा दाम । कचांणा ढींच चढ़ लडिया काम. बोकडिया घोको देख बींगाल ऐ० ४४ डाकडिया कलवाडा गडुं-रोल । मैं छूति तिलखोणा ने सुगंरोल । पचोला सूरपुरा घणपाल ऐ० ॥ ४५ ॥ भरामंड पाहणीया जलभूर । पटणी खिडिया मकमाणा पुर । सरूणा कुंभल मरा स्याल ऐ० ॥ ४६ ॥ जौनला धावलचा जुलमाघ । डाल आली चाझडल ठाकुर राय । बहूला छासटी सुंवाल ऐ० ॥ ४७ ॥ मनी धलोंदा ठांभां भंट मूट । बुबुकिया चांमढ चीपड बूट । पमीर गुलगुलिया झांबटपाल ऐ० ॥ ४८ ॥ फबांढा कालर कोठी काग । गटागट गंट कोल्हा कहि गाग । चंडावलाटगिया ढंढिया चाल ऐ० ॥ ४९ ॥ मंडीती रतंन गोत समंन । वर लघ भोगर सेर सोवंन के हू खिनवाला का मिनवाल ए ।५०। वरढिया वजिरियो कडवांग । भुरटिया बुझरिय भर थांण । कठोतिया कंनक गोत कंठाल ऐ० ॥ ५१ ॥ नीपा बाला नर संघपुरा नेताण । जागेलाने कुल्हण रघलेचा जांण । घडिला मोहिव गीत मिमाल ऐ० ॥ ५२ ॥ पांमोगरा बोरडचा कुल्हाण पचोसा नीवडा । पुरियाण पंणाम ठलो संड गोत गोपाल ऐ. ॥५३॥ गोगडा गोघेडा ढोंढिया बाघेल । जालधरा फांफरिया जाघेल

॥ ३२ ॥ कुचेरा कोचर कु कु रोल । धींगा सेठिया गौवलिया चौल । वेहड़िया जडीया ने वंघवाल ऐ० ॥ ३३ ॥ नघोणी जोधपुरा नख तैत, जसहडगुग-लिया जग जेत । सोनेला रातडिया सीगाल ऐ ॥ ३४ ॥ वेताला डूगरिया वहबोल । सोलंखी टापर टंच मतोल । राठोडा कोटेचा रिखपाल ऐ० ॥ ३५ ॥ चीतोडा गांठ चंचल लोल । मयाणा खापट भूतड भोल । जांगल वाछा पर छाईलवाल । ऐ० ॥ ३६ ॥ भंणस भाडंगा भखंणभीर । कातेला काला देख कंठीर ठगाणा कुंमल ठठरवाल ऐ० ॥ ३७ ॥ सांगाणी वुचा वरवट साच । वजू वणहेडो कोंकट वाच । कवा साका करेचा करंचा किरवाल ऐ ॥ ३८ ॥ सांचोरा गोसल हांस समेह । भादीवा ओभड टंट अछेह । महला मांदी मोहिम वाल ऐ ॥ ३६ ॥ नोवेडा डोलणा वधड नांम घर कट जंघुल जंडूधाम थटेरी वागुलिया थिरवाल ऐ० ॥ ४० ॥ मंडला कूडलिया मोहिलाण । काटील वड़ा कठिहार किसाण । पगोरिया फलो दीया पांचाल ऐ० ॥ ४१ ॥ सांभोता रायजादा सुक-शीण । पीचा टाठिया कठ फोड प्रवीण । गलौड फलोडो गात गुवाल । ऐ० ॥ ४२ ॥ मथांणा मंतडने मल कंस । सुकाली डाहा छैल सुजस । सुडोल सो

भेमर खेमर सुमर मरचट भेंफा मकं चाणा ॥ दोदा राहू माहोथी दल्ला कीयो राज तस हंकाणा ॥ २ ॥ पाराही नोहड लगा पीछु. हल्ला पीपाडाहडा ॥ देवल उमटा साजण दूजे दोहा वहूया दाडंडा ॥ ३ ॥ मरमट दूमाला भाके भंमाला गोठ वाल तार्जा ताला ॥ भूंजा भेड भूंभा पोखर गूंजा वारवाल अगनी पाला ॥ ४ ॥ शिहीर जाट्र मीहिर टाट्र मीहिर असुरिया मेहर काला ॥ डेचर वाला भंखेड कुंवाला चुणावत वल्ला सुलाला ॥ ५ ॥ डावी मक वाला काकस घाना वेहडवाल सोंगण जाना ॥ धूणावत ओराडा चान्दा हाडा डोमवाल सें पट पहाडा ॥ ६ ॥ कांकरवाला सिंधू किर-जाला चिरांवड हण धन पाला ॥ मोरडिया चिंता अनंग विनीता उपारा कासल वाला ॥ ७ ॥ पहडवा पीतक पवडी जोतक कांटपाल खोखड हल्ला ॥ डूंगरजाला छिंदक हाला वड गौती मौखर भल्ला ॥ ८ ॥ वागडी देवल तामडी सेवल वह मणावत ओहिल भूंडा ॥ वन वाल निकुंपा मयाल अनुपा छांदवाल रावल हुंढा ॥ ६ ॥ वह नेडा कावा चाउल जावा लोदवाल कावर मछिया ॥ मौठीस मसानी कायठी पालानी थन्द वाल खांडा वछिया ॥ १० ॥ वह फलावत लौगर सौनी सौगर गोम लाहू केरलवाला ॥ खग वड नाह रेडा गोहलोकन हेडा शीकरवाल खांडा वाला ॥ ११ ॥ डांगर मांडी डाकल सांडी चैस भौमरा चंदवाला ॥ मीम

कचौडीसरूजी कुठ कुदाल ए० ॥ ५४ ॥ एला कहिये कुलरोग अपार । सदावड विरदरोई संवाधर । पदे कवि रूप दया प्रतिपाल ए० ॥ ५५ ॥ कलश । जपा- न्यात जग जोड अवनी ओसवाल उने कर । बन्दी छोड विरद धन वाचिये जिणवर । भयभंजण दुर्भिक्ष राय सधार रयणायर । एक थापण उथापण सहु वात। गुण सायर । प्रतिपाल दयो थंभणप्रथी धर्म सदा हृदय धरणं, कीरती रूप कवियण कहे, ताम अचलसीस हरतरणं ॥ ५६ ॥ इति न्यात रासो संपूर्ण ॥

यह ओसवाल न्यातरासा संवत् १८३६ जेठ सु० ६ शुक्र का लिखा हुआ बीकानेर निवासी सेवक गोपीकिसनजी की पोथी मे मैंने ज्यों का त्यों लिया है । इसके पढने से सज्जनों को विदित होगा कि ओसवाल जाति सर्वोत्तम और भूदेवों के भी वंदनीय हैं ।

११६ जिस २ गौत्र वाले राजपूतों को जैनाचार्यों ने प्रतिबोध देकर ओसवाल कौम में मिलाए, उन्हों का भी न्यातरासा निम्नलिखित है ।

छन्द जात पाढवती ।

सीसोदा माटी सामा सौढा चूडा काठी चावोडा ॥ वाघे- लाचाला वाजावाला वारड राहड पंग बोड़ा ॥ १ ॥ सोलंखी

गोहिल गाहड दागोडा ॥ २२ ॥ जणेजा बोहा मच्छा आदम सांधूका ऊपर सद्दा ॥ गह लाटा बांणा काला गोधा धीरत अर्मा वे हद्द। ॥ २३ ॥

कवित ।

रविवंशी देवडा खीर खेडहर जमहड हर गौडा ॥ वाले टावरी नरिंद भिडंग मलनी भैनर वौडा ॥ ढाही अबल टाक गेलोत कलश सत्राण। ॥ वरंण लांग दैवत वले सिधिया वखाणा ॥ पसाव मूस आम¹ पुरा भैम डैच खंडाहडा ॥ सिंघ राव गौड मौनी गुरा धारा भंजण अर घडा ॥ २४ ॥ सेणा सैभटा वलाहा सेंद लोत खोराणा । भूईया धांधू अभंग जोध गौगलिया सं जाणा ॥ सिंहड चरडा सकल अभग सारंग आहाडा ॥ कोटडिया चंदेल वैर बागल विमाडा ॥ धीर अनेक पालिया धरहाया का धोधरा ॥ अज मीढ चत्र धर लूनिया अरर अम्बे बोहरा ॥ २५ ॥ रघूवंशी केहरी सोमवंशी लहू वासुक ॥ गौतम मरवड सगद अभंग श्री नेक नेहू चाचक ॥ कडचल सेंगर अकल जन वाला ने आला ॥ गहर वार पूर रैक वाला रंढाला ॥ कुकुणा पैस काचा लकेज विसन दाय रावत विहद ॥ वंसी गुवाल पौरिस विवडा खंडवा अण चाल भद ॥ २६ ॥ पूलसत खांगर अपल वले बील कैत व डाला ॥ कायम उज्जिणी कौडिक तुंगी वाहाला ॥

रोट अमीरा वरड अमीरा मौर जाल शक फिरपाला ॥ १२ ॥ सौहाल सदावर राठ धी कुगर वुजरी मट मीगेणा । ढांक-रिया लौटण विहील गौठण बेढवाल मट रवी मेणां ॥ १३ ॥ सुर्नीवाल लौणेद्दा वाण वणद्दा नीमवाल भ्फटिलवाला ॥ वलदावत पाकल लौंघा भ्फाकल घावणियां गजल वाला ॥ १४ ॥ जुडवाल रौंपला टांक माहेला नाग खाटरी गोसींगा ॥ मामाढिया डीगा घांप विहंगा छेल वाल अगनम धींगा ॥ १५ ॥ हड चूर धो धारी मर भंडारी ददाजा चाहिल भारू ॥ चंद्रवाल आमेरी उरड कलेरी सु सावत उमट मारू ॥ १६ ॥ चींवा वाली सार कामुं चाहिल पंण चहवाणं पम्मारं ॥ वैसा बूंदेला गुजर बाडा वानर तूंवर वडवारं ।, १७ ॥ डाहली या डोडा डोडी डामी खुडा हाहिम सूरा ॥ भूटारा कमिया में भ्फोला अभंग पंखी जय उभय पूरा ॥ १८ ॥ मांगलीया ईदा छेना मोहिल चालक लूणां जै चंदा ॥ जै पाला खालत भाणू जादा सर वरिया मोरठ सद्दा ॥ १९ ॥ जाटू तुं वडकीया वानत जो जा पढिहार समछर पांण ॥ कांपलीया धूकड पाहू कलवर जावा जा सींची जाण ॥ २० ॥ वोडाणा कछीया जोडा बुद्धा धारू आमायच छूना ॥ सहता सामौरा खरला सभै जोईया खोधर जूना ॥ २१ ॥ मादा पाहोडा. दहीया मांझी वायौड ममछर वोडा ॥ धीधल निरवाणा मपडा धौड़ा

गोहिल गाहड दागोडा ॥ २२ ॥ जयोजा चोहा मच्छा आदम सांधूका ऊपर सद्दा ॥ गह लाटा यांणा काला गोधा पीरत अभी वे हद्दा ॥ २३ ॥

कवित ।

रविवंशी देवडा खीर खेडहर असहड हर गौडा ॥ याले टांवरी नरिंद भिडंग मलनी भैनर बौडा ॥ ढाही प्रबल टाक गैलोत कलश सत्राणा ॥ वरंग लांग दैवत बले सिधिया बखाणा ॥ पमाव मूस आमा पुरा भैम ईंच खंडाइडा ॥ सिंघ राव गोड मौनी गुरा धारा भंजण अर घडा ॥ २४ ॥ सेणा चा सैमदा बलाहा सैह लोत खोराणा । भूईया धांधू अभंग जोध गौगलिया सं जाणा ॥ सिंहड चरडा सकल अभग सारंग आहाडा ॥ कौटडिया चंदेल वैर बागल विमाडा ॥ पह धीर अनेक पालिया धरहाया का घोषरा ॥ अज मीढ चत्र धर लूनिया अरर अम्बे चोहरा ॥ २५ ॥ रघूवंशी केहरी सोमवंशी तहू वासुक ॥ गौतम मरवड सगह अभंग श्री नेक नेहू चाचक ॥ कडचल सैंगर अकल जन वाला ने जाला ॥ गहर वार पूर रैक वाला रंढाला ॥ कुकणा वैस काया लकेज निसन ढाण रावत विहद ॥ वंसी गुवाल पौरिस विवडा खंडवा अण चाल भद ॥ २६ ॥ पूलसव खांगर अपल बले बील कैत व डाला ॥ कायम उज्जियणी कौडिम तूंगी पाहाला ॥

रोट ध्रमीरा धरढ ध्रमीरा मौर जाल शक किरपाला ॥ १२ ॥
सोहाल सदावर गठ घो कुगर गुर्जरी भट मौगेणा । टांक-रिया
लौटण विहील गाँठण बेढवाल मट रखी मैणा ॥ १३ ॥
सुनीवाल लोणेढा वाण वणढा नीमवाल फ्रांटलवाला ॥
वलदावत पाकल लौधा भाकल धावणियां गजल वाला
॥ १४ ॥ जुडवान रोयला टांक माहेला नाग खाटरी गोसींगा ॥
मामडिया डींगा धांप विहंगा छेल वाल भगनम धींगा ॥ १५ ॥
हड चूर धां धारी मर भंडारी दडाजा चाहिल मारू ॥ चंद्रवाल
श्रामेरी उरड कलेरी सु सावत उमट मारू ॥ १६ ॥ चीवा
वाली सार कामुं चाहिल पंण चहवाणं पम्मारं ॥ वैसा बूंदला
गुजर बाडा वानर तूंवर बडवारं ॥ १७ ॥ डाहली या डोडा
डोडी डाभी सूडा हाहिम सूरा ॥ भूटारा कमिया में फ्रांला
श्रभंग पंखी जय उभय पूरा ॥ १८ ॥ मांगलीया ईदा छेना
मोहिल चालक लूणां जै चंदा ॥ जै पाला खालत भाणू
जादा सर वदिया मोरठ सदा ॥ १९ ॥ जाटू तुं बडकीया
वानत जो जा पडिहार समछर पांण ॥ कांपलीया धूकड पाहू
कलवर जावा जा खींची जाण ॥ २० ॥ बोडाणा कजीया
जोडा वुद्धा धारू श्रामायच छूना ॥ सहता सामौरा खरला
सभे जोईया खोधर जूना ॥ २१ ॥ मादा पाहोडा दहीया
मांकी बाघौड ममछर पोडा ॥ धीघल निरवाणा मपडा घौडा

गोहिल गाहड दागोडा ॥ २२ ॥ जयेजा वोहा मच्छा
आइम सांधूका ऊपर सद्दा ॥ गह लाटा वांणा काला गोधा
वीरत अमी वे हद्दा ॥ २३ ॥

कवित ।

रविवंशी देवडा खीर खेडहर जसहड हर गौडा ॥ चाले
दावरी नरिंद भिडंग मलनी मैनर वौडा ॥ ढाही प्रबल टाक
... कलश सत्राणा ॥ वरंग लांग दैवत वले सिधिया
वखाणा ॥ पमाव मूस आम[1] पुरा मैस डैंच खंडाहडा ॥ सिंघ
... गौड मौनी गुरा धारा मंजण अर घडा ॥ २४ ॥ सेणा
वी सैमटा बलाहा सेंद लोत खोराणा । भूईया धांधू अमंग
जोध गौगलिया सं जाणा ॥ सिंहड चरडा सकल अभग
सारंग आहाडा ॥ कोटडिया चंदेल वैर वागल विमाडा ॥
पह धीर अनेक पालिया घरहाया का धोधरा ॥ अज मीढ
चत्र धर लूनिया अरर अम्बे वोहरा ॥ २५ ॥ रघूवंशी केहरी
सोमवंशों जदू वासुक ॥ गौतम मरवड सगह अमंग श्री नेक
नेहू चावक ॥ कछवल सेंगर अकल जन चाला ने जाला ॥
गहर वार पूर रैक वाला रंढाला ॥ कुकणा पैस काचा लकेज
निसन ढाण रावत विहद ॥ वंसी गुवाल पौरिस वियडा खंडवा
अण चाल भद ॥ २६ ॥ पूलसत खांगर अपल बले वील
कैत व डाला ॥ कायम उज्जियणी कौडिक चूंगी पाहाला ॥

डेडरिया वगेरेच विहद मीरीसा वांचा ॥ मूजेचा मंडाहड अचल पावेचा आंचा ॥ अमयराव अरनी चंडालिया महाजोध आप हम ताण । खेधिया वांम खटपती खित छत्र उज्जाल मांभी छाण ॥ २६ ॥

॥ दोहा ॥

मामा मापख माहूआ, धागणा वंग रौप । वौच परशगुणा विशुद्ध, अरण कलायत ओप ॥ २८ ॥ जागा घोटड धूंधडा, ऊडजा अणवीह । मायच राठ कुट वीसला, कौमिक गार हामीह ॥ २६ ॥ मंग गेहलडा मारोचा, वैल जै तूंग चडाल । उत्तेगाव उत्कोशि अचर, सहुवे सखिरवाल ॥ ३० ॥ घेसुग पडिहारिया, मेल हत्था मप मांण । सोम अने लोला अलल, मिलिया अमलीमांण । ३१ ॥

॥ इति राजपूत ज्ञाति रासा ॥

१२० राजपूतों का वड़ा गौत्र रासा चारणों के पास है सो मिलने पर प्रकाशित होगा । पुरातन निवासी आर्य राजपूतों में जब तक जातीय संगठन, स्वदशाभिमान और क्षात्रधर्म बना रहा तबतक तो, भारतवर्ष गुलामी से बचता रहा, परन्तु एक जयचन्द की ही स्वार्थ सिद्धि के कारण सर्व क्षत्रिय जातियों को नुकसाण उठाना और म्लेच्छों का गुलाम बनना पड़ा है ।

जैनाचार्यों के उपदेश से राजपूत लोग जैन महाजन होगये तथा वैश्यवृत्ति धारण की सो तो ठीक, परन्तु हमेशा के लिये अकर्मण्य होकर मुर्दों के समान पड़ा रहना और स्वदेश, धर्म, जाति के लिये कुछ भी पुरुषार्थ न करना यह बड़ी शर्म की बात है। किसी जैन शास्त्र में ऐसा लेख नहीं है कि अपने रक्षण के लिये शत्रुओं का सामना न करो॥ जैन शास्त्र में तो लिखा है कि

संघाइणं कज्जे, चूर्णीज्जं चक्कवट्टि मवि। जोणवि चूरइसा हूँ। अणंत संसारि श्रो होई॥ १॥

भावार्थ इसका यह है कि अगर कोई अनार्य म्लेच्छ चतुर्विध श्रीसंघ पर जुल्म करता हो। जिनेन्द्र भगवान की मूर्त्तियां व मन्दिरों को नष्ट भ्रष्ट करता हो। सतियों का सतीत्व धर्म नष्ट करता हो। धर्मशास्त्र या तीर्थों को नष्ट भ्रष्ट करता हो तो समर्थ साधुओं को चाहिये कि उस धर्मविध्वंसक पापियों को सपरिकर चूर्ण कर दें। चाहे वह सार्वभौम चक्रवर्त्ती भी क्यों न हो। दंड देने का पूर्ण सामर्थ्य होने पर भी यदि कोई जैन साधु उस धर्मघातक की उपेक्षा कर छोड़ दें तो वह अनन्त संसारी (जिनआज्ञा-विराधक) होता है॥ जब वीतरागी साधुओं को भी श्री जिनेश्वर भगवान का यह हुक्म है तो गृहस्थों को क्यों न होगा। जैन धर्म यह बड़ा ही सात्विक धर्म है, परन्तु कमजोर लोगों ने इसकी कीमत घटा रक्खी है॥ क्षात्रधर्म छोड़ कर व्यक्तिगत धर्म को सामाजिक और जातीय धर्म से उच्च समझ रक्खा है।

डेडरिया वगेरेच विहद मीरीमा वांचा ॥ मूलेचा मंडाहड अयल पावेचा आंचा ॥ अमयराव अरनो चंडालिया महाजोध आप हम ताण । देखिया वांम खटपती खित छत्र उज्जाल मांझी छाण ॥ २६ ॥

॥ दोहा ॥

मामा भापख माहूवा, धाराणा वंग रोप । वीच परशगुगा विशुद्ध, अरण कलायत ओप ॥ २८ ॥ जागा, घोटड-धूंधडा, ऊडजा अणवीह । मायच राठ कुट चोसला, कौसिक गार हामीह ॥ २६ ॥ मंग गेहलडा मारोवा, वैल जे तूंग वडाल । उत्तेवाव उत्कोशि अचर, सहूवे सखिरवाल ॥ ३० ॥ घेसुग पडिहारिया, मैल हत्था मप मांण । मोम अने लोला अलल, मिलिया अमलीमांण ॥ ३१ ॥

॥ इति राजपूत ज्ञाति रासा ॥

१२० राजपूतों का बड़ा गौत्र रासा चारणों के पास है सो मिलने पर प्रकाशित होगा । पुरातन निवासी आर्य राजपूतों में जब तक जातीय संगठन, स्वदेशाभिमान और क्षात्रधर्म बना रहा तबतक तो, भारतवर्ष गुलामी में बचता रहा, परन्तु एक जयचन्द की ही स्वार्थ सिद्धि के कारण सर्व क्षत्रिय जातियों को नुकसान उठाना और म्लेच्छों का गुलाम बनना पड़ा है ।

ठन आन्तरिक हो ऊपरी या दिखाऊ नहीं । देखो मुसलमानों के फिर्के एक दूसरे से लड़ते झगड़ते रहते हैं। परन्तु अन्य धर्मावलम्बियों से सामना पड़ने पर मुसलमानों का हरएक फिर्का मिलकर अपने पारस्परिक प्रेम और जातीय संगठन का परिचय देता है। राजपूत भाई अगर अपनी प्राचीन क्षत्रिय जाति की सदा उन्नति और मनुष्य-जीवन को सुखमय बना रखना चाहते हैं तो हमारी निम्नलिखित बातों का निरन्तर पालन करें॥

१ प्रथम तो शुद्धि संगठन और दलितोद्धार में पूर्ण शक्ति के साथ लग जाना चाहिये। २ हिन्दू मात्र का रक्षण के लिये तन, मन, धन से सदा तैयार रहना चाहिये। कोई हिन्दू पिट रहा है। कोई सताया जा रहा है। किसी स्त्री पर बलात्कार हो रहा है। कोई बच्चा फुसलाया जा रहा है। पर क्षत्रिय सोचता है मुझे क्या मतलब मैं झगड़े में क्यों पड़ूं। इसका नतीजा वही होता है, जो उस गांव के निवासियों का होना चाहिये, जहां एक झोंपड़ी में आग लगने पर उस झोंपड़ी की तो सब मिलकर आग बुझाते नहीं, अपनी ही अपनी झोंपड़ी की रक्षा करने लगते हैं। और इस प्रकार सारा गांव जल कर खाक हो जाता है। राजपूत भाइयों ऐसा न जानना यह भयंकर आफ़त तुम्हारे पर कभी न आवेगी। या आने पर तुम अकेले

अपने खाने पीने, ऐश आराम, बिरादरी के रीति रिवाज और शादी ग़मी आदि व्यवहारों को ही अच्छा मानते हैं, पर जिस बात से सारे समाज को लाभ पहुँचे, उसकी ओर ध्यान नहीं देते। प्यारे भाइयो आत्मबल पैदा करो। अनात्मा प आत्मा का राज्य स्थापित करो। अपने को देश काल के अनु सार दूसरी जिन्दी कौमों के समान बनाओ। मात्र हिन्दूजाति का बेड़ा पार हो जायगा। जीवन का अर्थ आत्मरक्षण है जो कौम शत्रु का मुकाबला नहीं कर सकती और कोरी शांति चाहती है वह शीघ्र मर जाती है। अतएव जो जीवित रहना हो तो ताकत रखते हुए शान्ति पैदा करो। हमें वह मुर्दों की सी शान्ति न चाहिये। हमें रोगमुक्त पुरुष की सी शान्ति की जरूरत है। हमारे लिये वह शान्ति श्रेयस्कर है जिससे हमारी वृद्धि हो। हिन्दू मात्र को अपना भाई समझना चाहिये, कितनेक लोगों का कहना है कि जैन धर्म यह वणिक् कौम का धर्म है और हिन्दू-धर्म से भिन्न है। मैं कहता हूं कि उसकी समझ में फर्क है। जैन धर्म वणिक् कौम का ही नहीं किन्तु मनुष्य मात्र का धर्म है और हिन्दू-धर्म की ही एक प्रधान शाखा है। जैनियों का तो यह सिद्धान्त है कि—मित्ती मे सव्व भुएसु, वेरं मज्झन केणइ॥ अर्थात् सर्व प्राणी मात्र से मेरी मित्रता है, वैर किसी से नहीं। प्यारे भाइयों यदि सुख चाहते हो तो सब मिल कर प्रेम से संगठित काम करो। पर वह

ठन आन्तरिक हो ऊपरी या दिखाऊ नहीं। देखो मुसलमानों के फिर्के एक दूसरे से लड़ते झगड़ते रहते हैं। परन्तु अन्य धर्मावलम्बियों से सामना पड़ने पर मुसलमानों का हरएक फिर्का मिलकर अपने पारस्परिक प्रेम और जातीय संगठन का परिचय देता है। राजपूत भाई अगर अपनी प्राचीन क्षत्रिय जाति की सदा उन्नति और मनुष्य-जीवन को सुखमय बना रखना चाहते हैं तो हमारी निम्नलिखित बातों का निरन्तर पालन करें॥

१ प्रथम तो शुद्धि संगठन और दलितोद्धार में पूर्ण शक्ति के साथ लग जाना चाहिये। २ हिन्दू मात्र का रक्षण के लिये तन, मन, धन से सदा तैयार रहना चाहिये। कोई हिन्दू पिट रहा है। कोई सताया जा रहा है। किसी स्त्री पर बलात्कार हो रहा है। कोई बच्चा फुसलाया जा रहा है। पर क्षत्रिय सोचता है मुझे क्या मतलब मैं झगड़े में क्यों पड़ूं। इसका नतीजा वही होता है, जो उस गांव के निवासियों का होना चाहिये, जहां एक झोंपड़ी में आग लगने पर उस झोंपड़ी की तो सब मिलकर आग बुझाते नहीं, अपनी ही अपनी झोंपड़ी की रक्षा करने लगते हैं। और इस प्रकार सारा गांव जल कर खाक हो जाता है। राजपूत भाइयों ऐसा न जानना यह भयंकर आफ़त तुम्हारे पर कभी न आवेगी। या आने पर तुम अकेले

ही इसको मिटा दोगे। हिन्दुओं में एक वर्ण दूसरे वर्ण में एक सम्प्रदाय दूसरे सम्प्रदाय से इतना अलग रहता है कि कोई एक दूसरे के दुख दर्द में आडे नहीं आता। यही हाल उस समय था जब भारत पर विदेशियों के हमले हुए। एक राजा चैन करता था, दूसरा लड़ते लड़ते बरबाद होजाता था। फल यह हुआ कि पुराणा हिन्दू राज्य नष्ट होगया ॥ ५ ॥ मुसलमान लोग मुल्ला की बात को मानते हैं। मुल्ला ने जो कुछ भी कह दिया बस सारा समाज उसी के पीछे चल पड़ा। पर हमारे समाज में हर एक आदमी अपने को नेता मानता है। प्रत्येक आदमी यह समझता है कि मेरे बराबर बुद्धिमान कोई नहीं है। लोग जरा भी अपनी इच्छा के अनुसार कार्य नहीं होते ही या तो काम छोड़ देते हैं, या दलबंदी करके एक दूसरे की नुक्ताचीनी में ही सिर फोड़ी करते हैं और सारी ताकत इसी में खरच कर डालते हैं, पर हिन्दू समाज को चाहिये यह खूब सोच समझ कर अपना कोई यथार्थ वीर नेता चुने, और एक बार जिसे अपना अगुआ मानलें उसकी आज्ञा का तब तक पालन करते रहें जब तक वह मुख्य लक्ष्य की ओर अविचल भाव से बढ़ता चला जाय ॥ ६ ॥ एक हिन्दू पर आफत आने पर सारे गांव भर को उसकी मदत के लिये दौड़ना चाहिये। उस समय यह न सोचना चाहिए कि हिन्दूरक्षासमिति तो बची रही लेगी मैं

क्यों झगड़े में पड़ूँ, बल्कि यह सोचना चाहिए कि यदि इसका प्रतिकार या विपदग्रस्त भाई बहनों की सहायता मैं न करूंगा तो और कौन करेगा। हिन्दू समाज सोया हुआ है। थोड़े से आदमी आगे बढ़े हैं। बाकी तो यही कहते हैं कि मन्त्र तो मैं फूँ कूँ और साँप की बांबी में हाथ तू डाल। औरतें उड़ाई जा रही हैं, विधवाएँ भगाई जा रही हैं। बच्चे, चुपके चुपके मुसलमान बनाए जा रहे हैं। गाँव गाँव में मौलवी साधुओं के भेष में घूम रहे हैं। क्या हिंदू फिर भी सोते ही पड़े रहेंगे ॥ ७ ॥ गोत्र ऊपर ख्याल करके अच्छ राजपूत लोग अपने जाति भाई को भी नीच समझ लेते हैं। और कितनेक तो उससे रोटी बेटी व्यवहार बन्द कर देते हैं जिससे वह विचारा अन्य जाति में जा मिलता है, और फल इसका यह होता है कि हमारी प्राचीन राजपूत जाति की संख्या दिन दिन घटती ही जा रही है। अगर यही दशा रही तो एक दिन ऐसा आयगा कि, हमारी प्राचीन राजपूत जाति, संसार से नेस्त नाबूद हो जायगी। अतएव हर एक राजपूत को चाहिए कि वह किसी भी गोत्र वाले अपने जाति भाई से कोई प्रकार की नफरत न करें। बल्कि चाहिए तो यह कि जितने भी राजपूत अन्य जातियों में मिल गए हैं। उन सभों को शुद्ध कर पीछा अपनी राजपूत जाति में मिला लें। और उन्हों से कोई प्रकार की भिन्नता न रक्खें ॥ ८ ॥ मुस-

ही इसको मिटा दोगे। हिन्दुओं में एक वर्ण दूसरे वर्ण से एक सम्प्रदाय दूसरे सम्प्रदाय से इतना अलग रहता है कि कोई एक दूसरे के दुख दर्द में आड़े नहीं आता। यही हाल उस समय था जब भारत पर विदेशियों के हमले हुए। एक राजा चैन करता था, दूसरा लड़ते लड़ते बरबाद होजाता था। फल यह हुआ कि पुराणा हिन्दू राज्य नष्ट होगया ॥ ५ ॥ मुसलमान लोग मुल्ला की बात को मानते हैं। मुल्ला ने जो कुछ भी कह दिया बस सारा समाज उसी के पीछे चल पड़ा। पर हमारे समाज में हर एक आदमी अपने को नेता मानता है। प्रत्येक आदमी यह समझता है कि मेरे बराबर बुद्धिमान कोई नहीं है। लोग जरा भी अपनी इच्छा के अनुसार कार्य नही होते ही या तो काम छोड़ देते हैं, या दल बंदी करके एक दूसरे की नुक्ताचीनी में ही सिर फोड़ी करते हैं और सारी ताक़त इसी में खरच कर डालते हैं, पर हिन्दू समाज को चाहिये वह खूब सोच समझ कर अपना कोई यथार्थ वीर नेता चुने, और एक बार जिसे अपना अगुआ मानलें उसकी आज्ञा का तब तक पालन करते रहें जब तक वह मुख्य लक्ष्य की ओर अविचल भाव से बढ़ता चला जाय ॥ ६ ॥ एक हिन्दू पर आफत आने पर सारे गांव भर को उसकी मदत के लिये दौड़ना चाहिये। उस समय यह न सोचना चाहिए कि हिन्दूरक्षासमिति तो बचा रही लेगी मैं

क्यों झगड़े में पड़ूँ, बल्कि यह सोचना चाहिए कि यदि इसका प्रतिकार या विपदग्रस्त भाई बहनों की सहायता मैं न करूंगा तो और कौन करेगा। हिन्दू समाज सोया हुआ है। थोड़े से आदमी आगे बढ़े हैं। बाकी तो यही कहते हैं कि मन्त्र तो मैं फूँ कूँ और साँप की बांबी में हाथ तू डाल। औरतें उड़ाई जा रही है, विधवाएँ भगाई जा रही है। बच्चे चुपके चुपके मुसलमान बनाए जा रहे हैं। गाँव गाँव में मौलवी साधुओं के भेष में घूम रहे हैं। क्या हिंदू फिर भी सोते ही पड़े रहेंगे ॥ ७ ॥ गौत्र ऊपर ख्याल करके अब राजपूत लोग अपने जाति भाई को भी नीच समझ लेते हैं। और कितनेक तो उससे रोटी बेटी व्यवहार बन्द कर देते हैं जिससे वह विचारा अन्य जाति में जा मिलता है, और फल इसका यह होता है कि हमारी प्राचीन राजपूत जाति की संख्या दिन दिन घटती ही जा रही है। अगर यही दशा रही तो एक दिन ऐसा आयगा कि, हमारी प्राचीन राजपूत जाति, संसार से नेस्त नाबूद हो जायगी। अतएव हर एक राजपूत को चाहिए कि वह किसी भी गौत्र वाले अपने जाति भाई से कोई प्रकार की नफरत न करें। बल्कि चाहिए तो यह कि जितने भी राजपूत अन्य जातियों में मिल गए हैं। उन सबों को शुद्ध कर पीछा अपनी राजपूत जाति में मिला लें और उन्हीं से कोई प्रकार की भिन्नता न रक्खें ॥ ८ ॥ मुस-

लमानी बादशाओं के जमाने में ८०० वर्षों के अन्दर सात करोड़ राजपूतों को जबरन मुसलमान बनाये गए थे। अगर कोई मुसलमान भाई अपनी खुशी से पीछा हिन्दू बनना चाहे तो हिन्दू मात्र का यह परम धर्म है कि उसको कुछ प्रायश्चित देकर, बेशक हिंदू बना लें। और उसके साथ अपने भाई का सा बर्त्ताव रक्खें। रोटी बेटी आदि व्यवहारों में उसके साथ कोई प्रकार की दुभांत नहीं रखना चाहिए ॥ ६ ॥ किसी भी कारण से अगर कोई राजपूत भाई वैश्य कृषक आदि जातियों में चला गया हो तो अब उसको चाहिए कि शीघ्र ही वह अपनी मूल राजपूत जाति में पीछा आजावे और अन्य राजपूत भाइयों को चाहिए कि उसको कुछ भी प्रायश्चित न देकर अपनी जाति में मिला लेवें ॥ १० ॥ स्वजाति की कन्या न मिलने के कारण किसी राजपूत ने विजाति की औरत के साथ लग्न कर लिया हो तो वह स्त्री गुरुमंत्र तीर्थ स्नान ब्रह्म भोजन आदि से शुद्ध हो सकती है। औरत के कारण अपने भाई को जाति बहार कभी न करना चाहिए। बड़े बड़े चक्रवर्त्ती हिंदू राजाओं ने भी म्लेछों की कन्याओं से लग्न किया है और उन्हों के पुत्र अपने बाप की गद्दी ऊपर बैठ कर बड़े बड़े राजपूतों की कन्या परणे हैं। प्राचीन इतिहास और धर्म शास्त्र साक्षी देता है कि क्षत्रिय चार ही वर्णों

की कन्या परण सकता है ॥ ११ ॥ विजाती की कन्या लेकर अगर प्रायश्चित शुद्धि न हुई हो तो भी उस राजपूत को अपनी बिरादरी से सर्वथा खारिज नहीं करना चाहिए। बेटी व्यवहार थोड़े दिनों के लिये यदि रुक जाएँ तो भी रोटी व्यवहार न तोड़ना चाहिए। उसको सर्वथा जातिभ्रष्ट कर देने पर दो रोगली सन्तान पैदा होकर क्षत्रीय जाति को कमजोर कर देती है। अनार्य और असभ्य जातिया स्त्री की संतान भी तीसरी पीढ़ी में शुद्ध राजपूत होजाती है, ऐसा क्षत्रिय जाति का नियम है ॥ १२ ॥ अपने देश में कन्या न मिलने के कारण अगर कोई गरीब राजपूत भाई दूसरे देश में जाकर किसी निर्धन राजपूत की बेटी परण कर ले आवें तो दूसरे राजपूतों को चाहिए कि उस कन्या के विषय में कुछ भी छाण बीण न करें। गौत्र जाति विगेरे की झूठी नुक्ताचीनी कर के कितनके अदूरदर्शी राजपूत बिचारे गरीब क्षत्रिय का घर ही नहीं बसने देवे हैं ॥ १३ ॥ माता, नानी, दादी, और खुद का, यह ४ गोत्र छोड़कर प्राचीन राजपूतों में लग्न करने का रिवाज है। चार गौत्र टालने में अगर किसी की गलती हो तो उस को जाहातर में नहीं लाना चाहिए भूल को दबादेना चाहिये और उसको जाति बहार नहीं करनां चाहिए सब से पुराना रिवाज तो फक्त अपना ही गौत्र टालने का है ॥ १४ ॥ कन्या का पैसा लेना राजपूत को हराम है। कन्या बेचने वाला कसाई से भी बढ़ कर पापी है। वह

लमानी बादशाओं के जमाने में ८०० वर्षों के अन्दर मात करोड़ राजपूतों को जबरन मुसलमान बनाये गए थे। अगर कोई मुसलमान भाई अपनी खुशी से पीछा हिन्दू बनना चाहे तो हिन्दू मात्र का यह परम धर्म है कि उसको कुछ प्रायश्चित देकर, बेशक हिंदू बना लें। और उसके साथ अपने भाई का सा वर्त्ताव रक्खें। रोटी बेटी आदि व्यवहारों में उसके साथ कोई प्रकार की दुभांत नहीं रखना चाहिए ॥ ९ ॥ किसी भी कारण से अगर कोई राजपूत भाई वैश्य कृषक आदि जातियों में चला गया हो तो अब उसको चाहिए कि शीघ्र ही वह अपनी मूल राजपूत जाति में पीछा आजावे और अन्य राजपूत भाइयों को चाहिए कि उसको कुछ भी प्रायश्चित न देकर अपनी जाति में मिला लेवें ॥ १० ॥ स्वजाति की कन्या न मिलने के कारण किसी राजपूत ने विजाति की औरत के साथ लग्न कर लिया हो तो वह स्त्री गुरुमंत्र तीर्थ स्नान ब्रह्म भोजन आदि से शुद्ध हो सकती है। औरत के कारण अपने भाई को जाति बहार कभी न करना चाहिए। बड़े बड़े चक्रवर्ती हिंदू राजाओं ने भी म्लेच्छों की कन्याओं से लग्न किया है और उन्हीं के पुत्र अपने बाप की गद्दी ऊपर बैठ कर बड़े बड़े राजपूतों की कन्या परणे हैं। प्राचीन इतिहास और धर्म शास्त्र साक्षी देता है कि क्षत्रिय चार ही वर्णों

की कन्या परण सकता है ॥ ११ ॥ विजाती की कन्या लेकर अगर प्रायश्चित शुद्धि न हुई हो तो भी उस राजपूत को अपनी बिरादरी से सर्वथा खारिज नहीं करना चाहिए। बेटी व्यवहार थोड़े दिनों के लिये यदि रुक जाएँ, तो भी रोटी व्यवहार न तोड़ना चाहिए। उसको सर्वथा जातिभ्रष्ट कर देने पर दो रोगली सन्तान पैदा होकर क्षत्रीय जाति को कमजोर कर देती है। अनार्य और असभ्य जातिया स्त्री की संतान भी तीसरी पीढ़ी में शुद्ध राजपूत होजाती है, ऐसा क्षत्रिय जाति का नियम है ॥ १२ ॥ अपने देश में कन्या न मिलने के कारण अगर कोई गरीब राजपूत भाई, दूसरे देश में जाकर किसी निर्धन राजपूत की बेटी परण कर ले आवें तो दूसरे राजपूतों को चाहिए कि उस कन्या के विषय में कुछ भी छाण बीण न करें। गोत्र जाति विगेरे की झूटी नुक्ताचीनी कर के कितनके अदूरदर्शी राजपूत बिचारे गरीब क्षत्रिय का घर ही नहीं बसने देते हैं ॥ १३ ॥ माता, नानी, दादी, और खुद का, यह ४ गोत्र छोड़कर प्राचीन राजपूतों में लग्न करने का रिवाज है। चार गोत्र टालने में अगर किसी की गलती हो तो उस को जाहातर में नहीं लाना चाहिए भूल को दबादेना चाहिये और उसको जाति बहार नहीं करना चाहिए सब से पुराना रिवाज तो फक्त अपना ही गोत्र टालने का है ॥ १४ ॥ कन्या का पैसा लेना राजपूत को हराम है। कन्या वेचने वाला कसाई से भी बढ़ कर पापी है। वह

लमानी बादशाओं के जमाने में ८०० वर्षों के अन्दर सात करोड़ राजपूतों को जबरन मुसलमान बनाये गए थे। अगर कोई मुसलमान भाई अपनी खुशी से पीछा हिन्दू बनना चाहे तो हिन्दू मात्र का यह परम धर्म है कि उसको कुछ प्रायश्चित देकर, बेशक हिंदू बना लें। और उसके साथ अपने भाई का सा बर्त्ताव रक्खें। रोटी बेटी आदि व्यवहारों में उसके साथ कोई प्रकार की दुभांत नहीं रखना चाहिए ॥ ६ ॥ किसी भी कारण से अगर कोई राजपूत भाई वैश्य कृषक आदि जातियों में चला गया हो तो अब उसको चाहिए कि शीघ्र ही वह अपनी मूल राजपूत जाति में पीछा आजावे और अन्य राजपूत भाइयों को चाहिए कि उसको कुछ भी प्रायश्चित न देकर अपनी जाति में मिला लेवें ॥ १० ॥ स्वाजाति की कन्या न मिलने के कारण किसी राजपूत ने विजाति की औरत के साथ लग्न कर लिया हो तो वह स्त्री गुरुमंत्र तीर्थ स्नान ब्रह्म भोजन आदि से शुद्ध हो सकती है। औरत के कारण अपने भाई को जाति बहार कभी न करना चाहिए। बड़े बड़े चक्रवर्ती हिंदू राजाओं ने भी म्लेच्छों की कन्याओं से लग्न किया है और उन्हों के पुत्र अपने बाप की गद्दी ऊपर बैठ कर बड़े बड़े राजपूतों की कन्या परणे हैं। प्राचीन इतिहास और धर्म शास्त्र साक्षी देता है कि क्षत्रिय चार ही वर्णों

की कन्या परण सकता है ॥ ११ ॥ विजाती की कन्या लेकर अगर प्रायश्चित शुद्धि न हुई हो तो भी उस राजपूत को अपनी बिरादरी से सर्वथा खारिज नहीं करना चाहिए। बेटी व्यवहार थोड़े दिनों के लिये यदि रुक जाएँ तो भी रोटी व्यवहार न तोड़ना चाहिए। उसको सर्वथा जातिभ्रष्ट कर देने पर दो रोगली सन्तान पैदा होकर क्षत्रीय जाति को कमजोर कर देती है। अनार्य और असभ्य जातिया स्त्री की संतान भी तीसरी पीढ़ी में शुद्ध राजपूत होजाती है, ऐसा क्षत्रिय जाति का नियम है ॥ १२ ॥ अपने देश में कन्या न मिलने के कारण अगर कोई गरीब राजपूत भाई दूसरे देश में जाकर किसी निर्धन राजपूत की बेटी परण कर ले आवें तो दूसरे राजपूतों को चाहिए कि उस कन्या के विषय में कुछ भी छाण बीण न करें। गोत्र जाति विगेरे की झूठी नुक्ताचीनी कर के कितनके अदूरदर्शी राजपूत बिचारे गरीब क्षत्रिय का घर ही नहीं बसने देते हैं ॥ १३ ॥ माता, नानी, दादी, और खुद का, यह ४ गोत्र छोड़कर प्राचीन राजपूतों में लग्न करने का रिवाज है। चार गोत्र टालने में अगर किसी की गलती हो तो उस को जाहातर में नहीं लाना चाहिए भूल को दबादेना चाहिये और उसको जाति बहार नहीं करना चाहिए सब से पुराना रिवाज तो फक्त अपना ही गोत्र टालने का है ॥ १४ ॥ कन्या का पैसा लेना राजपूत को हराम है। कन्या बेचने वाला कसाई से भी बढ़ कर पापी है। वह

लमानी बादशाओं के जमाने में ८०० वर्षों के अन्दर मात करोड़ राजपूतों को जबरन मुसलमान बनाये गए थे। अगर कोई मुसलमान भाई अपनी खुशी से पीछा हिन्दू बनना चाहे तो हिन्दू मात्र का यह परम धर्म है कि उसको कुछ प्रायश्चित देकर, बेशक हिंदू बना लें। और उसके साथ अपने भाई का सा बर्त्ताव रक्खें। रोटी बेटी आदि व्यवहारों में उसके साथ कोई प्रकार की दुर्भाव नहीं रखना चाहिए ॥ ९ ॥ किसी भी कारण से अगर कोई राजपूत भाई वैश्य कृषक आदि जातियों में चला गया हो तो अब उसको चाहिए कि शीघ्र ही वह अपनी मूल राजपूत जाति में पीछा आजावे और अन्य राजपूत भाइयों को चाहिए कि उसको कुछ भी प्रायश्चित न देकर अपनी जाति में मिला लेवें ॥ १० ॥ स्वजाति की कन्या न मिलने के कारण किसी राजपूत ने विजाति की औरत के साथ लग्न कर लिया हो तो वह स्त्री गुरुमंत्र तीर्थ स्नान ब्रह्म भोजन आदि से शुद्ध हो सकती है। औरत के कारण अपने भाई को जाति बहार कभी न करना चाहिए। बड़े बड़े चक्रवर्ती हिंदू राजाओं ने भी म्लेच्छों की कन्याओं से लग्न किया है और उन्हीं के पुत्र अपने बाप की गद्दी ऊपर बैठ कर बड़े बड़े राजपूतों की कन्या परणे हैं। प्राचीन इतिहास और धर्म शास्त्र साक्षी देता है कि क्षत्रिय चार ही वर्णों

बच्चे बच्चियों को परणा देते हैं वे ब्रह्मघाती हैं। उन्हों के सन्तान परंपरा नहीं चल सकती। कम उम्र में परणा देने से लड़का धातु क्षय होकर कमज़ोर हो जाता है और अनेक रोग से पीड़ित हो कर जल्दी मर जाता है। छोटी उम्र में अगर स्त्री विधवा होगई तो फिर पुनर्लग्न का पाप पल्ले बंधता है अथवा गुप्त अनाचार होता रहता है क्योंकि विना साधुओं के कुदरति नियम को कोई रोक नहीं सकता ॥ १७ विवाह समय लड़के की वय कम से कम १८ वर्ष की और लड़की की उमर कम से कम १५ साल की होना चाहिए। क्योंकि इस समय से ही प्राय स्त्री पुरुषों में गृहस्थाश्रम के काम काज और रोग दुखादि सहन करने की सामर्थ्य प्रगट होने लगती है पूर्ण युवावस्था वाली स्त्री अति बलिष्ट और निरोग संतान को पैदा करती है और कच्ची उमर की स्त्री अल्पायु संतान को पैदा कर मर जाती है। कदाचित् जी भी गई तो माता और पुत्र दोनों ही उमर भर बीमार, और कमजोर रहते हैं ॥ १८ ॥ वृद्धावस्था में भी विवाह न होना चाहिये। कई बुड्ढे ठाकुर मुंह में दांत न होने पर भी विषय वासना से तृप्त नहीं होते और अपनी विरादरी की युवती लड़कियों का व्यर्थ जन्म नष्ट कर देते हैं। मालदार बुड्ढा बाबा तो पांच सात वार परण जाता है और बहुत से निर्धन क्षत्रिय जन्म भर कुंवारे ही रह जाते हैं। नतीजा इसका यह होता है कि विधवा युवतियां और कुंवारे युवक दोनों ही

बच्चे बच्चियों को परणा देते हैं वे महापापी हैं। उन्हों के सन्तान परंपरा नहीं चल सकती। कम उम्र में परणा देने से लड़का धातु क्षय होकर कमजोर हो जाता है और अनेक रोग से पीड़ित हो कर जल्दी मर जाता है। छोटी उम्र में अगर स्त्री विधवा होगई तो फिर पुनर्लग्न का पाप पल्ले बंधता है अथवा गुप्त अनाचार होता रहता है क्योंकि विना साधुओं के कुदरति नियम को कोई रोक नहीं सकता ॥ १७ विवाह समय लड़के की वय कम से कम १८ वर्ष की और लड़की की उमर कम से कम १५ साल की होना चाहिए। क्योंकि इस समय से ही प्राय स्त्री पुरुषों में गृहस्थाश्रम के काम काज और रोग दुखादि सहन करने की सामर्थ्य प्रगट होने लगती है पूर्ण युवावस्था वाली स्त्री अति बलिष्ट और निरोग संतान को पैदा करती है और कच्ची उमर की स्त्री अल्पायु संतान को पैदा कर मर जाती है। कदाचित् जी भी गई तो माता और पुत्र दोनों ही उमर भर बीमार, और कमजोर रहते हैं ॥ १८ ॥ वृद्धावस्था में भी विवाह न होना चाहिये। कई बुड्ढे ठाकुर मुंह में दांत न होने पर भी विषय वासना से तृप्त नहीं होते और अपनी बिरादरी की युवती लड़कियों का व्यर्थ जन्म नष्ट कर देते हैं। मालदार बुड्ढा बाबा तो पांच सात बार परण जाता है और बहुत से निर्धन क्षत्रिय जन्म भर कुंवारे ही रह जाते हैं। नतीजा इसका यह होता है कि विधवा-युवतियां और कुंवारे युवक दोनों ही

बच्चे बच्चियों को परणा देते हैं वे ब्रह्मघाती हैं। उन्हों के सन्तान परंपरा नहीं चल सकती। कम उम्र में परणा देने से लड़का धातु क्षय होकर कमजोर हो जाता है और अनेक रोग से पीड़ित हो कर जल्दी मर जाता है। छोटी उम्र में अगर स्त्री विधवा होगई तो फिर पुनर्लग्न का पाप पल्ले बंधता है अथवा गुप्त अनाचार होता रहता है क्योंकि बिना साधुओं के कुदरति नियम को कोई रोक नहीं सकता॥ १७ विवाह समय लड़के की वय कम से कम १८ वर्ष की और लड़की की उमर कम से कम १५ साल की होना चाहिए। क्योंकि इस समय से ही प्राय स्त्री पुरुषों में गृहस्थाश्रम के काम काज और रोग दुखादि सहन करने की सामर्थ्य प्रगट होने लगती है पूर्ण युवावस्था वाली स्त्री अति बलिष्ट और निरोग संतान को पैदा करती है और कच्ची उमर की स्त्री अल्पायु संतान को पैदा कर मर जाती है। कदाचित् जी भी गई तो माता और पुत्र दोनों ही उमर भर बीमार, और कमजोर रहते हैं॥ १८॥ वृद्धावस्था में भी विवाह न होना चाहिये। कई बुड्ढे ठाकुर मुंह में दांत न होने पर भी विषय वासना से तृप्त नहीं होते और अपनी बिरादरी की युवती लड़कियों का व्यर्थ जन्म नष्ट कर देते हैं। मालदार बुड्ढा बाबा तो पांच सात बार परण जाता है और बहुत से निर्धन क्षत्रिय जन्म भर कुंवारे ही रह जाते हैं। नतीजा इसका यह होता है कि विधवा-युवतियां और कुंवारे युवक दोनों ही

कुचाल में पड़कर क्षत्रिय जाति को मिटियामेट कर देते हैं अतएव क्षत्रिय जाति के हित चाहने वालों को चाहिए कि फक्त एकही स्त्री परणें। साधु के सिवाय अपनी विरादरी में किसी राजपूत को कुवारा न रहने दें। वृद्ध अवस्था में सन्यास धारण कर सात्विक लोगों को क्षत्रिय धर्म का उपदेश दें। कामराज यमराज मोह राजादि शत्रुओं को जीते अर्थात् ५० वर्षो के बाद वृद्धअवस्था मानी गई है। इस में धर्म कृत्य करें॥ १६॥ अगर किसी विधवा राजपूत स्त्री के जीवन वृत्ति का कोई आधार न हो युवावस्था हो ब्रह्मचर्य न पलता हो। इत्यादि अनेक कारणों से यदि उसने अपनी खुशी से किसी सुयोग राजपूत के साथ पुनर्लग्न कर लिया हो तो उन्हों को जाति बाहर कभी न करना चाहिये और बनियों के समान दशा बीसा आदि विशेषण भी उन्हों की संतान को न देना चाहिए। कारण तीन पीढियों के बाद दूषित क्षत्रिय भी शुद्ध राजपूत माना जाता है। गर्भपातादि पाप करने से तो स्वजाति में पुनर्लग्न कर लेना ही अच्छा है॥ २०॥ क्षत्रिय वंश प्रदीप ग्रंथ में लिखा है कि आज कल देश स्थिति के अनुसार क्षत्रिय जाति में भी पुनर्विवाह व विधवाविवाह अवश्य होना चाहिए, ऐसे वेद शास्त्रों में अनेकों प्रमाण मिलते भी हैं। हमने शास्त्रों के आधारानुसार व बड़े २ नामांकित विद्वानों से काशी तक,

परामर्श करके निश्चय किया है कि विधवा विवाहका होना या न होना किसी जाति में उच्चता व नीचता का चिन्ह नहीं है ॥ २१ ॥ दहेज में दासी अब नहीं लेना चाहिए फजूल खर्च बढ़ता है । सदा झगड़ा होता है । और बहुत से खान्दान घराणों में वर्ण शंकरता आ जाती है ॥ २२ ॥ विवाह हो जाने पर स्त्री को अपने पीहर कभी नहीं भेजना चाहिए । जरुरत से यदि चली भी जायें तो तुरत पीछी ले आना चाहिये हाथ में तंगी आने पर पीहर वाले उसके जेवर गिरवी रख देते हैं फिर नहीं छूटने से बड़ा झगड़ा हो जाता है । इधर की बातें उधर और उधर की बातें इधर करती रहती हैं । इधर की चीज उधर और उधर की चीज इधर ला रखने पर बडी थुका फज़ीती होती रहती है । आपस में लडते देख कर लोग राजपूत जाति की हँसी करते हैं ॥ २३ ॥ जेमनवार में गैर जाति के लोगों को कभी नहीं जिमाना चाहिए । अपनी जाति की कुछ भी सेवा नहीं बजाने वाली नमकहरामी जातियों को माल लुटा कर मूर्ख राजपूत कर्जदार हो जाते हैं दूसरी जातियों में खाने को राजपूत तो कभी जाते ही नहीं है फक्त बणियों के साथ १२ वर्षों में एक दो बार काम पडता है सो भी छोड देना अच्छा है । क्योंकि बणिये लोग बडे चतुर होते हैं आटा पीसनादि काम लेकर अपने गांव के लोगों को तो हमेशा कोरे ही रख देते हैं और दूसरे

कुचाल में पड़कर क्षत्रिय जाति को मिटियामेट कर देते हैं अतएव क्षत्रिय जाति के हित चाहने वालों को चाहिए कि फक्त एकही स्त्री परणें। साधु के सिवाय अपनी बिरादरी में किसी राजपूत को कुवारा न रहने दें। वृद्ध अवस्था में सन्यास धारण कर सात्विक लोगों को क्षत्रिय धर्म का उपदेश दें। कामराज यमराज मोह राजादि शत्रुओं को जीते अर्थात् ५० वर्षो के बाद वृद्धअवस्था मानी गई है। इस में धर्म कृत्य करें॥ १६॥ अगर किसी विधवा राजपूत स्त्री के जीवन वृत्ति का कोई आधार न हो युवावस्था हो ब्रह्मचर्य न पलता हो। इत्यादि अनेक कारणों से यदि उसने अपनी खुशी से किसी सुयोग राजपूत के साथ पुनर्लग्न कर लिया हो तो उन्हों को जाति बाहर कभी न करना चाहिये और बनियों के समान दशा बीसा आदि विशेषण भी उन्हों की संतान को न देना चाहिए। कारण तीन पीढियों के बाद दूषित क्षत्रिय भी शुद्ध राजपूत माना जाता है। गर्भपातादि पाप करने से तो स्वजाति में पुनर्लग्न कर लेना ही अच्छा है॥ २०॥ क्षत्रिय वंश प्रदीप ग्रंथ में लिखा है कि आज कल देश स्थिति के अनुसार क्षत्रिय जाति में भी पुनर्विवाह व विधवाविवाह अवश्य होना चाहिए, ऐसे, वेद शास्त्रों में अनेकों प्रमाण मिलते भी हैं। हमने, शास्त्रों के, आधारानुसार व बड़े २ नामांकित विद्वानों से काशी तक,

परामर्श करके निश्चय किया है कि विधवा विवाहका होना या न होना किसी जाति में उच्चता व नीचता का चिन्ह नहीं है ॥ २१ ॥ दहेज में दामी अब नहीं लेना चाहिए फजूल खर्च बढ़ता है । सदा झगड़ा होता है । और बहुत से खान्दान घराणों में वर्ण शंकरता आ जाती है ॥ २२ ॥ विवाह हो जाने पर स्त्री को अपने पीहर कभी नहीं भेजना चाहिए । जरुरत से यदि चली भी जायें तो तुरत पीछी ले आना चाहिये हाथ में तंगी आने पर पीहर वाले उसके जेवर गिरवी रख देते हैं फिर नहीं छूटने से बड़ा झगड़ा हो जाता है । इधर की बातें उधर और उधर की बातें इधर करती रहती हैं । इधर की चीज उधर और उधर की चीज इधर ला रखने पर बडी थुक्का फज़ीती होती रहती है । आपस में लडते देख कर लोग राजपूत जाति की हँसी करते हैं ॥ २३ ॥ जेमनवार में गैर जाति के लोगों को कभी नहीं जिमाना चाहिए । अपनी जाति की कुछ भी सेवा नहीं बजाने वाली नमकहरामी जातियों को माल लुटा कर मूर्ख राजपूत कर्जदार हो जाते हैं दूसरी जातियों में खाने को राजपूत तो कभी जाते ही नहीं है फक्त बणियों के साथ १२ वर्षों में एक दो बार काम पडता है सो भी छोड देना अच्छा है । क्योंकि बणिये लोग बडे चतुर होते हैं आटा पीसनादि काम लेकर अपने गांव के लोगों को तो हमेशा कोरे ही रख देते हैं और दूसरे

परामर्श करके निश्चय किया है कि विधवा विवाहका होना या न होना किसी जाति में उच्चता व नीचता का चिन्ह नहीं है ॥ २१ ॥ दहेज में दामी अंच नहीं लेना चाहिए फजूल खर्च बढ़ता है । सदा झगड़ा होता है । और बहुत से खान्दान घराणों में वर्ण शंकरता आ जाती है ॥ २२ ॥ विवाह हो जाने पर स्त्री को अपने पीहर कभी नहीं भेजना चाहिए । जरुरत से यदि चली भी जायें तो तुरत पीछी ले आना चाहिये हाथ में तंगी आने पर पीहर वाले उसके जेवर गिरवी रख देते हैं फिर नहीं छूटने से बड़ा झगड़ा हो जाता है । इधर की बातें उधर और उधर की बातें इधर करती रहती हैं । इधर की चीज उधर और उधर की चीज इधर ला रखने पर बडी थुका फजीती होती रहती है । आपस में लड़ते देख कर लोग राजपूत जाति की हँसी करते हैं ॥ २३ ॥ जेमनवार में गैर जाति के लोगों को कभी नहीं जिमाना चाहिए । अपनी जाति की कुछ भी सेवा नहीं बजाने वाली नमकहरामी जातियों को माल लुटा कर मूर्ख राजपूत कर्जदार हो जाते हैं दूसरी जातियों में खाने को राजपूत तो कभी जाते ही नहीं है फक्त बणियों के साथ १२ वर्षों में एक दो बार काम पडता है सो भी छोड देना अच्छा है । क्योंकि बणिये लोग बडे चतुर होते हैं आटा पीसनादि काम लेकर अपने गांव के लोगों को तो हमेशा कोरे ही रख देते हैं और दूसरे

गांवों के भी रहने वाले अपने जाति भाइयों को बुला कर जिमा देते हैं। राजपूतों के जीमनवारों में, बनियें, स्त्री बाल-बच्चे और नोकर आदि परिवार सहित वर्ष भर में दस बीस बार सर्व प्रकार की मिठाइयां उड़ाते रहते हैं। पर जब कभी राजपूतों को बुला लेते हैं तो अपनी न्यात जीम कर चले गये के बाद, मामूली भोजन परूस देते हैं। क्या यह क्षत्रिय जाति का अपमान नहीं है ॥ २४ ॥ विवाहादि में अब फिजूल खर्च बिलकुल बंध कर देना चाहिए। अज्ञ क्षत्रिय अपने जाति भाइयों की वर्त्तमान दशा पर तो कुछ ख्याल नहीं करते और हजारों रुपये डूमों को लुटा देते हैं। रंडियें नचाते हैं आतस बाजी छोडते है। फुलवाड़ियें लुटाते हैं। अपनी बिरादरी की ग़रीब और निराधार औरतें चाहे भूखें मर जाएँ कुछ परवा नहीं। परंतु ब्राह्मणों और नाथाणियों को एक एक मोहर की नथें कई कोसों तक गामों गाम पहेराते जाते हैं। अपान निरधन जाति भाई पेट के लिये चाहे मारा मारा फिरता फिरो उसकी बात भी नहीं सुनते और चारण भाटों को हाथियों का दान दिया जाता है। आगलें तोडते हैं, पोलें चुकाते हैं। अपनी जाति के हित के वास्ते साधु चाहे चिल्ला चिल्ला कर मर जाओ, एक फूटी कौडी की भी मदद नहीं करते, परंतु हजारों मुर्ख ब्राह्मण और नाथों को एकेक मोहर की मूरकें पहनाते हैं। पग पूजते हैं। भोजन वचन देते हैं। दक्षिणा में

मोहरें दी जाती हैं। प्रत्युपकार इन्हों का कुछ नहीं और पुन्य भी नहीं होता। सर्व अब्रह्मचारी हैं॥ उपरोक्त व्यर्थ खर्च को सर्वथा रोक कर यदि उस बचत को अपनी जाति की सेवा में लगावें, तो गिरती हुई इस क्षत्रिय जाति का उद्धार सहज में हो सकता है॥ अपनी जाति उद्धार के समान संसार में दूसरा कोई पुण्य ही नहीं है॥ २५॥ मरणे वाले के पीछे नुकता मोसर आदि करना अब कतई बंध कर देना चाहिए। यह भी फ़जूल ही खर्च है। बहुत से क़र्जदार हो कर बरबाद हो जाते हैं अपना घर बार और माल, बच्चों की क्या दशा होगी इसका तो मूर्ख लोग कुछ भी विचार नहीं करते और थोड़े दिनों की झूठी नामवरी के लिये ऋणी होकर सैकड़ों मण खांड गालते हैं। अपनी सर्व पूंजी लगा देते हैं अपनी शत्रु जातियों को भी खूब माल लुटा कर कंगाल हो जाते हैं शुरु से तो प्राचीन राजपूतों में ऐसा रिवाज था कि यदि कोई धनिक अपुत्र क्षत्रिय मर जाता था तो उसकी पूंजी से स्वजातीय यज्ञ होता था॥ अगर कोई सपुत्र निरधन अन्न यास मर गया तो उसके पीछे १२ साधु या ब्राह्मणों को जीमा कर शोक निर्वत्तन कर दिया जाता था। मृत व्यक्ति की पाग पुत्र के सिर बांध कर पंच लोग उसको गृह स्वामी बना देते थे। नुकता कोई भी नहीं करते थे फक्त पिंडदान जल तर्पण और श्राद्ध होते थे॥ २६॥ करज लेकर अपनी

गांवों के भी रहने वाले अपने जाति भाइयों को बुला कर जिमा देते हैं। राजपूतों के जीमनवारों में, बणियें, स्त्री बाल-बच्चे और नोकर आदि परिवार सहित वर्ष भर में दस बीस वार सर्व प्रकार की मिठाइयां उड़ाते रहते हैं। पर जब कभी राजपूतों को बुला लेते हैं तो अपनी न्यात जीम कर चले गये के बाद, मामूली भोजन परूस देते हैं। क्या यह क्षत्रिय जाति का अपमान नहीं है ॥ २४ ॥ विवाहादि में अब फिजूल-खर्च बिलकुल बंध कर देना चाहिए। अज्ञ क्षत्रिय अपने जाति भाइयों की वर्त्तमान दशा पर तो कुछ ख्याल नहीं करते और हजारों रुपये डूमों को लुटा देते हैं। रांडियें नचाते हैं आतस बाजी छोडते हैं। फुलवाड़ियें लुटाते हैं। अपनी बिरादरी की गरीब और निराधार औरतें चाहे भूखें मर जाएँ कुछ परवा नहीं। परंतु ब्राह्मणों और नाथाणियों को एक एक मोहर की नत्थें कई कोसों तक गामों गाम पहेराते जाते हैं। अपान निरधन जाति भाई पेट के लिये चाहे मारा मारा फिरता फिरो उसकी बात भी नहीं सुनते और चारण भाटों को हाथियों का दान दिया जाता है। आगलें तोडते हैं, पौलें चुकाते हैं। अपनी जाति के हित के वास्ते साधु चाहे चिल्ला चिल्ला कर मर जाओ, एक फूटी कौडी की भी मदद नहीं करते, परंतु हजारों मूर्ख ब्राह्मण और नाथों को एकेक मोहर की मूरकें पहनाते हैं। पग पूजते हैं। भोजन वर्त्तन देते हैं। दक्षिणा में

मोहरें दी जाती हैं। प्रत्युपकार इन्हों का कुछ नहीं और पुन्य भी नहीं होता। सर्व अब्रह्मचारी है॥ उपरोक्त व्यर्थ खर्च को सर्वथा रोक कर यदि उस बचत को अपनी जाति की सेवा में लगावें, तो गिरती हुई इस क्षत्रिय जाति का उद्धार सहज में हो सकता है॥ अपनी जाति उद्धार के समान संसार में दूसरा कोई पुण्य ही नहीं है॥ २५॥ मरणे वाले के पीछे नुकता मोसर आदि करना अब कतई बंध कर देना चाहिए। यह भी फ़जूल ही खर्च है। बहुत से कर्जदार हो कर बरबाद हो जाते हैं अपना घर बार और बाल बच्चों की क्या दशा होगी इसका तो मूर्ख लोग कुछ भी विचार नहीं करते और थोड़े दिनों की झूठी नामवरी के लिये ऋणी होकर सैकड़ों मण खांड गालते हैं। अपनी सर्व पूंजी लग देते हैं अपनी शत्रु जातियों को भी खूब माल लुटा कर कंगाल हो जाते हैं शुरु से तो प्राचीन राजपूतों में ऐसा रिवाज था कि यदि कोई धनिक अपुत्र क्षत्रिय मर जाता था तो उसकी पूंजी से स्वजातीय यज्ञ होता था॥ अगर कोई सपुत्र निरधन अन्न ग्रास मर गया तो उसके पीछे १२ साधु या ब्राह्मणों को जीमा कर शोक निर्वत्तन कर दिया जाता था। मृत व्यक्ति की पाग पुत्र के सिर बांध कर पंच लोग उसको गृह स्वामी बना देते थे। नुकता कोई भी नहीं करते थे फक्त पिंडदान जल तर्पण और श्राद्ध होते थे॥ २६॥ करज लेकर अपनी

गांवों के भी रहने वाले अपने जाति भाइयों को बुला कर जिमा देते हैं। राजपूतों के जीमनवारों में, वणियें, स्त्री बाल-बच्चे और नोकर आदि परिवार सहित वर्ष भर में दस बीस बार सर्व प्रकार की मिठाइयां उड़ाते रहते हैं। पर जब कभी राजपूतों को बुला लेते हैं तो अपनी न्यात जीम कर चले गये के बाद, मामूली भोजन परूस देते हैं। क्या यह क्षत्रिय जाति का अपमान नहीं है ॥ २४ ॥ विवाहादि में अब फिजूल खर्च बिलकुल बंध कर देना चाहिए। अज्ञ क्षत्रिय अपने जाति भाइयों की वर्त्तमान दशा पर तो कुछ ख्याल नहीं करते और हजारों रुपये डूमों को लुटा देते हैं। रंडियें नचाते हैं आतस बाजी छोड़ते हैं। फुलवाड़ियें लुटाते हैं। अपनी बिरादरी की गरीब और निराधार औरतें चाहे भूखें मर जाएँ कुछ परवा नहीं। परंतु ब्राह्मणी और नाथाणियों को एक एक मोहर की नथें कई कोसों तक गामों गाम पहेराते जाते हैं। अपान निरधन जाति भाई पेट के लिये चाहे मारा मारा फिरता फिरो उसकी बात भी नहीं सुनते और चारण भाटों को हाथियों का दान दिया जाता है। आगलें तोड़ते हैं, पोलें चुकाते हैं। अपनी जाति के हित के वास्ते साधु चाहे चिल्ला चिल्ला कर मर जाओ, एक फूटी कौडी की भी मदद नहीं करते, परंतु हजारों मुर्ख ब्राह्मण और नाथों को एकेक मोहर की मूरकें पहनाते हैं। पग पूजते हैं। भोजन वर्त्तन देते हैं। दक्षिणा में

कर दिया है। परंतु यह स्मरण रहे कि प्रत्येक मनुष्य को अधिकार है कि वह जितना चाहे उतना धर्मोपार्जन करे। धर्म परमात्मा को प्राप्त करने का साधन है। उसमें धन बल जाति रंग आदि का मिथ्याभिमान नहीं आ सकता। यह माना हुआ सिद्धान्त है कि जिस जाति में धनवान् और बलवान अधिक और दुर्बल तथा दरिद्र कम हो वही संपन्न सभ्य और उन्नत जाति है ॥ २६ ॥ जो कोई मनुष्य अपनी जाति और धर्म पर मिथ्या आक्षेप करे तो उसको अपना शत्रु समझना चाहिए। क्षत्रिय मात्र का फर्ज है कि उसका जरूर प्रतिकार करें। जो अपनी जाति की बदनामी सुन कर चुप रहजाता है वह मनुष्य ही नहीं, किंतु मुरदा या पशु है। अपनी जाति के शत्रु को कोई प्रकार की मदद नहीं देना चाहिए॥ ३० ॥ नीच जाति के स्त्री पुरुषों से कोई ऐसा व्यवहार न रखना चाहिये कि जिससे अपनी पवित्र जाति की लघुता हो। केइ बे समझ राजपूत लोग नीच जाति की औरतों को अपनी धर्म बहनें बनाकर पहरावनी देने को उसके घर जाते हैं यह देख क्षत्रिय जाति के दुश्मन कह देते हैं कि इन दोनों की एक ही बात है। जो अपनी जाति की हलकाही कराता है उसके समान संसार में कोई नीच नहीं है ॥ ३१ ॥ विजाति वालों को कभी नोकर नहीं रखना चाहिये। केई मूर्ख धनिक लोग थोडी पगार में नीच म्लेच्छों को भी अपने घर में नोकर रख लेते हैं। भूल में

जाति वालों के लिये भी कोई प्रकार का जीमण नहीं करना चाहिए। मूर्ख लोग अपनी जाग जमी को तथा उपयागी पशु और कीमती चीजों को पाणी के भाव बेच कर भांति २ के काल कीरावर करते हैं। अपनी जातिरिक्त गैर जाति के लोगों को भी माल लुटा देने के लिये मार्ग जा रोक देते हैं। जीमने के लिये मलेच्छों को भी रेल गाडियों से जा उत्तारते हैं झूटी वाह वाही के लिये व्यर्थ खर्च कर लाखों घर कंगाल हो गये और फिर भी होते ही जा रहे हैं आयंदे पर भी अगर यही हाल रहा तो फिर हमारी जाति की बुरी दशा को ब्रह्मा भी नहीं मिटा सकता ॥ ३७ ॥ ताना मार कर अपने भाइयों से फजूल खर्च कराते है पंचों को चाहिए कि ऐसे २ बदमासों को सजा दें। दूसरे गांवों में नुक्ता की झूटी चिटीया देकर लोगों को बुलालेते हैं ॥ किसी को दूसरी पातल परूस कर कहते है, यह तेरे बाप की है अभी वह मसान में ही लोटता है। इत्यादि कहनेवाले अपनी ही जाति के शत्रु हैं। चत्रियों को चाहिए की अपने जाति भाइयो को ताना न दे। न खुद बे फायदे धन खर्च करें और न किसी को करने दें ॥ ३८ ॥ आप स्वार्थी ब्राह्मणों के वचनों पर कभी विश्वास नहीं करना चाहिए। वही काम करने योग्य है जिससे अपनी जाति की दिनोदिन उन्नति हो। धर्म को ब्राह्मणों ने अपनी योपोती समझ रक्खा है। उन्होने दूसरों के लिये धर्म का द्वार बंद सा

कर दिया है। परंतु यह स्मरण रहे कि प्रत्येक मनुष्य को अधिकार है कि वह जितना चाहे उतना धर्मोपार्जन करे। धर्म परमात्मा को प्राप्त करने का साधन है। उसमें धन बल जाति रंग आदि का मिथ्याभिमान नहीं आ सकता। यह माना हुआ सिद्धान्त है कि जिस जाति में धनवान् और बलवान अधिक और दुर्बल तथा दरिद्र कम हो वही संपन्न सभ्य और उन्नत जाति है ॥ २६ ॥ जो कोई मनुष्य अपनी जाति और धर्म पर मिथ्या आक्षेप करे तो उसको अपना शत्रु समझना चाहिए। क्षत्रिय मात्र का फर्ज है कि उसका जरूर प्रतिकार करें। जो अपनी जाति की बदनामी सुन कर चुप रहजाता है वह मनुष्य ही नहीं किंतु मुरदा या पशु है। अपनी जाति के शत्रु को कोई प्रकार की मदद नहीं देना चाहिए॥ ३० ॥ नीच जाति के स्त्री पुरुषों से कोई ऐसा व्यवहार न रखना चाहिये कि जिससे अपनी पवित्र जाति की लघुता हो। केइ वे समझ राजपूत लोग नीच जाति की औरतों को अपनी धर्म बहनें बनाकर पहरावनी देने को उसके घर जाते हैं यह देख क्षत्रिय जाति के दुश्मन कह देते हैं कि इन दोनों की एक ही जात है। जो अपनी जाति की हलकाही कराता है उसके समान संसार में कोई नीच नहीं है ॥ ३१ ॥ विजाति वालों को कभी नोकर नहीं रखना चाहिये। केई मूर्ख धनिक लोग थोड़ी पगार में नीच म्लेच्छों को भी अपने घर में नोकर रख लेते हैं। भूल में

उसको अच्छी तराह से बीन लेवें तो वह अन्न ४ महिनों तक खूब खाने पर भी न खूटे। परंतु हमारे गूजर और मुसलमान भाई नाज से भरे हुए खेतों में अपनी बकरियों को छोडकर उसी दम खेतों को भेल देते हैं। सैंकड़ों मण अन्न अपनी बकरियों को खिलाकर गरीबों के पेट पर लात मारते हैं। पाला भेलकर, हजारों वृक्षों को काट कूट कर नुकसान ही नुकसान करते हैं ॥३६॥ नाई, खाती, कुंभार, लोहार, बलाई, चमारादि, कमीण, जातियों को खेती कभी नहीं करने देना चाहिए। अपने बाप दादाओं का पेसा छोड़ने पर उक्त जाति या देश सेवा नहीं कर सकती ॥ ३७ ॥ जिन बेजुबान गरीब किसी को कुछ भी न बिगाड़ने वाली बल्कि परोपकारी गउ को हम अपनी मां समझते हैं। हमारे पवित्र पुराणों में जिनका यश गाया गया है। भगवान् आनन्दकन्द श्रीकृष्णचंद्र महाराज जिनके चरणों की धूल अपने श्री मस्तक में लगाते थे। जिनको देश के प्रसिद्ध नेता अपने देश की बहू मूल्य संपत्ति समझते हैं। उन्ही को मारना मुसलमान लोग अपना अनिवार्य धर्म समझते हैं। आर्य राजपूतों को चाहिये कि अपना प्राण जाते हुये भी गौ रक्षण करें। गौ जाति पर इस समय बड़ा भारी संकट है। अजमेर दिल्ली आदि में हिन्दुओं को जलाने के हेतु ही मुसलमान भाई पैलों पर चढ़कर चलते हैं, मणोबंद मांस लाद कर ले जाते हैं हिन्दू देखते रहते हैं परंतु

का कष्ट नहीं होना चाहिए। आये हुए दाम गौ रक्षा में लगना चाहिए। यही बात बैलों के लिये है।

॥ ३६ ॥ हिन्दुओं का यह परम धर्म है किसी भी अहिन्दू को गाय बैल कभी न बेचें। जनेऊ पहन कर कसाई लोग हिंदुओं को धोका देते हैं पशुओं का व्यापार में गौ हत्या के समान ही पाप है वह हिंदू ही नहीं जो अहिंदुओं को गौ बैल देता है।

॥ ४० ॥ राजपूतों को चाहिए जब तक अन्न जल अपने को मिलता रहे मांस मदिरा कभी आचरण न करें। किसी भी निरापराधि को सताना यह क्षत्रियों का धर्म नहीं है। स्मृतियों में आमिसा चरण आपतिकाल के लिये है। क्षत्रियों में वह जाति सर्वोत्तम मानी गई है कि जिसमें मद्य मांस का कभी आचरण नहीं होता।

॥ ४१ ॥ अपना और जाति का हित चाहने वाले क्षत्रियों को चाहिए कि वे सरकारी नौकरी छोड़ कर अन्य की नौकरी कभी न करे। खेती करने वाला जाति हित नहीं कर सकता। सामान्य नौकरी करने वाला अपनी भी उन्नति नहीं

गया था। बहुतों ने जात्यन्तर में मिलकर अपने प्राण बचाये। अपना धर्म बचाने के लिये चोहानों की असंख्य शाखाएं भारत की प्राचीन मीन जाति में मिल गई। दिनों दिन मुसलमानों का ज़ोर बढ़ता ही गया, जिसी से फिर वे अपनी मूल जाति में नहीं आसकें, परन्तु उन्हीं का बेटी व्यवहार तो उन्हीं में होता रहा, जो असली राजपूत है, और मुसलमानों के जुलम से बचने के लिये अपना मीन नाम रख लिया। जितने भी असली राजपूत मीनों में है मिले वह बारह पाल नाम से प्रसिद्ध है। एकैकपाल में सैंकड़ों गोप हैं। सर्व गोत्रों की संख्या बावन्न सो ऊपर होती है। टाड साहब का कथन है कि मैन खास और मीन, पीछे से मिले हुए को कहते हैं मैन भी क्षत्रिय ही हैं। परन्तु विदेशियों के आक्रमण से कमजोर होजाने के सबब निम्न श्रेणी के क्षत्रियों में माने जाते हैं। दोनों श्रेणी के राजपूतों में रोटी व्यवहार ही होता है, बेटी व्यवहार नहीं। जो हो परन्तु अब ज़माना बदल गया है। अंग्रेजी राज्य होजाने के कारण अब क्षत्रिय जाति पर मुसलमानों का अत्याचार नहीं होता। अब सभी राजपूत भाइयों को अपनी २ मूल शाखाओं में आ जाना चाहिए। किन २ राजपूतों की कौन २ मूल शाखा है इस बात का पता अपनी २ कुलाख्यातों से ही लगता है। पुरातनवासी हरएक राजपूत को चाहिये कि अपने २ चारण भाट और जागाओं

कुषांन ॥७॥ आबूगढ राजा बड़ा। चकवे वंश चौहान ॥ कुलदेवी आसा पुरा । भृगु अटल निशान ॥ ८ ॥ आबूगढ़ माथा सरो । शांभर सगत हथांण ॥ रनजीता धौंसो बजैं । भृगु अटल निशान ॥ ९ ॥ आबू ऊपर अचलगढ़ । ऊंचा घणां निवास ॥ अम्बर सूं बातां करें । चतुर भुजा को वास ॥ १० ॥ आबू ऊपर अचल गढ़ । भारत खंड की ढाल ॥ हिंदवाणों को शेहरो । तूरकाणी को शाल ॥ ११ ॥ आबूगढ़ सें ऊतर्या । शांभर दिया मल्लाण । राज कियो अजमेर को ॥ चकवे वंश चौहाण ॥ १२ ॥ तारागढ अजमेर में । हुआ जो भूप अनेक ॥ यदि सब को वरणन करूं । तो लागे वार विशेप ॥ १३ ॥ अजयपाल नृप आदि ले । पृथ्वीराज चौहाण । दिल्ली तखत वेराजियां ॥ फिरी चिहुं खंड आण ॥ १४ ॥ पृथ्वीराज महाराज के । राणीयें महल अनेक ॥ ता सब को वर्णन करूं । तो लागे वार विशेप ॥ १५ ॥ पृथ्वीराज महाराज दिल्लीपति छत्र जो धारी। ताके महल चौबीस शिरोमणी रत्नो उपारी ॥ १६ ॥ नरवरगढ़ मोसाल है । पिहर बूंदी गाम ॥ बेटी भौला राव की । रत्ना देत सु नाम ॥ १७ ॥ दिल्ली कहिए सासरो । पिहर बूंदी धाम । परणी पृथीराज ने । रत्नो, उपावती, नाम

को पूछ कर मुख्य २ घटना सहित अपना क़ुरसीनामा छपा कर प्रसिद्ध करें। उखलानों के चौहानों की कुलाख्यांत मेरे देखने में आई उसी का कुछ अंश यहां लिखा जाता है।

परशुराम जब कोपियो। लियो पिता को बैर परशु लेकर हाथ में। छत्रिय माया हैर ॥ १ ॥ छत्री वंश विनाशियो। रही छत्रि सो पौन। धरा न ठवसी भूप विन। राज करैगो कौन ॥ २ ॥ शशि रविवंश विनस्सतें। असुर हुआ शिरज़ोर। अराजकता बढ़ गई। पड्यो जगत में शौर ॥ ३ ॥ ऋषि सकल भेले हुए। सब ने कियो विचार ॥ क्षत्रिय कुल परगट करां। रची पूतला चार ॥ ४ ॥ आबूगिरी यज्ञ मांडियो। धर्यो वशिष्ट हरी ध्यान ॥ अग्निकुण्ड वेदी रची। तहीं प्रगटें श्री भगवान ॥ ५ ॥ दर्भ पूतला सरजिया। बाजेहिं ढोल निशान। अग्निकुण्ड आबूगिरी ॥ प्रगट भये चौहान ॥ ६ ॥ अग्निकुण्ड से प्रगटिया। चतुर्भुजा चौहान ॥ अश्व समन्वित नीसरा। हाथे खड़ग

कुषांन ॥७॥ आबूगढ राजा बड़ा। चकवं वंश चौहान ॥ कुलदेवी आसा पुरा। भृगु अटल निशान ॥ ८ ॥ आबूगढ़ माथा सरो। शांभर सगत हथांण ॥ रनजीता धौंसो बजै। भृगु अटल निशान ॥ ९ ॥ आबू ऊपर अचलगढ़। ऊंचा घणां निवास ॥ अम्बर सूं वातां करें। चतुर भुजा को वास ॥ १० ॥ आबू ऊपर अचल गढ़। भारत खंड की ढाल ॥ हिंदवाणों को शहरो। तूरकाणी को शाल ॥ ११ ॥ आबूगढ़ से ऊतर्या। शांभर दिया मल्लाण। राज कियो अजमेर को ॥ चकवे वंश चौहाण ॥ १२ ॥ तारागढ़ अजमेर में। हुओ जो भूप अनेक ॥ यदि सब को वरणन करूं। तो लागे वार विशेष ॥ १३ ॥ अजयपाल नृप आदि ले। पृथ्वीराज चौहाण। दिल्ली तखत विराजियां ॥ फिरी चिहुं खंड आण ॥ १४ ॥ पृथ्वीराज महाराज के। राणीयें महल अनेक ॥ ता सब को वर्णन करूं। तो लागे वार विशेष ॥ १५ ॥ पृथ्वीराज महाराज दिल्लीपति छत्र जो धारी। ताके महल चौबीस शिरोमणी रत्नो उपारी ॥ १६ ॥ नरवरगढ़ मोसाल है। पिहर बूंदी गाम ॥ बेटी भोला राव की। रत्ना देत सु नाम ॥ १७ ॥ दिल्ली कहिए सासरो। पिहर बूंदी धाम। परणी पृथीराज ने। रत्ना, उपावती, नाम

कपट करि पकडिया। पृथिराज चौहाण ॥ दिल्ली पर कबजो कियो। धोका बाज पठाण ॥ ३० ॥ मोड चढ्यो पृथ्वीराज की। बागड पती चौहाण ॥ रण जीता धौंसो बजैं। भृगु अटल निसाण ॥ ३१ ॥ बागड फौजां ले चढ्यो। लाखण राव चौहाण ॥ दिल्ली दल भेला हुआ। घण फौजां घमसाण ॥ ३२ ॥ सात सहस्र गोरी यवन। मार्या मुगल पठाण ॥ लाखण पंच शत वीर युत। पहुंता अमर विमाण ॥ ३३ ॥ आमूं नीमूं दल चढ्या। लै गहरा घमसाण ॥ बध बध बाहैं बागडी। करता पौंचां पाण ॥ ३४ ॥ कैसर घोडे हिं चढ के। बांधी धनुष कुवांण ॥ पीठ लडैं पृथ्वीराज की। आमों-राज चौहाण ॥ ३५ ॥ ढोल सिरोही हाथ लै। ताज हिं चढ तुरंग ॥ नीमराव निरभय लडैं। जीतै जंग अभंग ॥ ३६ ॥ कैसर घोडी कलहलैं। घमकै घुघर माल ॥ हाथ्यां के मस्तक चढैं। कूदैं दो दो ताल ॥ ३७ ॥ कैसर घोडी खुम खुमैं। ऊपर लाल पलाण ॥ नीम राज निरभय लडैं। चकवै वंश चौहाण ॥ ३८ ॥ तलवारां ताली उडैं। मांच रही रण ताल ॥ पौंचा म हु:खै बाहतां। घन घन पाखरियाल ॥ ३९ ॥ भाला बरछी बहरयो। वहैं वाण असराल ॥ दूनारुपा धक

कपट करि पकडिया। पृथिराज चौहाण ॥ दिल्ली पर कबजो कियो । धोंका बाज पठाण ॥ ३० ॥ भीड चढ्यो पृथ्वीराज की। बागड़ पती चौहाण ॥ रण जीता धौंसो बजैं । भृगु अटल निसाण ॥ ३१ ॥ बागड फौजां ले चढ्यो। लाखण राव चौहाण ॥ दिल्ली दल मेला हुआ । घण फौजां घमसाण ॥ ३२ ॥ सात सहस्र गौरी यवन । मार्या मुगल पठाण ॥ लाखण पंच शत वीर युत । पहुंता अमर विमाण ॥ ३३ ॥ आमूं नीमूं दल चढ्या । ले गहरा घमसाण ॥ बध बध बाहैं बागडी । करहा पींचा पाण ॥ ३४ ॥ कैसर घोडे हिं पैठ कै। बांधी धनुष कुबांण ॥ पीठ लडैं पृथ्वीराज की । आमौं-राज चौहाण ॥ ३५ ॥ ढोल सिरोही हाथ लै । ताज हिं पैठ तुरंग ॥ नीमराव निरभय लडैं । जीतै जंग अभंग ॥ ३६ ॥ कैसर घोडी कलहलैं । धमकै घुघर माल ॥ हाथ्यां के मस्तक चढैं । कूदैं दो दो ताल ॥ ३७ ॥ कैसर घौडी खुम खुमैं । ऊपर लाल पलाण ॥ नीम राज निरभय लडैं । चकवे वंश चौहाण ॥ ३८ ॥ तलवारां ताली उडैं । मांच रही रण ताल ॥ पौंचा म कुःखै बाहैंतां । धन धन पालवियाल ॥ ३९ ॥ भाला बरछी बहरयो । बहैं बांण असराल ॥ दूनारयां धक

बैरियों का बटका करै। एक न चूकै चोट। बदन बचावै आपणो कर ढालारी ओट ॥५२॥ झटकासूं बटका किया जीत लिया गढ कोट। शत्रु से बदला लिया तलवारो की चोट ॥५३॥ मारी यवन में बात का। ली धौलाघर की ओट आमराज अमावरे। बैठा नीमराजगढ गोठ ॥५४॥ चौहान वंश पावक कुली। बागड खंडपत शाय नीमावत निरभय झलो गोठीवाल गजदाय ॥५५॥ गौठी वाल गजदाय घटा जो गहरा छाया। चकवे वंश चौहाण। अचल गढ गौठ बसाया ॥५६॥ पृथ्वीराज महाराज तख्त दिल्ली को पाया जोध लाखणसी रावि वाड़पति भूप कहाया ॥५७॥ आमुनी मूराव भूप बागड़ जि आया। चकवे वंश चौहान। अचल गढ़ गोठ बसाया ॥५८॥ गौठा परगटे बागड़ी। दशा परगटे भूप थांकी बैठक भांवरो। राजसभा को रूप ॥५९॥ थांकी बैठक भांभरो। गोठीवंक गोठिवाल। वणिजारी बासै सबल चौरंग बांध्या चाल ॥६०॥ आबूगढ आमापुरा। सांभरगढ़ सम्भराय। बागड़ वणजारी प्रजहि। राखण कुल को सहाय ॥६१॥ आबूगढ़ मांथा शिरो। सम्भरतणो निकाल। बागड़ खंड सु बागडी। गोठी थंक गोठवाल ॥६२॥ सोमसरजी राज कियो अजमेर को।

बैरियों का घटका करै । एक न चूकै चोट । बदन बचावै आपणो कर ढालारी ओट ॥५२॥ झटकासूं घटका किया जीत लिया गढ कोट । शत्रु से बदला लिया तलवारो की चोट ॥५३॥ मारी यवन में वात का । ली धौलाघर की ओट आमराज अमावरे । बैठा नीमराजगढ गोठ ५४॥ चौहान वंश पावक कुली । बागड खंडपत शाय । नोमावत निरभय झलो गोठीवाल गजदाय ॥५५॥ गौ- ठी वाल गजदाय घटा जो गहरा छाया । चकवे वंश चौहाण । अचल गढ गोठ बसाया ॥५६॥ पृथ्वीराज म हाराज तख्त दिल्ली को पाया जोध लाखणसी रवि वो गढ़पति भूप कहाया ॥५७॥ आमुनी मूराव भूप बागड़ तजि आया । चकवे वंश चौहान । अचल गढ़ गोठ बसाया ॥५८॥ गोठा परगटे बागड़ी । दशा परगटे भूप थांकी बैठक भांवरो । राजसभा को रूप ॥५९॥ थांकी बैठक भांवरो । गोठीवंक गोठिवाल । वणिजारी थांसे सबल चौरंग बांध्या चाल ॥६०॥ आबूगढ आमापुरा । सांम्बरगढ सम्भराय । बागड़ वणजारी पूजहि । रास ण कुल की सहाय ॥६१॥ आवूगढ माथा शिरो । सम्भ- रतणो निकाल । बागड़ खंड सु बागडो । गोठी वंक गो ठवाल ॥६२॥ सोमसरजी राज कियो अजमेर को ।

वेरियों का वटका करे। एक न चूके चोट। यदन बचावे आपणो कर ढालारी ओट ॥५२॥ झटकासूं वटका किया जीत लिया गढ कोट। शत्रु से बदला लिया तलवारों की चोट ॥५३॥ मारी यवन में वाल का। ली धोलाघर की ओट आमराज अमावरे। बैठा नीमराजगढ गोठ ॥५४॥ चौहान वंश पावक कुली। वागड खडपत राय नीमावत निरभय झलो गोठीवाल गजराय ॥५५॥ गोठी वाल गजराय घरा जो गहरा छाया। चकवे वंश चौहाण। अचल गढ गोठ बसाया ॥५६॥ पृथ्वीराज महाराज तख्त दिल्ली को पाया जोध लाखणसी राव वा गड़पति भूप कहाया ॥५७॥ आमुनी मूराव भूप वागड़ तजि आया। चकवे वंश चौहान। अचल गढ़ गोठ बसाया ॥५८॥ गोठा परगटे वागड़ी। देशा परगटे भूप थांकी बैठक भांवरो। राजसभा को रूप ॥५९॥ थांकी बैठक भाम्भरो। गोठीबंक गोठिवाल। वणिजारी बांसे सलल चौरंग बांध्या चाल ॥६०॥ आबूगढ़ आसापुरा। साम्भरगढ़ सम्भराय। वागड़ वणजारी प्रजहि। राख ण कुल की सहाय ॥६१॥ आबूगढ़ माथा शिरो। सम्भरलणो निकाल। वागड़ खंड सु वागडो। गोठी बंक गोठवाल ॥६२॥ सोमसरजी राज कियो अजमेर को।

भूपती । दशां परगट नाम ॥ ७३ ॥ वागड थान बैठक उखलाणै । मारण हंदो मोख ॥ दान खड्ग जस बहादुरी । मजलस माणी चौक ॥ ७४ ॥ उखलाणै अजमत घणी । चूकै नहीं सलाह ॥ चढ़ चड मांझी सेहरे । दे हाथ्याराह मलाह ॥ ७५ ॥ गौठवाल भड़ गढ़पती । दे कंचन गज दान ॥ माया माणै महाबली । गढ़ उखलाणै थान ॥ ७६ ॥ गौठवाले गाजां करै । मणी धारी मुछाल ॥ शेषनाग तीर्थ जहं । नामी नागर चाल ॥ ७७ ॥ साहला, धनसी,, छत्रसिंह । मोहन, हर्ष, पुखरेश ॥ लक्ष्मी, डालू, गिरीधरा । राम, भेरू, मंगलेश ॥ ७८ ॥ लक्ष्मीराव सुत करामती । पांचों वीर बलाल ॥ उखलाणै अचडा करै । माणे हि मुगता माल ॥ ७९ ॥ डालूराव दयारावजी । परसु मन्नालाल ॥ रामलाल रज का धणी । तासु पुत्र निहाल ॥ ८० ॥ डालू तूं छै ढाल बड । भौम तणो भूपाल ॥ लच्छीराम सुत पाटवी । गादी धर रिच्छपोल ॥ ८२ ॥ डालू सुत भडकरामती । गिरीधर किसनलाल ॥ चैनो नयणो,, हद सबल । माणेहि मुक्ता माल ॥ ८२ ॥ गिरीधारी सुत की रामती । रामसिंह हरलाल ॥ चौहान वंश में दीपता । शरणागत प्रतिपाल ॥ ८३ ॥ रामसिंह सुत

पिथु दल्ली गढ़ कोट । लाखणसी वागड तप्पा । नीमराज गढ गीठां ॥६३॥ गीठा प्रगटे वागड़ी गौठ-वाल मजबूत। जंग जुड़्यां झगड़ा मंड्यो भडवंका रजपूत ॥६४॥ गौठवाल भड़गढपती । चकवा वंश चौहाण कुलदेवी आसापुरो । भृगू अटल निशान ॥६५॥ गौठवाल वागड़ पती । वागड खंड का राव नीमावत निर्भय झलो भडवां अमराव ॥६६॥ खारण हुंढा धुल-धन्दा । वोजवज्जालां भाण । उखलाणो नागल कर्यो चकवे वंश चौहाण ॥६७॥ कुलचन्दो कुल चान्दणो । कीरती घणी उजास। बारह बेटा प्रगट जस । बारही खंड वास ॥६८॥ उखलाणो अजमतघणी । मसलत मोटा भूप ॥ मझलस माणक चौक की । राज सभा को रूप ॥ ६६ ॥ गौठवाड़ भड़ गढ़पती । मसलत मोटा राव ॥ वागड खंड़ का बादशाह । दिल्लीपती उम-राव ॥ ७० ॥ गौठवाल भड़ गढ़पती । करतब करै अटूट ॥ उखलाणे अजमत घणी । दान खड़ग भड़ झूठ ॥७१ ॥ उखलाणे गढ़ आद सें । मारणै माणै मौज ॥ गौठवाल गाजां करै ।चढ़त कलाशी दोज ॥ ७२ ॥ उख-लाणों गढ़ आदिसे। सबल सनातन गाम ॥ वाद जैन के

भूपती । दशा पराद नाम ॥ ७३ ॥ वागड थान बैठक उख-
लाणँ । मारण हेदो मोख ॥ दान खड्ग जस बहा-
दुरी । मजलस माणी चौक ॥ ७४ ॥ उखलाणे अज-
मत घणी । चूकै नहीं सलाह ॥ चढ़ चउ मांझी सेहरे ।
दे हाथ्यांराह मलाह ॥ ७५ ॥ गौठवाल भइ गढ़पती ।
दै कंचन गज दान ॥ माया माणें महावली । गढ़ उख-
लाणँ थान ॥ ७६ ॥ गौठवाल गांजा करै । मणी धारी
मूछाल॥ शेषनाग तीर्थ जहं । नामी नागर चाल ॥७७॥
साहला, घनसी,, छत्रसिंह । मोहन, हर्ष, पुखरेश ॥
लक्ष्मी, ढालू, गिरीधरा । राम, मेरु, मंगलेश ॥ ७८ ॥
लक्ष्मीराव सुत करामती । पांचों वीर बलाल ॥ उख-
लाणँ अचडां करै । माणें हि मुगता माल ॥ ७९ ॥
ढालूराव दयारावजी । परसु मन्नालाल ॥ रामलाल
रज का धणी । तासु पुत्र निहाल ॥ ८० ॥ ढालू तूं छै
ढाल वड । भीम तणो भूपाल ॥ लच्छीराम सुत
पाटवी । गादी घर रिच्छपोल ॥ ८१ ॥ ढालू सुत
भडकरामती । गिरीवर किसन्नलाल ॥ वैभो नयणो,,
हद सबल । माणेहिं मुक्ता माल ॥ ८२ ॥ गिरीधारी
सुत की रोमती । रामसिंह हरलाल ॥ चौहान वंश मे
दीपता । शरणागत प्रतिपाल ॥ ८३ ॥ रामसिंह सुत

करामती । शिवपक्स भैरूंसिंह ॥ चौहान वंश कुल दीपता । गढ़ उखलाणैं धींग ॥ ८४ ॥ भैरूंसिंह सुत दीपता । मंगल वैरी साल ॥ देवीसिंह नित याचकां अर्पै दान विशाल ॥ ८५ ॥

इत्यादि यह ख्ख्यात बहुत ही लम्बी चौड़ी है । यदि गोठवाल भाई कुछ मदत देंगे तो संपूर्ण छपवा दी जायगी। शुरू से लेकर आज तक की सैंकड़ों पीढ़ियों के नाम और मुख्य २ घटनाओं का उल्लेख इसमें दर्ज है । जो नया बालक जन्मता है उसको भी भाट लोग इसी में दर्ज कर लेते हैं। इस ग्रंथ का लेखक भी इसी कुल में पैदा हुआ है ।

॥ इति प्रथम भाग सम्पूर्णम् ॥